संग्रहिणी सूत्र ।



त्तसुद्धमाणया आरणे देवाणं पन्नत्ता ॥ ११ ॥ ईसाणे कप्पे उक्कोसा साहियपलियाइं सम

अहियइट्ठिई जाव नरएत्ति अत्ताासिं ता उमाइं दवेवाणं ॥ एएणकमेणत्तेवो सम

साहियपलियदसगाउ दोणंतेतसहस्सारकप्पाणया अच्चुयदेवाणं पन्ना ॥ १३ ॥ अस्सूदं

पेणाउपरिन्नका ॥ पुरिसा अउविमत्तयारम्मि ॥ जे देवतद्दस्स ठिति दिठापरे

रतेचिवितंति ॥

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| स्त्रीनाउ स्पति | कल्प१।२ मांड | किल्वि षी | पल्य२ | देवलो०१।२ |
| बीयीउत्र मागम | ३।४।५।६ ७।८।९।१० मांड | किल्वि षी | सागर३ | देवलोक३।४ |
| देवताउ गमागम | ११।१२।१३ ... | किल्वि षी | सागर१३ | देवलोक५।६ |

लियतिसारतेरससारा कप्पडगलईयलंतअ

किब्बिसिय नऊंति उवरि अच्चुय उवरिं जंति

॥ ३ ॥ अपरिग्गहदेवीणं विमाणलक्खाछ संतिसो

हम्मे पलियाइ समयाहिय ठिइ जासिं जावदसपलि

या ॥ ४ ॥ तांउसणंकुमाराणेवं वड्ढंत पलिअदसगेहिं ता

| | | | |
|---|---|---|---|
| सौधर्म अपरि ग्रहीताद्वि० | विमान ६०००० | ईशान अपरिग्र हीता | विमान ४०००० |
| सनत्०परि ग्रहीता | पल्य१० आयु | माहेंद्र ४ | पल्य१५ आयु |
| ब्रह्म५परि ग्रहीता | पल्य२० आयु | लांत कद | पल्य२५ आयु |
| शुक्र७परि ग्रहीता | पल्य३० आयु | सह स्रार८ परि० | पल्य३५ आयु |
| आनत९प रिग्रहीता | पल्य४० आयु | प्राण त१० | पल्य४५ आयु |
| आरण११प रिग्रहीता | पल्य५० आयु | अच्यु त१२ | पल्य५५ आयु |

जेच वि वली | दिव्यमहासुख देवतानां महासुख छे | ...तेराग नो वडो ...नी कर्मनो क्षय थकी | ... छे | ...तथा ते पाताळ अनंत महसुखनां भाग पण ते थकी मनुष्य लोक

जं च दिव्वं महासुहं वीयरागसुहस्स हि । अणंतभागं पि

नादेवलोक ना १ते वळी जाणवा नही एतले मोक्षना सुखनै पलि एसंसारना सुख थकी (१९९) | दिवे देवी ना उपजवाना नाम उपर्या १-२ देवी सर्वत्र जनु | कल्प दुग जा॰ २ सुधर्मा ईशान देवलोक सुरउंस सहस्सारो॰ ८ आठमा सहस्रार देवलोक

न अग्घई ॥ १९९ ॥ उववाए देवीणं कप्प दुगं जा परो स

थी आगलि दे वी जाती नथी | गमणागमणं॰ आवे देवता नह जाति ते आयपुंजि जन्मादि कल्पक ल्पाण प्रमुख नै कारणे ते ह पलि नथी | अच्चुय परओ॰ अच्युत देवलोक थी आगल | थे सुराणं पि॰ नवग्रै वेयकना दिकना देवता ते हनै (२००) | दिवे काम सेवा स्थिति दो वास॰ स्थिति हजार वरसनी स्थिति दोय हजार वरस | मिक्कं॰ काम सेवा करता थका

हस्सारो । गमणागमणं नत्थि अच्चुयपरओ सुराणं पि ॥ २०० ॥ दो वाससहस्स ठिई मिक्क

तथा एक एकइ | एतले सर्व निह उह बोहुं॰ अमराणं॰ कपरला ये वैमानिकं देवता नइ | पण सय॰ पांचसे पचवीसे वरस घटाडी जै मूलइ सइ समाहे | भुवनपति नै १५००० वरस | मेरा | योतिषीनै एक सहस्र वर्षे काम सेवा | व्यंतरनै ५०० वर्ष स्थिति का म सेवा नी (२०१) | वैमानिक नै मागवा | भुवनपति नैगा लैरहे

णं तह दोइ उह अमराणं । पणसय रूहाणं नवणवइ जोइसवणाणं ॥ २०१ ॥ सिरकंठ

योतिषीनै गलै रहइ | व्यंतर नैगा ति देवलोक से | क्रीडा वीर्य निवासो॰ एतले ते मै कर्म वीर्य नो वासो ४ निकाय ना देवतानइ | सुरवर॰ तेदे वतानां | भोगाणंत र॰ पछीवली ओगान रहइ | देवीनुं रूप कांति बल शरीर शोभा विशेष गुण वधइ मूलरूप भाव थी अन्तर्नो कारण नहीं ति वीर्य वैक्रिय शरीर मय वै पछांहि (२) | तिप लि यत्रि लपवा

तहनाही ना हिरहोहो रवीरय निवासो सुरवर भोगानंतर देवी रूपं विससग्गुणं ॥ २ ॥ तिप

| | |
|---|---|
| सौधर्म ईशान देव | कायाइं काम सेवा मनुष्य नी परइं करै |
| सनत्कुमार माहेंद्र | स्पर्श इंद्रिय करी सेवा करइ |
| ब्रह्म ५ लांतक | रूप देषी परस्पर संतोष पामइ |
| शुक्र ७ सहस्रार ८ | शब्द सांभली संतोष पामइ |
| ९-१०-११-१२ देवता | मन करी चिंतवी संतोष पामइ |
| ग्रैवेयक ५ अनुत्तरः | अल्प विकारी अनंत सुखी |

॥ कारण लावण्य माहे छै ॥

(५३) विवरीयं एकदा तिहथीए विपरीतउपराउंपांचमउं तेपांचमुंसंस्थान | सव्वत्थ आगीपणा सर्वठामेपणी गरूपांगचपल लगलविना | हंडसंस्थान || पहतानस्था मीजाणीज | नरमनुष्य | तिरि-तीर्यंचरव छ-पृ वेठ्ठेनेव संस्थान | सुरसमोदेवतामरस संठियासेस ...संस्थान

।।५४। विपरीयंपंचमगं।सव्वत्थअलरकणंनवेअंछं।गब्भयनरतिरियछाहाखुरासमा

माहि पृथवीअ पर तेउ वायु वनस्पती | (५५) जेतिसुरा जा देवता | हिवेतेहवुं आगतिद्वार देवलोकथकी आवे | संख्याउय संख्या | गब्भय गर्भज | पज्जत पर्याप्ता | मणुय मनुष्य | तिरिएसु तीर्यंचमां | पज्जते पर्याप्ता | बायर बादर

न्यासेसा।।५५।जंतिसुरासंखाउयागब्भयपज्जत्तमणुयतिरिएसु।पज्जत्तेसुयबा

पृथवी | उदग पाणीमां | पत्तेय प्रत्येक वनस्पती | (५६) तत्थवि तेहमांहि | सणंकुमारपभिइ सनत्कुमार देवलोकथकी | एगिंदिएसु एकेंद्रीमांहे नो जंति | आणय

।।उदगपत्तेयगवेसु।।५६।।तत्थविसणंकुमार।पभईएगिंदिएसुनोजंति।आणय

तत्थ | चविउं | मणुएसु | चेवगच्छंति निश्चय | (५७) हिवेदेवलोकेजीगस्थितिकहेछे | दो२ दो२ दो२ || तिहांकामसेवा

पमुहाचविउं।मणुएसुचेवगच्छंति।।५७।।दोकप्पकायसेवी।दोदोदोफरिसरूव

आगिले | आगलीआदेव | उवरिमा | अप्पवियार | (५८) हिवेउपसमनासुखगुण

सद्देहिं।चउरोमणेणउवरिमा।अप्पवियाराअणंतसुहा।।५८।।जंचकामसुहंलोए

भवनपति १ व्यंतर २ जोतिषी ३ सौधर्म ईसान २ एतले ए मिकायाः कामसेवा १ त्रीजो चोथे देवलोके स्तनभुजा स्पर्श ... करी कामसेवा ... देवलोकमा ... पुनेजीव कामसेवा ... आगिल ... देवलोके हास्यगीतादिक ... कामसेवा ४ आगिला ४ देवलोके मांहोमांहि मनोचिंतनथी कामसेवासुख

वामणय४खुज्जापकंहुंडेयद जीवाणछसंठाणा सव्वत्थसुलक्खणं पढमं॥ नाही

अउवरिवीयातईयमहोपिठउवरउरवज्जा॥सिरगीवपाणिपाएसुलक्खणंतंचउत्थं॥



(१८९) एहवा नाम संघयण। ये हवी रीते नाम कहे छे। तद्विमरिसे नते साधक। तथा। कीलीया वजुलेयी ते वखी ने विरूपी। नाराचे ते। विन्नेज ते

।१६०। एएहिं संघयणं। रिसहो पट्टो य कीलिया वज्जं। उभओ मक्कडबंधो नाराओ होइ विन्ने-

(१६०) ए संघयण ये गर्भज तिर्यंच ने मनुष्य ने। समुर्छिम मनुष्य ने। विगलेंद्रिय ने छेवटुं संघयण जाणवे। देवता १। नारकी २। एकेंद्रियादि ने। संघ-यण

।१६१। छग्गब्भतिरिनराणं। समुच्छपणिंदिविगलछेवट्ठं। सुरनेरइया एगिंदिया य स-

ण संघयण (१६१) हिवे ए संघयण नाथकी केतला देवलोक लगी जाय। छेवटा संघयण नो धणी ४। चौथा कप्प। चार। अनेक कीलिकादि। दुदु कप्प बुद्धी देव देवलोक वधारीये।

संघयणा ।१६२। छेवट्ठेण उगम्मइ चउरो जा कप्प कीलियाईसु। चउसुदुदुकप्पवु-

| | | |
|---|---|---|
| १ | ५ वज्रनाराच नो धणी | ए वेमान्तर |
| २ | ऋषभनाराच नो धणी | सहस्रार लगी जाय |
| ३ | नाराचनो धरणहार | लांतक लगी जाय |
| ४ | अर्धनाराचनो धरण | शुक्र ने सहस्रार लगी जाय |
| ५ | कीलकानो धरण | ब्रह्म लगी जाय |
| ६ | छेवट्ठानो धणी | सन माहे लगी जाय |

पढमेण अने प्रथम संघयण नो धणी। जाव सिद्धी यावत मोक्ष लगी पति जाय कर्मक्षय थी। (१६२) ये आगली मा कार विशेष

ड्ढी। पढमेणं जाव सिद्धीवि ॥१६३॥ अथ

वेसं स्थान ६ वेतेकहे छे॥ समचउरंस संस्थान १। निग्रोध संस्थान २। सादि संस्थान ३

संस्थानः॥ समचउरंसे निग्गोहसाय

आर्तध्यानरूपतेव्यापारतेतिर्यंचगतियोग्यकारण३ रौद्रध्यानरूपमनोव्यापारतेनरकगतियोग्य
ण४ एमांहेवलीविशेषपणे चडता चडता अध्यवसाय ५ गतिनाकारण॥

एहदेवतामांहेंक्रूपजेतेसंघयणनाविशेषपणीथीजकहा२ | त्रीजुंनारा | चोथोअर्धनारा | पांचमुंकील | तह ते छेवटुं
वज्रऋषभनाराचसंघयण१ | पहिलुं बीयुंवलीऋषभनाराचसंघयण२ | चसंघयण | चसंघयण | कासंघयण | ये छेवटुं सं०

ज्ररिसहनारायं। पढमं बीयं च रिसहनारायं२। नारायं३ अद्धनारायं४ कीलिया५ तह य छे

प्रथमपि·ऐम दसागीना ९व दमात्रतेपिल | असद्दहंतो·स्र णसद्दहे तो थकी | सुभक्ते वृक्षत | मिच्छदि ... एकवचनमोत्रपलि ... ॥८५॥ मूत्रसिद्धांतके ... कसोक | तद्देव· तिमज वली | पश्चेय·छीनमि प्रत्येकबुद्ध | रइयं·तेह त्रुस्युकर च·वली

पढमवि अ सद्दहंतो। सुहसंमिछदिठ्ठीउ॥८५॥ सुरंगणहररईयं तद्देवपत्तेयबुद्धरइयं

सुयके·ऐव श्रुतकेवलि | तिश्रुतकेवली सुधर्म स्वामि | रइय·ए रचुं | अभिन्न·ब लीसंपूर्ण | दसपूर्वधारीवरस्वामि ... सिद्धांतकहे ॥८६॥ बउमठ्ठ·ऐब ... | संजयाणं·ए ... संयत साधु | उपवाय·ते ... उपजवे

वासुयकेवलिणारइअं। अभिन्नदसपुव्विणारइयं॥८६॥ बउमठ्ठसंजयाणं उववाय

उक्कोसउय·उत्कृष्टपले | सव्वठ्ठ·सर्वार्थसिद्धविमाने | तेसिं·व जीतेसा | सट्ठाणे·अने ... विमाने | जहन्नउ·जघ न्यपणे | सोधर्म·सौधर्मदेवलोकने विषे आचार= ॥८७॥ लंतमि·जां तकदेवलो कमाहे | चउदस·चउदस पूर्वधर जघन्य ले

उक्कोसउय सव्वठ्ठे तेसिं सट्ठाणेविय जहन्नउ सोहम्मे॥८७॥ लंतम्मि चउदसपुव्विस्स

तावसाई·बीजाई तापसादिक अन्य दर्शनी सर्व | जंत·जंतर माहे ज्य | तदा·त | एसो·ए हज | उववा·देवतामा ... || नियकिरिया·पोतानी क्रिया ... विषय सद्दावि·तेमाहे ... ॥८८॥

तावसाईण वितरेसुतहा। एसोउववायविही। नियकिरियठियाण सव्वोवि॥८८॥

।नियकिरि० ८८ टीकोअर्थ: शुभ अध्यवसाय उपराहे छे ते सर्व न इगति अध्यवसायना वशथकी छे अध्यवसायना ते मूलदभेद ते केहा आ १ शुभ २ असंतशुभ ३ तेमाहे जे असंतशुभ अध्यवसाय मोक्ष ते उछे १ ये अशुभ ते नरकगति हेतु क ... ये शुभ ते देवगति योग्य छे ये असंत ... मनोव्यापार ते शुभ अध्यवसाय शुक्लध्यान ते मोक्ष ... १ ये धर्मध्यान मनोव्यापार ते देवगति मनुष्यगति योग्य कारण २ ये

नवण·अ | वणेसु·व | नजोईमा·पति
वनपति माहे | लो अंतर माहे | तिषीअभुषआणिजा देवमाहेनकपजे | न समुभ | उववाउं·ती र्यचसमुच्छिम | पलिया·प ल्योपमने | असंखंस· असंख्यात मे भागे | आउकुक हते माहेव तिआधिके नही ॥७५॥ अरिहंतनावचनथा तत्वज्ञानविनापंचअ ग्न्यादिकबालमूर्खतप तिणेओसकर तथा

नवणवणेसु नजोईमाईसु जंते सेंतववाउ। पलिअ असंखंस आउसु ॥७५॥ बालतवे पडि

॥ अतीचारादिक तिणे दूषितजे ॥

बालतप तेह जेवी तरागुणे मार्गवेप॥ | वलीउक्कटआ करीक्रोधतेहने विषेआसक्त२ | तवेण तपात प | गारविया·अन गानादिकतिणे करीगर्वित३ | वेरेणय·तथा पूर्वजन्मादिक वैर | पडिबुद्धा·जा बतिणे प्रति बद्ध | मरिउं·नी प्राणादि कुथीमरी ने | असुरेसु·इत्यादिक असुरादिभवनपतिमाहे जाय ॥७६॥ रज्जु ग्रह८

बुद्धा उक्कडरोसा तवेण गारविया वेरेण य पडिबुद्धा मरिउं असुरेसु जायंति ॥७६॥ रज्जु

पासी नेले वेकरी | विष·अफीणवछना गादिकनेषावेकरी२ पाणीमाहेपडवानेम | २ तह२ २ | जलणपवेसउं·अ ग्निनेविलवे पेसवे करी | तिण्हछुह·ते पाने मरवे | दुहओ·तेदूषणने डषेकरीमरवे || वलीपर्वतशिलाथी पडवेकरवतने लेवे पगथी कोइनेलगाडवेइत्यादि | ते दूषथी देवउपि मरतो

ग्गह विस भक्खण जलजलण पवेस तिण्ह छुह दुहओ। गिरिसिर पडणाउ मुया सुह

जोकोइ नेतली भावआ वे | जति· जइ भावे | व्यंतरिया·वा तरीकदेवताप णाउपजे ॥७७॥ | तावसजा·ता पसवनवासी कंदमूलनच क | जाजोइसिया·ज तकज्योतिजोतिषी लगेजाइ | इमचरक·परिव्राज कतेकाथीयाप्रमुख वस्त्रधारीकपिलवे सनोते | बंभलोगो जा· ब्रह्मदेवलोक लगेजाय || जासहस्सारो·जाव त्राष्टमसहस्रारदे वलोकलगे

भावा होइ वितरया ॥७७॥ तावस जा जोइसिया चरग परिव्वाय बंभलोगो जा। जा सहस्सा

पंचेंद्री·पंचेंद्री तिर्यंच तोथीप्रमुखजातिस्म रणादिकपामीजाइ | जाअच्चु·अच्युतदेवलो कलगे श्रावकदेशविर तीजा ॥७८॥ | जइलिंग·यतीनावेषधारक इकारीमिच्छादिट्ठी·एटलोये मिथ्यात्वीअभव्यादिकयेस | गेविज्जा·जावनव ग्रैवेयकलगाइ | जंति·ते जाय | उक्कोसं·उत्कृ ष्टपणे

रोपंचिंदि तिरियजा अच्चुउ सड्ढा ॥७८॥ जइलिंग मिच्छदिट्ठी गेविज्जा जाव जंति उक्कोसं॥

॥ सम्यक्त्वयुतसूत्रते ॥

॥७६॥ वासाण सयासहस्सा। इक्कातह वरसुविजयमाईसु। पलिआ असंखभागो। सव

ठसरवभागोय॥७७॥ सव्वेसिंपि जहन्नो समओ एमेव चवणविरहो वि। इगदुगतिसंखम

संखा इगसमए उववज्जंति यचवंति॥७८॥ नरपंचिंदियतिरिया। उप्पत्ती सुरलोए पज्जत्ताणं।

अज्झवसायविसेसा। तेसिंगईतारतम्मंतु॥७९॥ नरतिरिअसंखजीवी। सव्वेनियमेण

जंति देवेसु। नियआउयसमहीणाउएसु ईसाणअंतेसु॥८०॥ जंतिसमुच्छिमतिरिया।

परोय-तेइने इसकुतेजुद २ कहेहै  भुवनपतिदेवता २ | अंतर वता २ | जोतषी देवता २ | सोधर्मा-सोधर्मवासीदेवता म || ईसाणेमु-२ सानवासी देवता ५ | मुहूरा-प दर्पात्रमेउ कृष्टोउपपात विरहका | चउवीसमुहूर्तनो वेएतलाकालमा हिएकउपनावरी वलीवीजोऊपजे | तिवा २ प ती | नवदिवसवीस वीसमुहूर्त्तसन तकुमा

# रुपरोयं ॥ ७३ ॥ नवणवण२२ जोइपसोहम्मी ॥ साएसुमुकुत्ते चउवीसं २४ तेनवदिणए

२२ऊपपातवि रहकाल || माहेंद्रदेवलोकेबारदिवसदसमुहूर्त्तउ पपातविरहकालतेअंतरमान ॥ ७५ ॥ ब्रह्मदेवलोकेसाढाबावीसदि वसनोउपपातविरहकालजाणवो | लांतकदेवलोके पेतालीसदिवस नोविरहकाल || शुक्रदेवलो केअसीदि वस ८०

# वंसमुक्ष्वारसदिण१२दसमुहूत्ताय ॥ ७५ ॥ बावीस२२सड्ढदीहा पणयाल ४५ असी

| नवतत्त्वतरसोधर्म | सनकुमार | माहेंद्र | ब्रह्म ५ | लांतक ६ | शुक्र ७ | सहस्रार ८ | आनत प्राणत | आरण अच्युत | प्र. ग्रैवेयक | द्वि. ग्रैवेयक | उर्द्ध ग्रैवेयक | ५ अनुत्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुहूर्त्त २४ विरहकालकलो | दिन ९ मुहूर्त्त २० विरहकाल | दिन १२ मुहूर्त्त १० विरहकाल | दिन २२॥ साढावीसविरहकाल | दिन ४५ विरहकाल | दिन ८० विरहकाल | दिन १०० विरहकाल | संख्याता मासविरहकाल ५ मास २२ दिवसीम | संख्यातावरस विरहकाल ११ वर्ष ११ मास २९ दिनसीम | वर्षसतसहस्स वरस हजारनाघ य वर्ष ९९९ मास ११ दिन २९ सीम | वरससहस्समा लख हजारनाघ यवर्ष ९९९९९ मास ११ दिन २९ सीम | वरसलखजोकोर वर्षनाघयवर्ष ९९९९९ मास ११ दिन २९ सीम | पल्योपमनउं संख्यातमो भाग वरह |

| सावार्थसिद्ध | सहस्रारदेवलोके दिवससतविरह १०० कालतस्रो-तिहाथी आगति | आनत ९ प्राणत १० इणेदोय देवलोके जुदा २ संख्यातामासनोविरह मास ११ दिन २९ | आरण ११ अच्युत १२ रहा संख्यातावरसव र्ष ११ मास ११ दिन २९ | हवैनवग्रैवेयकमाये त्रिणत्रिकलिंअनु क्रमइएविरहकाल |
|---|---|---|---|---|
| पल्योपमनुसंख्यातमो भागविरहकाल | | | | |

# ७५ दिणसयंतत्तो १०० ॥ संखिज्जाउसुमासा ॥ उसुवासातिसुतिगेसुकमा

॥ विरहजाणवो ॥

जिमसनतकुमारमाहेंद्र७ सागरोपमउत्कृष्टायुः तेमाहिथीविशेषतेजघन्य२सा० वेगलाकरीने
ली१ब्रह्मलोकस्योहिवारइ श्वेरहाथसा० प्रथम्या ३सा० आनइसातहाथमाहिं एकलोहीणथनाइगणर
नागकरी सागरोपमथैतलानागराघवा तेमाटैतिहांधनागरस्या इमजिहांरसा० आयुतिहां६हा
थ४नागइगपारिया ६मधसा० तिहांवृनागरर इमपसा० तिहांस्नाविनागरर इमदसा० तिहांत्ना
०११जिहां७सा० तिहांवृराहहाथशरीरमान॥इणइरीतइआकथानीमिलइ सगलइशरीरइमाणजा

द्विवेतवैशारीरनीजघन्य इवगाहनाध्यानाधिकशरीर | वेउवि·अनै वेक्रियशरीर | नगु·ए रइगेर | जघन्यप के | ग्रुक मेवड | सांरनतेवळ ममेनातोथका जीवजावतांथ काशरीर || अंगुल·आंगुलनैअसंख्यातमे जोशरीरप्रमाणनवधारणीय || अनैवैक्रियशरीर आंगुलनैसंख्यात मेनागेकुइमेकाली

साहावियवेउवियतणुजहन्नाकमेणपारंभे।अंगुलअसंखभागो।अंगुलसंखि

शुक्रा·पद्धेसा पढ़ेआपणेत्मा तेवधइ (७३) द्विवेएतलेसर्वदेवतानेअवगाहनाश रीरप्रमाणध्यारजीजूसूकंपघु || द्विवैतेसर्वदेवतानेकपजवानोर अनेचववानोर विरहका लवेकह्यारप्रमाणविरहकालजघएकद्वारत्तेकहेछे

१सागोय॥७२॥सुरेसुउगवहणादारसमत्ता॥इणिदंविरहकालोउववायचएणजिलेः

सामा·सामा न्यपणइसंक्षे पथकी | चउवि·च्यारप्रकारना देवतानवनपतिव्यंतर ज्योतिषीवैमानिक मांहिजे विषइ | वारस·बारमुहू र्तकालीनाहीस घडी | उक्कोसो·उत्कृष्ट प्रकृष्ट | उववाय·उपजवानोविरहकालकांइ बारमुहूर्तलगेअन्तरएकदेवताउपजवा पनीबीजोदेवतातिहांउपजेइमचव्या पनीपणइमकहेवोऔचववअधिकवर्ती | अह·अथ इहवै | नवण·भवन पतीप्रमुख जाति

सामनेणंचउविहसुरेसु।बारसमुहुत्तउक्कोसो।उववायचवणविरहो।अहभवणाइ

॥गाथा॥

अ

४

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | २ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १ | २० | २ | २ | २ | २५ | २ | २७ | २ | २९ | ० | ३१ | ३२ | ३ | |
| इन्द्र | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | १ | १ | | |
| भाग | ० | ४ | ३ | २ | १ | ० | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | ३ | २ | १ | ० | ३ | २ | १ | ० | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | १ | ० |
| वग | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ |

नवधा·ये पोतानाम वनेधरवा ॥७०॥ तलमांते·शरी रतो अर्माणजा णवे ॥ सणंकुमारीड्सत लकुमाराधिकसा लवामनोएक ॥ लेढमाविलि पनोकरवा थकी ॥ विड·विलि लआक पानीयउ सरुधीवे ॥ एवं इसे रीते ॥ एगुत्तराएवुड्ढीए·अनेसा गरोपमएकथीएकअधिक वधारइ ॥ कमेण·अ उक्कमेरएक रूनाग ॥ लाशरीर माहिथ की ॥

कमेणएगुत्तराएवुड्ढीए एवंविइविसेसा सणंकुमाराइलंतकमाणं॥७०॥नवधा

उत्तरवेउ·उत्तरवेक्रीयशरीर तिहांनकिवइ नहीतिहांएक नवधारणीय·शरीरवेतेजिवा ॥७१॥ ॥ गेविज्जणुत्तरेसुवेरवेतिय कअनेपांचअनुत्तरविमाने एदनैविषे ॥ णोयणलरकंप कल्पथोजन प्रमाणवे ॥ वेउव्वि·वेक्रिय शरीरवुविकुर्व इतेइउमाण ॥ एस्थित·अ नेउक्कृष्ट पणे ॥ योगपशरीरतेभव धारणीयशरीरक हियेएसा·तेहनी

णिड्डएसा॥उक्कोसविउव्विजोयणलक्खं॥गेविज्जणुत्तरेसु॥उत्तरवेउव्वियानत्थि॥७१॥

॥विवरीते विश्लेषकीजे विश्लेषतेस्युकहीइ उत्कृष्टआकषामाहिथीजघन्यआकषुपरहतेकाढिइ

शूलइजेसागरोमरह्यावेतेमांहिथीवलीएकउगोकरे अनेएकहाथनाइग्यारभागकरीनेयेरत्नासा

एमणवलिशाखाबे वेरलानागपणिराखीइ एवइसागरोपमएकअधिकरीजइ आंहेसागरोपमांहि

[illegible] पढ़इसागरोपम [illegible] अजन्नर [illegible] जावकरीने [illegible]

| सनत्कुमार माहेंद्र | ब्रह्मलोक | शुक्र सहस्रार देवलोक | आनत प्राणत देवलोक | आरण अच्युत | ९ ग्रैवेयक | ५ अनुत्तर विमान |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| रज्जु ८ रज्जु प्रमाण | रज्जु ५ प्रमाण | रज्जु ४ प्रमाण | रज्जु ३ प्रमाण | रज्जु २ प्रमाण | रज्जु २ प्रमाण | रज्जु १ प्रमाण देमान |

आगि लोकि १६ | आगि लोकि १८ | आगति ४०४२७ | नवग्रैवेय क२२६ | अनुत्तर सर्वविमान

३२३२ वतगेध ॥ नवगेणपणगेय

जिहांति इहां तजहारेति | अयरा सागरो पमछे ते | येदो विसाग रोपम | सत्तसा गराग रोप | चौद चवदे सागरो पम

॥ जिहांति अयरा दोसत्त चौ

| अढार सागरोपम ४ १८ || बावीस २२ सागरोपम ५ || इगतीस ३१ सागरोपम ८ नवग्रैवेयकेतेत्रीस सागरोपम ७ ए उत्कृ ष्टी स्थिति सातनीजाणवी (६७)

दश अठार सच ॥ बावीस २२ गतीस ३१ तित्रीसा ॥ ३३

विवरे विप्रोधकीजइ | ताणिते मांहिथ को | इक्कुणे कजेणेकीजे || इक्कार सजाग पत्रे एक उथना इग्यार जाग करी पाछि ए समा पु ते लासागरोपम कि इ ए पादेपाछि लीयेउत्सेधस्थितिजे | तेतलोमा न करीजे | इक्किकार स पत्रेथे लाछन

विवरे ताणि कुण ॥ इक्कार सज्जाग पाछि ए सेसा ॥ इक्कि

इगपारिया | जाणकहाविइ | अयरेसा गरोपम सागरोपम दो | साह हियेवि समधिक ते वधार जाइइ (६८) | चप अनेतोन लोजइथे एचेस रीराजपाछि

क्कार सजाग ॥ अयरे २ सम हियक्कि ॥ ६९ वहउब्बस

| | |
| --- | --- |
| रजुनी प्रमाण | लोकना हूंतलथकी ऊर्ध्व जाणवो |
| १ प्रथम रजु | सौधर्म ईशान देवलोक बीजालवो |
| २ द्वितीय रजु | सनत्कुमार ३ माहेंद्र ४ देवलोक |
| ३ रजुप्रमा | ब्रह्म ५ लांतक ६ देवलोकतक |
| ४ रजुप्रमाण | शुक्र ७ सहस्रार ८ देवलोकतक |
| ५ रजुप्रमाण | आनत ९ प्राणत १० आरण ११ अच्युत १२ |
| ६ रजुप्रमाण | ९ नवग्रैवेकतक |
| ७ रजुप्रमाण | पांच अनुत्तर मोक्षसाधनात्म |

रकावासोपाल किविमानलाप ओजनप्रमाणहवे पालक || पंचअनुत्तरविमाननोसर्वार्थसिद्धिइंद्र कविमानदीवोकहतांजेबूद्वीप एकलाप जोजनप्रमाणछइ || ६५ || दि अहनागादिसगगुठवीसु-सातनरक ग: सातनरकइथ्थवीचेरञ्जुइक्किक तिहांरएकएकराजप्रमाणछइएवं ||

लोयंते । सव्वट्ठसिद्धीबोद्दगिगउरकं ॥ ६५ ॥ आइन्नागासगउठविंसु । रज्जुइक्किक्कतइय

सोधर्मदेवलोकेएकराज || माहिंद्रदेवलोकइंदेयराज | लांतकदेवलोकेत्रीजेराज | सहस्रारदेवलोकइचोथुराज || अच्युतदेवलोकइपांचमुराज | नवग्रैवेयकइछुराज | सातमुंराजलोकनेअंतेसिद्धशिलाउपर || ६६ || हिवैराजमानकेवलइथाइतेकहेछै एकलावजोयणप्रमाण ||

सोहम्मि । माहिंदलंतसहस्सार । अच्चुयगेविज्जलोगंते ॥ ६६ ॥ जोयणलक्खपमाणं । नि

मेषोन्मेष || जाइकहतांजाइ | देवीकहतांदेवता || एहवीछमासेणएकहतां छमहीनालगमणकहतांगतिक || एवेकहतांएहवेरज्जुकारिरज्जुकहतांराजप्रमाणजिनाकहतांतीर्थंकरेविति कहतांकह्यो || ६७ || एतलेच्यारनिकायनादेवतानस्वीजुजुनवन

समित्तेण जाइ जो देवो । छम्मासेणयगमणं । एवं रज्जुं जिणा बिंति ॥ ६७ ॥ भुवणवणजो

वारइन्द्रथया || हिवइतेसर्वदेवतानेसरीरनामानउं स्वरूप पचारत्रीजुंकहेछै || भुवणतेभुवनपतिदेवता १ | वाणतेव्यंतरदेवता २ | योतिषीदेवता ३ || सोधर्मदेवलोकनादेवता ४ इशानदेवलोकनादेवता ५ || इणेपांचगमेदेवताने

सम्मेसा । इगिहिंअगाइगाढारं सत्तमईं ॥ नवणाए वणएइ जोइ प सोहम्मीसाणे सत्त

सनत्कुमारमाहेंद्रसात हथनु | तणप्रमाणशरीरप्रमाणछै | आगिलेविगेदेवलोके ६ हाथ | आगिलेविचि ५ हाथ | आगलेविच ४ हाथ | आगिलेच्यारे ३ हाथ | नवग्रैवेयके २ हाथ || पांचअनुत्तरविमानेएक हाथ | इमएतलेतांमेएकरहाथउंओकरतांजाइजे || ६७ || हिवेविशेषपणेकल्पतेदेवलोकविपहिलार वलीविए ४

हत्थतणमाणं । छ २ छ २ छ २ व उक्किंध गेविज्जणएक्कारहाणिइक्किक्के ॥ ६७ ॥ कप्पदुगे २ छ

अनंतनामे च्यार इंद्रकवि मान आनत १७ प्राणत १८ देवलोक || मेविषे जाणवा तिमज | प्राणे ४ || वोधव्वे जाणवा || हिवै आरणः अच्युतः देवलोकने विषे च्यार इंद्रक विमान छे ते कहे पुष्फनामे | अलंकारनामइ २ | आनरणनामइ ३ |

देशधद्दा॥ आणयराधा४७ तद्दपाणएयधाध८ वोधव्वे॥ उक्केरा॥४९ मलेकारे॥५० आनरणे॥

तिम | एतत्थ अच्युत एहवे नामे इंद्रक विमान छे वलि सुरइ || (६३) हिवै नवग्रैवेयकने विषे नव इंद्रक विमान छे ते नाम कहे छे सुदंसणनामइ | सुप्रतिबद्धनामइ २ | मनोरमनामै ३ निश्चे || कहइ

५८ तदं अच्चुए धा५९ स्वेवा॥ ढ२॥ सुदंसणे॥५२ सुप्पडिबुद्धे॥५३ मणोरमे वेव॥५४ पीड

वेयवि जाणवो | तिवार पछी सर्वतोभद्र नामे ४ || विसालनामे ५ || सुमननामे ६ || (६४) सोमनसनामे ७ ||

वोधव्वे॥ क्वीयसव्वतोभद्दधा॥ पद्दा॥ विसाले॥५६॥५७ सुमिणे इय द्दा पण॥ द्दश॥ सोमाणसे॥५९

आवलुं प्रीतिक ८ || नवमं आदित्य नामे इंद्रविमान || निश्चइ करी | जाणवो || अनुत्तर विमानने विषे सर्वार्थसिद्ध नामै इंद्रक विमान एक जाणवु || सर्व इंद्रक विमानना अधिकारनइ विषे

एपियंकरे॥६० आइच्चे॥६१ वेवस्नेड बोधव्वे॥ सव्वट्ठसिद्धिनामे॥६२ सुरिंदे..या

वासठि इंद्रक ऊर्ध्वलोकनै विषे (६५) पंचतालीस लाख योजन अढी द्वीप माण || सीमंतकनामइ पहिलो पाथडो | मनुष्यक्षेत्र ४५००००० || उडुविमान सिद्धसिला ४ | सातमी नरक पृथ्वीनो अपइठाणो पांचमो नरक

एयवासद्दी॥ द्दधापणयाली सांजरका॥ सीमंतय॥१ माणसे॥२ उडुरसिवंचधा अपइठा

रकावासोपाल
किंविमानवास
योजन...

॥ क

सव्वसं सद्विइंद ॥८५॥

तपनीयनामे १९ ॥ ॥ मेघनामे २० ॥ अर्घनामे २१ ॥ हालिद्रनामे २२ ॥ नलिननामे तिम द्वीज २२ ॥ लोहिताक्षनामे २२ ॥

वतवणिज्जइ।१९। मेहे।२०। अग्घे।२१। हालिद्दे।२२। नलिणे तह रुण।२२। लोहरक्खे य

॥५५॥ वारसुवइंद्र इकवि मानसनत्कुमार माहेंद्रने विषे जा· ॥ पंचमकल्पे अंजननामे २ ॥ वरमालानामे २ ॥ रिष्टनामे २ ॥ तिमवली ॥ देवनामे ४ ॥ सोमनामे ५

२।२४॥ ५५॥ वेइरे।२५। अंजणे।२६। वरमाले।२७। रिट्ठे।२८। तह य देवे।२९। सोमे

॥ ब्रह्ममंगलनामे ६ बविमान ब्रह्मदेवलोके इ ॥ अथ लांतककल्पे वलभनामे १ ॥ चक्रनामे २ ॥ गदानामे ३ ॥ स्वस्तिकनामे ४ ॥ पंचमु तंत्या वर्त्तनामे इंद्रकविमान लांतक देवलोकने विषे इंद्र ।

य पा३०। मंगले।३१। बलभद्दे य।३२। चक्के।३३। गया।३४। सुत्थिय।३५। नंद्यावते।३६। सप

॥८७॥ द्विवे शुक्रदेवलोकने विषे च्यार इंद्रकविमाननामक हे छै आभंकरनामे इ १ गृद्धनामे २ केतुनामे ३ ॥ वीचोगरुल इंद्रकविमान ४ ॥ कंड ॥ जागवो ॥

।३८। ॥८६॥ आभंकरे य।३९। गिद्धी।४०। केऊ।४१। गरुले य।४२। बोधव्वे।४३। बं

॥८९॥ द्विवे आनत प्राणतने च्यार इंद्रकविमाननामक... महाशुक्रनामे १ सहस्रारनामे २

द्विवे सहस्रारने विषे च्यार इंद्रकविमाननामक हे छै ॥ लांतकवलभो कुंड ४ ब्रह्मनामे १ ब्रह्महितनामे २ बलीब्रह्मोत्तर ३

॥८८॥ महसुक्क।४५। सहस्स

नामइंदियविमाणं॥पणयालत्तक्कजोयणलक्खं

सव्वुयरिसव्वुठं॥पअक्खुवंदरययरवग्गूधावीरि

यपवरसत्थ: इतदिवआलणदेउ।वंतेउकंचणणरु

इलेणवंवेर॥अरुणेरदिसेरवेव॥पणविरु

नियरवरुयगपकडी

जोअएरिनाम-जयणा तरएहवुंनाम | केइमन्नति-केतलाइ कआचार्यमानेछइक हैछइ || एएहि-इणे इणे | कमेहि-क्रम तेअनुक्रमै | इमाहिं इहि इणिवरो एहवेतिमा रपाम्ली | कहीते तिलोक री | सुराकमसो इमअनुक्रम मइ | देवताअनुक्रम (५३) विरकंभ-विस्तारते पहिलएरे

जयणरिनामकेईमन्नंति एएहिंकमेहिंइमाहिं गईहिं तुरासुराकमसो ॥ ५३ ॥ वि

आयामते-लांबा इएणे || परहि-पर धितिबोक्म फेरफिरता थका | अभिंतरं-अ भितरतेमाहि लेपासइ | च-वु वव ली | बाहिरलेप संविपान मइ | जुगवं-जु गपत्तेस मकाले | मिणंतिमि एइमापै | छमास-छमही नालौतेचालि नाधणीदिवता | जाव-जि हाली | तहावि-तो तीपण मैतही | तेपार-पार तेदवताति मानती ||

संआयामं परिहिं अभिंतरवाहिरियं जुगवं मिणंति छम्मासं जावनतहावितेपारं ॥ ५

(५४) पावंति-प लीपामइ वत | विमाणाणं-वि मानेनीपारवा लनाथको | केसिंचि-प तिकेतला इकनो | अहवा-अ थवावली | तिगुणियाइए तिगुणादिकये || कम-अ अनुक्रमै | चउगे-च उकलेमा रगति | पत्तेयं-प तेकवत्ते क | चंडाइगइ चंडा-चवला रजवणाइवेग || जोइज्जा जोडवाए गरवी

४॥पावंतिविमाणाणं केसिंपि अहवंतिगुणियाइए कमचउगेपत्तेयं चंडाईगईयजो

(५५) तिगुणेण-ति गुणगतइक री || कप्पचउगे-पहिला ४ देवलोकनाविमान मापवा || पंचगुणेणंतु-वलीपांचगुणीगतितितिणेकरीनेआठसुमलिहा- आगलिदेवलोकनाविमानमापवा ||

ज्जा ॥ ५५ ॥ तिगुणेणकप्पचउगे १।२।३।४ । पंचगुणेणंतुअट्ठसुमुणिज्जा ५।६।७।८।९।१०।११।१२

गेविज्जे-नवग्रै वेयकनाविमा नतुमान | सत्तगुणेणे-सातगुणी गतिसाथेमापवा || नवगुणे-अ नेनवगुणी गतिसाथइ | अणुत्तरचउक्के-च्यार अणुत्तरविमानने मापवा | (५६) पढमपयर-पहि लेपत्तरे | पढमेकप्पे-प्रथ मसौधर्मदेवलो कइ || उडुक-एहवइ नामइ

१२गेविज्जसत्तगुणेणं ए । नवगुणेअणुत्तरचउक्के ॥ ५६ ॥ पढमपयरंमिपढमे कप्पेउडु

णा तिएवं र सगरनवइ दोरकमपमाणं। तिगुणंजियदोलरका। तेसिसदस्साइं पंचस

या।४७। असीवसठिनागा। जोयणवउलरकविसहसिसहस्सा। बसयतिग्रीसात

...लापंचकणियंमि॥५०॥ सत्तगुणेबलरका। इगसठिसहस्सबसयं [illegible] बासीया। चउ

...जातद्द नवगुणंमि। अडलरकसहाउ॥५१॥ सत्तसयचत्ताला अठारसकला

...यकमावउरो। वंडा। चवणेरजयणात्र। बिगायधतहागइचउरो॥५२॥ इचवगइचो

रकावासीप्राव

| | | | |
|---|---|---|---|
| देवलोक२ ग्रैवेयक५ अणुत्तरव | | | |
| १।२।३।४।१२ | २।५ | स्वेत२ | वर्णक लो |
| ७।८ देवलो· | रक्त२ | स्वेत२ | ५ वर्णक |
| ५।६ देवलोक | पीत२ रक्त२ | स्वेत२ | ३ वर्ण |
| ३।४ देवलो· | नीलो पीलो | स्वेत२ | स्वेत४ |
| १।२ देवलोक | रक्त पीत२ | म | स्वेत५ |
| ज्योतिषीनाव | ननाप्रकारक २ | | |
| भवनपति व्यंतरनाप्रकारकस्या | | | |

जिवारइमा दिठे मानलैनिषधपर्वत ऊपरि ६५५ सठिभे मध्यमाननलेसूर्याथे तिवारे·

एह भुवन· नव भुवन· ए पतिना || व्यंतर२ तिनिइनार || अनेयोतिषी देवता२ एत लाना || विविध व विमाननाव नेकवर्णविइस्वेतादिक || ४७ || दिवेविमानगुमानक रविणो· उदयते ऊगा

यत्नवणवितरजोइसियाणंविवदवन्ना॥४७॥रविणोउद

अंतर·ऊ नेआथम्या दिवे || ९४५२६ सहस्र· चोराणु हजार योजन ५२६ यो· ४२ भाग || १५ सयछ· ऊपरि पंचसइ बावीसयोजन || बलीवत तालीस

यअंतरिचउणवईसहस्सपणसयछवीसाएछपरछाया

भागसाठिया एतलुं क्षेत्र धरती थी दिसे जंबूद्वीपमाहेथे || कर्कसंक्रांति लागइ तेदन | दीहंमि· दिवसने विषे दक्षिणवारी || ४८ || एवंमि·ए हलाने || गुणि· वली· | गुणीए·गु लीजे

नसठिभागाककसंकंतिदीहंमि॥४८॥एवंमिउणगुरी

कर्कसंक्रांत दस्थ्री रा विमानगति ४५२६ नाग ४२ | ६० ५५१४०

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| चलगति | ३ गुणी | यो·२६३५४० | नाग६ | ६० | १४७७२०० | ना·१८ |
| चपला गति | ५ गुणा | यो·४७२६३ | नाग२ | ६० | १९८५०६० | नाग३० |
| जयण गति | ७ गुणी | ६६१६८८ | नाग५४ | ६० | २५५५२२० | नाग४२ |
| वेगवत गति | ९ गुणी | यो·८५०७० | नाग१८ | ६० | एकवीसगुणी गति | नाग५४ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १८७७९०० | नाग३० | १९८५६० | नाग३० | २५५२२२० | ना·६ |
| ३२६३२६६ | नाग३० | ६०३३० | ना·३० | ५१५३७०१ | ना·३० |
| ७३३०७८३ | नाग३० | ८४३४४ | ना·१८ | ५९५५१८२ | ना·४२ |
| ४४२५३७०१ | ना·३० | ६३१८०४ | ना·६ | ७६५६६ ६२ | |
| एकाचतुगुणीगति | एसीनगुणीगति | | | एनवगुणीगति | |

एकयोजननाद·नागकरणातेमांदिलानागलेणा देवलोकपाद· | पाद।३।८।९।१०।११।१२ | एनवग्रैवेयक | पांचअनुत्तर

| देवलोक | विमानउच्च | पृथ्वीपिंडप्रमाण |
|---|---|---|
| ५ अनुत्तर | ११०० उच्च | २१०० पिंडप्रमाण |
| ९ ग्रैवेयक | १००० उच्च | २२०० पिंडप्रमाण |
| ४ देवलोक | ९०० उच्च | २३०० पिंडप्रमाण |
| ७८ देवलोके | ८०० उच्च वि | २४०० पृथ्वीपिंड |
| ५६ देवलोक | ७०० उच्च | २५०० पृथ्वीपिंड |
| ३४ देवलोक | ६०० उच्च वि | २६०० पृथ्वीपिंड |
| १२ देवलोक | ५०० उच्च वि | २७०० पृथ्वीपिंड |

सुहंमेसु पंचसया कप्पदुगे पढमे तओ य इक्किक्कं ॥४४॥ हाय

इगवीसु सया वड्ढं तवणुत्तरकप्पेसु चउगेवेयनव

गेवेयपणगे य तद्देवज्जा एकारेसु नवेसुं ॥४५॥ इगवीससया

पुढवी विमाणमिक्कारसेव य सयाई बत्तीस जोयणसया मिलिया सव्वत्थ नायव्वा ॥४

६॥ पणपंच चउ तिदु इग वन्न विमाण सधय जच्च २२ सुय२ जासहस्सारो उवरि सि

द्वितीय पाताले देवतानां परिवार लोप्या चौरासीसहस्र १ ॥ असीहजार २८० ॥ बहोत्तरहजार २७२ त्रीजे देवलोके ॥ सतरहजारथ देवलोकई ॥ साठिहजार ५ देवलोके ॥ पंचासहजार ६ देवलोके ॥ चालीसहजार ७ सातमे देव ॥ त्रीसहजार ८ सामानिकदेव ॥ वीसहजार ९

चुलसीय असीइ बावत्तरि ७२ सत्तरी ७० सठी य पन्ना पण्णाला चत्ताला चउत्तरती ।

वीसहजार ए देवलोके ॥ दसहजार देवता दस माहेंद्रना छइ ॥ आठमे आत्मरक्षक देवता ॥ सामानिकथी त्रिगुणा १०इंद्रने ॥ छ ॥ प्रथम बीजे देवलोके र ॥ आगलि त्रि कदेवलो कर ॥ बाजी आग लि त्रिकुंदे वलोके ॥ दस ८ देवलो के ॥ घने दधि

२० वीसा २० दस सहस्सा आयरक्ख चउगुणीया ॥ घणउदधि घणवाय घणवायतणुवायतिसु तिसु कप्पेसु

| देवलोक १२ | सामान्यइंद्र | आत्मरक्षक |
| --- | --- | --- |
| सौधर्म ईशान | ८४००० | ३३६००० |
| ईसानेंद्र २ | ८०००० | ३२०००० |
| सनत्कुमार ३ | ७२००० | २८८००० |
| माहेंद्र ४ | ७०००० | २८०००० |
| ब्रह्मेंद्र ५ | ६०००० | २४०००० |
| लांतकद ६ | ५०००० | २००००० |
| शुक्र ७ | ४०००० | १६०००० |
| सहस्रार ८ | ३०००० | १२०००० |
| आनतप्राणत ९ | २०००० | ८०००० |
| आरण ११ अच्युत १२ | १०००० | ४०००० |

कल्परिया प्रथम बीजे देवलोकना ॥ घनवातकपरि आगलि त्रिदेवलोकना ॥ तेवलि घनोदधि घनवात ने लांतक पर आगला त्रिदेवलोक रहा छै तेमा दे जे घनोदधि वे थ प्रमाणनी रास छै ते जगत अनादि ना थहकी थका छै ॥ देवतानाविमान छै ॥ प्रतिष्ठानतेआधार २०८

एक दुवि पएक वाय तज्झ यं च कमा ॥ सुरभवण पइट्ठाणं

आकाशास्तिकाय ते त्रस ते त्रने आधारे ऊपरि लोय देवलोक २ ग्रैवेयक कल्प अनुत्तरविमान सर्व



| | |
| --- | --- |
| १।२।३।४।५ | आकाशप्रतिष्ठित |
| ६।७।८ देवलोके | घनोदधिवातनं आधार |
| ९।१०।११ देवलोके | घनवात तनइं आधार छै |
| १।२ देवलोके | घनोदधि आधार छै |

आगासपयट्ठि आकवरि ॥ छ ॥ द्वितीय पृथ्वी पिंड अनें विमान पिंड त्रुं करूपणं कदे छै सत्तावीससे २७०० योजन पृथ्वीपिंड छै ॥ अने विमानत्रुक १०० ॥

सत्तावीससयाइं उढवीपिंडविमाण

कल्पे ...नदी लिखित आस्तिन विलय जाए अनंतका ... ... ...



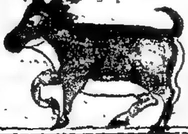












हयगओवि कप्प | निगओविक | विक्रजाणवा ॥

(४१)

वसहो१९वृदमाहचिक्कांइं१२॥४२॥

॥ ७ मानमेहल ॥ ॥

सन्नेत-सातज सयसहस्सा लाख ॥ नवनवइ विनाणवे ॥ खउनि अधवइ ॥ नवे कोड ॥ सहस्साइ हजार ॥ सयमेगं एकसो अनेत विमान बीस पुष्फावकीर्णक ॥ विमानकइ माहे इद्र देवलोकने विपे ए पुष्पावकीर्णक विमान माहि आठ सय ... लिग ॥ हिये बारे देवलोकने नाम लिखे मुकटमे

एसहस्स नवउत्तरखउनवेसहस्साइं सयमेगं बत्तीसं हवइ पुष्फावकिन्नाणं ॥ पुढे कप्पे

विषे मिग मृग ॥ महिष भैसो २ ॥ वाराह सूर ३ ॥ सीह नो चि ह्न ४ ॥ बकरा नो चिह्न ५ ॥ मीडका नो चि ह्न ६ ॥ घोडा नो चिह्न ७ ॥ हाथीनो चिह्न ८ ॥ गेंडा नो चि ह्न ९ ॥ गेंडा नो चि ह्न १० ॥

छच्चियसमहिसोसवराहदरसीहोयघवगलपसाचूराह हयगयगय भुजंगएवयी१०

अनेबारसउअढारमा देवलोके लिकारे अग्नीला४२८०००० विमान कह्ये (२५) द्विये त्रीजे देवलो- कंथसेवाचीसयाटलाविमा नकहइसनतकुमारनेविषे कुमारनेविषेइत्यादिकविमाननीसंख्याकहेछे | तिनसोअने | देति-कह्ये | वणन्न-त्रिहुणवि मान || तीनसोअने | अणलाजीस चोहुण |

पावकिल्लाणं॥२५॥ पंचसयाबावीसा। तिन्निवसयाउ दोतिबपन्ना। तिन्निसयाअह

त्रिमान कह्ये | सनतकुमारनेविषेकाटलात्रिहु ला:चोहुणानीसंख्याजा णवी (२६) द्वियेचोथापांचमादेवलोकतेहनेविषेइत्यादिकविमाननीसंख्याकहे छे मतरिसयचंसहस्त्रिअनेएकसो विमानचारलाकहवेछ | तिन्निवसया-त्रिणसोअनेछवंतिकह्येछ पचासत्रिहुणविमान || तिन्निस यात्रिणि सयअने

रुत्ता सणंकुमारस्सबहाइ॥२६॥ सत्तरिसयंअणूणा। तिन्निवसयाछवंतिबपन्ना। तिन्नि

नेअडतालीसएतलाविमा नकहुणकह || काटलात्रिहुण:सउहुणाकहइअड कसमाहिंदेवलोकमाइडले कह (२७) द्वियेत्रीजेचोथादेवलोकनेविषेआवलिगतविमाननीसंख्याकहे छे बारसइविमानअनेबावीस ५२६ | एतलाआवलिगतविमानसनतकुमा

सयाअडयाला। बहाइमंहिंदसकस्स॥२७॥ बारससयंबावीसा। कप्पंमिसणंकुमा

मारनेविषइ || आवसोअनेचोहुत्तरिकि- चौहुत्तरि८७४ || एतलाआवलिगतविमानमाहेंदेवलो कनेविषइकह (२८) द्वियेत्रीजासनतकुमारदेवलोकनेविषे इतपारेलावविमान

रआवलिया। अठसयाचोवत्तरि विमाणमाहिंदआवलिया॥२८॥ एकारसलरकाई॥

अनतू || नवैक-कह्ये || हजार || सातसो || चउरोहरि || एतलाणुणावकीर्णकविमानकहइसनत कुमारनेविषेएतलापुष्पावकीर्णकवि माननइबारसोनेछवासथालीयेनिवार वारलावविमानकहर (२९) द्वियेमाहिंदेव लोकनाउप्पा वकीर्णकवि

अनाणउइ नवेसहस्साई सत्तसयाचउरासिद्वंतिउप्फावकिन्नाउ॥२९॥ सत्तेवस

माननीसंख्या कहेछइ

॥ सतरहजारध ॥ साविहजा५ ॥ छंघासदजारद्ध ॥ बालीसहजार ७मातमेदेव ॥ एतलाइंद्रना समानिकदेव ॥ तीसहजार८

सोधर्मकल्पनेविषइ ॥ त्रिशूलाविमानतेरेअतरनेविषेव्या रसोअनेकतिदोइचराणुविमान ॥ सौधर्मकल्पनेविषेचउणु ताविमानच्यारसोअनेइ ग्यासीजइ ॥ सोधर्मदेवलोकनेविषेदोति जइवहारक·बारलाविमा नआदिदेइ ॥२०॥ हिवेसोधर्मदेवलोकनेविषे इकत्रीससय स

॥ चत्तारिसयायअक्कंतिचउणवया। चत्तारियबासीया। सोहम्मेदोतिवदार ॥२१॥ इगतीस

हस्र ॥ ऽनेआवाणुनवे·जइ ॥ सहस्साइ· हजार ॥ दोइसया· देयसो ॥ आणूंविमा न ॥ एतलोसोधर्मदेवलोकइपुष्पावकीर्णकवि मानएपुष्पावकीर्णकविमानसहस्रसउअने सातएतलाआवलिविमाननेजोयेतिवारइ ५१ जावविमानजइ॥ ॥२१॥

सयसहस्सा। अगणूणनवेसहस्साइं। दोइसयातेणउया। सोहम्मेपुप्फावकिन्नाणं ॥२२॥

हिवेइशानदेवलोकनेविषेकहेछेः इमेएतलोइजआवलिए तिमानइशानदेवलोकनेविषेनवरंक·एतलोविशेष ॥ वद्दाण·वाटलाबेदोइजइजा एत्रबेदोइसेअनत्रीसगुंच्या टलाजइ ॥ सेसा·छकलोत्रिशूला·चउशूलावि मानजेतलासोधर्मदेवलोकनेविषइ कहआवतेतला ॥२२॥

॥ एमेवयइसाणे नवरंवद्दाणदोइनाएनंदोसयअठतीसा सेसाजदेवसोहम्मे ॥२३॥

सतरसउनेसातइअधिक ॥ हिवेसोधर्मईसानवाधइनारेआवलि कागतिविमाननीसंख्याकहेछइ ॥ बारसउ१२०० ऽनेअढारअधि कएतलाविमान ॥ ऽनेआवलिगतविमान इशानदेवलो

॥ सत्तरसयासत्तुरा। सोहम्मेआवलिविमाणा। बारसअठारदिआ। ईसाणेआवलि

कनेविषेकइ ॥२४॥ हिवइसोधर्मइशानेपुष्पावकीर्णककेतलाजइतेकहेछइ सत्तावीसलाष२७००००० अठाणू९८ नवेक·जवैसहस्सा·हजा र ॥ सातसउअनेब्यासी २७९८७८२ ॥ एतलाईशानदेव लोकनेविषेपुष्पा वकीर्णकविमान

विमाणा ॥२४॥ सत्तावीसंलरका। अठाणउअनवेसहस्साइं। सत्तसयावासीया। ईसाणेपु

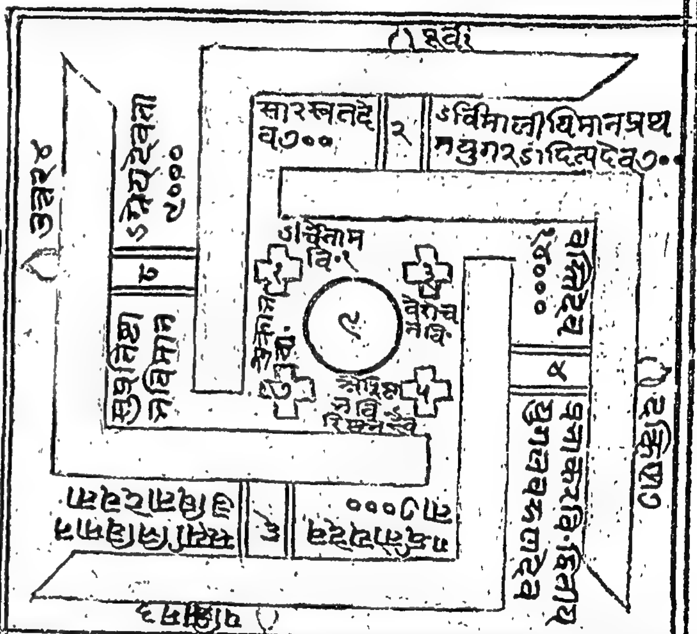
तदेवता१ आदित्यदेवदेवता२ युगलपूर्वदिसइ ये अर्चि१ अर्चिमाली विमान२ तिहांरहै१
तसइ देवतानो परिवारछइ१ वह्निदेवता१ वरुणेंद्रदेवता२ ए बीजुं युगल दक्षिणदिसइ ये वैरोचन
२ शुभंकर४ विमानतिहांरहइ चउदहसहस्रदेवतानो परिवारछइ२ गर्दतोयदेवता१ तुषितदेव
२ ए३ युगलपश्चिमदिशिनाये चंद्राभ५ सूर्याभ६ विमाननावासी सातसहस्रदेवतानो परिवार
२ अव्याबाधदेवता१ आग्नेयदेवता२ ए४ युगलउत्तरदिशिनाये शुक्राभ७ सुप्रतिष्ठाभ८ विमा
वासी ए००० देवतानो परिवारछइ४ मध्यभागे अरिष्टाभदेवता ए अरिष्टानविमाननावासी ए००दे
वतानो परिवारछै एनवलोकांतिकदेवतानीजाति ब्रह्मलोकनइछेहडै ए९ हनाविमानछै तेमाहें
लोकांतिकदेवताकहीइ ए देवतादीक्षानासमयथकी एक वरसपहिलास्वयंबुद्ध भगवंतप्रते
तिबोधइ ए९ हनो एहवो आचारछै एलोकांतिकनो आठसागरोपमनुं आउखुछै संघलाजमनै
संख्यातालवमांहे तेहनइपोतेमोक्षछै ए९ हनाविमानथकी संख्याताजोजनप्रदेसे अलोकछै इसा
दिकलोकांतिकनो तथा कृष्णराजीनो अधिकार भगवतीसूत्रमांहे घणोछै तिहांविशेषपणे जाणवो॥

॥ दिवै आवलिकागतविमानकेतलाछइ तेकहैछै ॥

॥ तिहांपहिलुसोधर्मदेवलोके
बासठ विमानसातसोअनइ
...

॥अथसोधर्मादिदेवलोककल्पेषु बत्त्रीसआदिसंख्या वि...

॥ सतरहजारछ ॥ सातिहजार ५ ॥ पंचासहजार ६ ॥ चालीसहजार ॥ एतलाइदना ॥ तीपह
जार ८




लराजी पश्चिमनीवाह्यकृष्णराजीसमईदिछइ २ इमपश्चिम
नीअभ्यंतरकृष्णराजी उत्तरनीवाह्यकृष्णराजीप्रतेंछिइ ३
इमउत्तरनीअभ्यंतरकृष्णराजी पूर्वनीवाह्यकृष्णराजीनेस
र्शेछे ४ इमआठकृष्णराजीछइ तेहनाघुणानानाजाग
मीछापनाएलवीछइ एहकृष्णराजीनोविस्तार असंख्या
तायोजनसहस्रछे एहकृष्णराजीनाअवकाशछे तेहवि
चालेआठविमानछइ तेहनानाम अर्चि१ अर्चिमालीए२
र्वदिशाइ २ वैरोचन३ प्रभंकर४ ए२दक्षिणदिशविमान
चंद्राभ५ सूर्याभ६ ए२पश्चिमदिशिना शुक्राभ७ सुप्रति
ष्ठाभ८ एउत्तरदिशिना अनइतेकृष्णराजीनामध्यभागइ
रिष्टाभविष्टाभनामविमानछइ पूर्वदिशाइ अभ्यंतरअर्चिविमान१ पूर्वदिशनइवाह्यअंतरे अर्चि
मालीविमान२ पूर्वदक्षिणनेअंतर अभ्यंतरवैरोचनविमान ३ दक्षिणनइवाह्यअंतरेप्रभंकरविमा
न४दक्षिणपश्चिमनइ अभ्यंतरअं तरेचंद्राभविमान५ पश्चिमनइवाह्यअंतरेसूर्याभविमान ६ पश्चि
मउत्तरनइअभ्यंतरअंतरे शुक्राभविमान७ उत्तरनेवाह्यअंतरइ सुप्रतिष्ठाभविमान८ तेकृष्णरा
जीनेविचरे अरिष्टाभविमान ९ए नवविमाने अनुक्रमे एहवानामनादेवतारहेछे तेहनामसार।

॥हिवइ ते लोकांतिक देवता किसइ देवलोकइ किसइ प्रतरे किसइ विमानइ रहइ छै ते कहै छै जंबूद्वी
पथकी तिर्यगलोकमाहे असंख्याता द्वीपसमुद्र गमीनइ जिहां अरुणवर द्वीप तेहनी जे वेदिकानो छेहडो ति
हांथकी मांहीने बेयालीस सहस्र योजन प्रमाण अरुणवर समुद्रनो पाणी अवगाहतां थकां तिणइ ठामइ पा
णी उपरि अप्काय नाम महा अंधकाररूप प्रदेश तमस्काय छै ते तमस्काय १७२१ योजन लगे समश्रेणि भि
त्याकार ऊंची जे नेते आगलि तिर्यग्लोकमाहे विस्तरती थकी सौधर्म ईशान २ सनत्कुमार माहेंद्र ४
एह देवलोकने वींटीने ऊपर ब्रह्मदेवलोकनो त्रीजा प्रतर लगे अरिष्ट विमान तिहां पहुंतो थको ए तमस्काय देवा
लि समश्रेणि तिहूं वलयानो आकार छै ते हेठथकी शरावलाना तलानइ आकारनो संस्थान छै ते ऊपरि कूकडाना
नो जाजरती परइ तेह तमस्काय रहीउ छइ ते तमस्काय मूलथकी मांहीनइ ऊंचो संख्याता योजन लगे छै वि
स्तारथकी पणि संख्याता योजननो विस्तार छइ ए माटे असंख्यात मइ द्वीप छै ते माटे ए तमस्कायनुं मोटाप
णुं सिद्धांतना जाण एहवुं कहे छै ए कोइक महाशक्तिवंत देवता सबल गतें करी तीन चिवटी मांहे इकवीस
वार आखो जंबूद्वीप फिरीने आवइ एहवो जे देवता ते पण मही नै पिण संख्याता जोजन प्रमाण तमस्काय लगे
पहुंचे पिण अधिक योजन लगइ जाइ नही एहवी तमस्काय मांहे पांचमा देवलोकनइ पूर्वदिसइ दक्षि
ण दिशाथी उत्तरनइ ओछो विस्तार छै २ इम दक्षिणदिसइं पूर्वथकी पश्चिमइ ओछउ विस्तार छइ २ इम
पश्चिम दिशाथकी दक्षिण उत्तरनो विस्तार छै ३ इम उत्तरदिशाथकी पूर्वपश्चिमने ओछे विस्तार छै ४ तेमा
पूर्वदिशिनी अभ्यंतर कृष्णराजी दक्षिण दिशानी

।। सतरहजार४ ।। सातिहजार५ ।। छत्रीसहजार६ छै ।। चालीसहजार देव ।। एतलाइंद्रना सामानिकदेव ।। तीसह जार८

वह्निलो कांतिक २ || वरुणनामालो कांतिक ४ || गर्द्दतोयनामलोकां तिक५ || तुषितनाम लोकांतिक ६ | अव्याबाधनामा लोकांतिक७ || आग्नेयनामा लोकांतिक ८ | एवेवते निश्चय थकी | अरिष्टनामलो कांतिकदेव जाति ९ ||२८||

वह्नीर वरुणाय ४ गद्दतोयाय ५ तुसिया अव्वावाहा ७ अग्गिच्चा ८ चेव रिठाय ९ ।।२८।।

एएएद वाएए वा | देवतानीजाति लोकांतिकांनी || नव्वा-स वेजन्म छे | वोहिति- प्रतिबो धइ | जिणवरिंदतीर्थंकर देवप्रतइ || सव्वजननीव हितियआवीने | इनकहे सर्वजग नाजीवनेहित कारक | हेजगवं तदेव | तित्थंपवतेह तीर्थ शासनप्रवर्त्तावो धर्मदातारछाउ |

एए देवनिकाया भयवं बोहिंति जिणवरिंदं तु सव्वजगज्जीवहियं भयवं तित्थं पवत्तेह ।।

||२९|| हिवे एहनो परिवार देवतानो प्रथम-प हिला | जुअमि-जु गलमाहे | अग्नरसयाति-सात से देवताछइ | विईयंमि-वी जाजुगलने | अरदइहजारदेवताछे || तईए-त्री जेजुगल | सातहजारदेवताछे |

||२९|| पढमजुअंमि सत्तउ सयाणि वीयंमि चउदससहस्सा । तईए सत्तसहस्सा ण

| सर्वार्थ | अनुत्तर ५ | ग्रैवेयक | २ग्रै | १ग्रै | १२।११ | १०।९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४।३ | २।१ | देवलोक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५८२ | १ | ११ | २३ | ३५ | ६४ | ८८ | १०८ | १२८ | १५२ | २७४ | ६९२ | ९६५ | वृत्तविमान |
| २९८८ | ४ | १६ | २८ | ४० | ७२ | ९२ | ११६ | १३६ | २०० | २८४ | ७१२ | ९८८ | त्रिखूणविमान |
| २९०४ | ० | १२ | २४ | ३६ | ६८ | ६८ | १०८ | १०८ | १३२ | १९२ | ६९६ | ९७२ | चउरस्रविमान |

णवचेवसयाणि-नव सैदेवता-चेवनिश्चय थी | सेसेसु-शेषछाकतावे त्रिएपजातीना लोकांतिकदेव नेवै ||३०||

णवचेव सयाणि सेसेसु ||३०||

तेजिम वृत्तमध्यतेवावस्हि विमानछे एकएक दिसे तेकहने आगे हरतो २० बीसवी विनागआवे वृत्ते रकगस्वा तेएक त्रस्र माहि घाले एक चउरस्र माहि घालतां २० वृत्त २१ त्रस्र २१ चउरस्र क इतेप छे चोगुणा करतां चौसच्योकाण तेमाहि १ इद्रक नेलतां ८२ इत्यादि त्रस्र चउरस्र

| प्रहर | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | [illegible] | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २ | २३ | २४ | ५ | २७ | ८ | २९ | ३० | ३१ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| [illegible] मान | ८१ | ८१ | ८१ | ७७ | ७७ | ७७ | ३ | ३ | ३६ | ६ | ६ | ६१ | ६१ | ६१ | ६१ | ६१ | ६१ | ५७ | ५७ | ५७ | ५ | ५३ | ५३ | | ९ | | | ७५ | ७१ |
| [illegible] | ८४ | ८४ | ८० | ८० | ८० | ६ | ६ | ६ | २ ७२ | ७२ | ६८ | ६८ | | | ६४ | | ६० | ६० | ६० | ५ | ५ | ५ | ५२ | ५ | ४८ | | | | |
| [illegible] | ८४ | ८० | ८० | ८० | ६ | ६ | | ७२ | २ | | | ६८ | ६८ | ६४ | | ६० | ६० | ६० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५२ | ५ | ४८ | | | | |
| [illegible] | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ३५ | ३६ | ३७ | | | ४० | ४१ | ४ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | | ४८ | ४ | ५० | ५१ | ५ | ५३ | ५४ | ५५ | ५ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० ६१ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ३२ | | | २९ | २९ | ९ | ५ | २५ | २५ | २१ | २१ | २१ | १७ | १७ | १७ | १३ | १३ | १३ | ९ | ९ | ९ | ५ ५ ५ | १ | १ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ३६ | ३८ | ३ | २ | ३ | ८ | ८ | २८ | ४ | २४ | ० | ० | २० | १६ | १६ | १६ | १२ | १२ | १२ | ८ | ८ | ८ | ४ | ४ | ४ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ३६ | ३८ | ३२ | ३४ | ३२ | २८ | २८ | ८ | २ | २४ | २० | २० | ० | १८ | १८ | १६ | १२ | १२ | १२ | ८ | ८ | ८ | ४ ४ | ४ | ० |
| [illegible] | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | ४९ | | ४९ | ३७ | ३ | ९ | २५ | २१ | १७ | १३ | ९ | ५ | | | |

[illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] स्कायरूपडे | हिवेलेनवजातिदेवतानाम· सारस्वतलोकं तिक | आदिसलोकं तिकर

[illegible] वंत्रेमियकिएद्दराईउ। २७। सारस्सयरमाइ

...त्तरवत्तरथ ।। साविहजा५ ।। छंपासद्दमारह ।। चालीसहजार ।। एतलाइंद्रना ।। तीसह
के ...वेत्ते ... समानिकदेव जार८

जेपंक्तिनाविमानबइ ।। तेत्रिकुंणागे वीजे । तेत्राग दिताला तेत्र्यकतेत लाः त्रस्रविमानः चउरस्र विमानः वृत्तविमान ।। त्रसविमा ननेविषे । एषएक उगरेतो ते । षिवघा लीइ । तेषदीयक गरइतो । इक्किक्कंनागदे तांथकोतोतेह (२५)

पंतिविमाणा तिविन्हा तंसचउरंसा वट्टा तंसेसु सेसमेगं षिवसे सउगस्स इक्किक्कं ।।२५।।

।। प्रथम प्रतरना विमान ते हवइ मुख ए द्वीसंज्ञा १ बेहलइ प्रतरये विमान ते हनै भूमि ए द्वीसंज्ञा । ते हनो
मास्ते वर्ज प्रतरना विमान मेलाकीजे ५८ इ ते हवु ईजिणइ देवलोकइ येतला प्रतरकुइ तिहां ते
अर्द्ध ते हलागुणाकीजे तिवारे तणइ देवलोकइ सर्वआवलिका विमाननी संख्या आवइ वीजा विमाण तेस
... उप्फावकीर्ण बइ तेजिम सौधर्मईशान देवलोकइ आवलिका विमान २४९ मुखना बेहलइ प्रतरे
... भूमिना विमान २०१ ते हनो समास ते मेलाकरता ४५० विमान थया ते हनु अर्द्ध २२५ थया ते २२५ ते रणाकी
... जेमाटे ते तिहां ते रप्रतर बे तेमाटे २२५ ते रगुणा करतां २९२५ थया एतला आवलिका विमान बे वीजा उअ
प्पावकीर्णकविमा

नबइ इमसघलाइ कहणा । एकत्र्यसमा हे अने । एकचउरसमांहे घालियइ ।। पबेते त्रिणि राशि थई बे ते पिण ।। चउगुणी करीने जेरा शि ते अकथाइ ।। तिवारइह त्रविमान नी । त्रिणिमांहे जेमुख्यइइ कविमान बइ । खिवते घालि यइ

।।२५।। तंसेसु चउरंसेसु य तो रासितिगं पि चउगुणं काउं वट्टेसु इंदियं खिव

तिवारेप्रतरप्र थमतेविमान । मीलियकप्प संख्या मिलइ सर्वदेवलोक नी (२६) हिवै नवजातिनाे लोकांतिकदेवतानो विचार स्वरूप कहै छै । पूर्व पू र्वदिसे । अवरा अ नइपश्चिम दिसे । बलंसा बहुणाबे जिहो । तंमाधुए अ नइ त्रसतेवली

पयरधणं मीलियं कप्पे ।।२६।। अथ लोकांतिकदेवविचारः ।। पुव्वावरा बलंसा तमाउ

| इत्तोत्कला मू | गुपर | चूलिर | मजाम | उद्वीप | प्रनरेत्र | ...किधि | पुष्पावकी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सार्धधृधीमाक | २८९ | ५ | २५४ | १२७ | ६२ | ७८७४ | ८४८२१४२ |
| पानुजरानि माण | ५ | ० | ० | ० | १ | ५ | ० ५ |
| २गुनुपमलि | १७ | ९ | २८ | १२ | ३ | २९ | ६१ १०० |
| अनधु तस | २९ | २१ | ५० | २५ | ३ | ७५ | २२ २०७ |
| कल्प | ४१ | ३३ | ७४ | २७ | ३ | १११ | ० १११ |
| [illegible] | ५७ | ४५ | १०२ | ५१ | ४ | २०४ | ९६ ३०० |
| [illegible] | ७३ | ६१ | १३४ | ६७ | ४ | २८८ | १३२ ४०० |
| [illegible] | ८९ | ७७ | १६६ | ८३ | ४ | ३२२ | ५६६८ ६०० |
| [illegible] | १०५ | ९३ | १९८ | ९९ | ४ | ३९६ | ३९८०४६४० |
| [illegible] | १२१ | १०९ | २३४ | ११७ | ५ | ५८५ | ४२४ ११६५ |
| [illegible] | [illegible] | १२५ | २७८ | १२९ | ६ | ८२४ | ३९९१६६८ला ४ |
| [illegible] | [illegible] | १४२ | ३५० | १७५ | १२ | २१०० | ११९७९००ला ३० |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | ४५० | १९१ | १३ | २२२५ | ५९९७०७ला ६० |
| | | | | | | | |

ोवद्दविमाणा।तत्तोतंतस्सवेरयादोइ

पागारोवोधव्वो।अवसेसेद्विंउप्पसेद्विं

(२३) द्विवेउक्कारकीलीकअनेवेक्तिगतः पडमल पहिला | अतिमनेवेइलाजेवतरवे जेनेइनायेआयलिकाविमान | सुदलउत्थमवुत ईनेपुष्पविमान संज्ञा

॥२३॥पत्नंतिमपयरावलि विमाणउ

वेदलइव इरिविमान नेजूमसज्ञा | तेविजे नेलोको जई | पयइते इमाउई | पछेतेउतरउ लोकरीइतिवा २६ | इहकप्पे-थेवा वितदेवलोक

इन्दमितस्समासहांपयरजुणमिठक

तिसारवालो आवलिकावि विमानवेलाने | विजाविमानेपुष्फावकी वीकजाणवा

(२४) द्विवेतेआ इगदिसि.प कदिमे

पिसहगांउफकिल्लयरो।२४।इगदि

...॥ सावित्ताप ॥ चत्तासट्ठसारह ॥ बावीसट्ठजार ॥ एसलाइंडता ॥ तीसह

सद्दीवद्दीतवेतलेजवे तवैमहासमनोद रवह ॥ सिं तउज्ञातेका तिवड ॥ सि तेविरायमिसहि तेविमानसोमैछे (१८) जेदक्षिणदिशिनाइंद्रछे ॥ तेहनैदक्षिणआवलीनीपंक्तिपो तानीछे ॥

ज्ञोयारम्मा । सयंपहाते विरायंति ॥१८॥ जेदक्खिणीयाइंदा । दाहिणउत्ञआवलीमुणे

॥ जेउत्तरदिशिनाइंद्रछे ॥ तेहनैउत्तरआवलीनाविमानपो तानाछे (१९)

यद्वा । जेउत्तरइंदा । उत्तरउत्ञआवली तेसिं ॥१९॥ पुव्वेणपच्छिमेणय सामन्नात्र्म

वलीमुणेयव्वा । जेउणवट्टविमाणा । मज्झिल्लादाहिणिल्लाणिं ॥२०॥ पुव्वेणपच्छिमेणय ।

जेवट्टाते विदाहिणिल्लस्स । तंसचउरंसगाउण । सामन्नाहोतिडान्हंपि ॥२१॥ पागारप

रिखित्ता । वट्टविमाणाहवंतिसव्वेवि । चउरंसविमाणाणं । चउद्दिसिंवेइयाहोइ ॥२२॥ ज

अरकाडयसंविज्जेनतिज्जं॥२५॥आवलिअविमा

| विवज्जंआ वह | नियमसो नि अयथक | असंख्यातायोजन ३७५ | संख्यातायोज नुआने | यदीआसं ख्याताया जनरु

णाणं॥अंतरंनियमसोअसंखिज्जं॥संखिज्जमसंखिज्जं

आतरुंफकटुं माद्रमाद | पुष्पावकीर्णकविमानवि चाल्ड | (२६) | द्विवेआवलिकागतविमाननीश्रेणि नागमकहईछइ देवद्वीपऊपरिएक विमान | हायनागस मुद्रऊपरवि मानछइ

॥नणिअंपुफावकिन्नाणं॥२८॥देवद्दीवेएगंदोनागु

| यद्दीपऊपरिआरविमानआ वलिकागति | भूतसमुद्रादिकठामनेविषेआ वविमानआवलिकागतछइ || सोलवि मानच्छ

दहिंमिजरकदीवेकज्जं॥भूय समुद्दे सुत्रडासो।

| आवलिकाविमा ... | (२७) | द्विवेलविमाननोगंधसपर्शादिकछइ अनंत अनंतमहासुरगिंध | फासि स | नवलीय मो ७७ | पुष्पकासोय तथापुष्पवनस तीनीपातिविशेषतेहसरीषाछ कमानग्यानछइ |

॥२॥सावलिविमाणं॥२७॥अवंतसुरहिगंधाफासेनवणीयमउयसुहफासा॥नि

सि। ते विशेषे सहित ॥९॥ जे दक्षिण दिशि गाइंद छै । ते देवेंद्र दक्षिण आवलीनी पंक्तिपी मानीये ॥

विमाननी पंक्ति छै ॥१०॥ तेमां मूल इंद्रकविमानते । वृत्तपंक्तिमांहे वेगोलछइ । तिवारपछी त्रिकूण छइ । अनुक्रम मइ । त्रस विमान र । चउरस्र विमान र । तिवारपछी वलीवृत्तविमानर ॥ इम श्रेणिगतिविमान । विवहा अनेविविध एकठा अनेक जातिना पुष्पावकीर्णकविमानछइ । तयंतरे ते श्रेणिगतिवि

इक्किक्कं ॥१०॥ इंदियवट्टा पंतिसु तो कमसो तंस चउरंसा वट्टा विव द्दुप्फ विकिन्ना तयं

मांनते विचैछै । एकपूर्वदिशिनंकीने वीजी त्रिण्य दिसे पुष्पावकीर्णकविमानछइ ॥११॥ वृत्तवि मानते । वृत्तविमानऊपरिछइ । त्रस्रविमानते त्रस्रविमानऊपरिश्रेणि ॥ चउरस्रविमानते । चउरस्रऊपरि । ऊर्द्धक्रमाहि

तरे पुव्व दिसिं ॥११॥ वट्टं वट्टस्सुवरिं तंसं तंसस्स उवरिमं होइ चउरंसे चउरंसं उड्ढं स

विमाननी श्रेणिने विषे वरीतिछै ॥१२॥ सगलाई वृत्तविमाणने ॥ एकएक द्वारकवारणाछै । हवंति कर्जाव । नायव्वाक इमजाणवा । तिन्निय त्रिण्य वारणाछै । त्रस्रविमानसर्वतिते ॥ वली च्यार वारणा

विमाणसेढीउ ॥१२॥ सव्वे वट्टविमाणा एगदुवारा हवंति नायव्वा तिन्नि य तंसविमाणे चउ

ऊवैछै सर्वचउरस्रविमानछइ ॥१३॥ सर्वेभू सघलाइ । प्रतरनेविषइ । मध्यविचे वृत्तविमान । ते आगलि त्रस्रविमानछइ । तदनंतर तेथी आगलि । चउरस्रविमानछै । इमवली आगलि

रिक्कं ति चउरंसा ॥१३॥ सव्वेसु पत्थडेसु मज्झे वट्टं अणंतरे तंसं तयणंतर चउरंसं पुण

वृत्तछै । तदंतरे तिवारपछी त्रस्र चउरस्र ॥१४॥ वट्टं जेये वृत्तछइ तेगोल । वलयगंपिव वलियातीपरइछै । तेसजे त्रस्रविमानछै । सिंघाडाछइ आकारछइ । विमानत्रिकोणिया । अनेये चउरस्रविमानछैते । पुनःफिर

वि वट्टं तओ तंसं ॥१४॥ वट्टं जलवलयं पिव तंसं सिंघाडगं पिव विमाणं चउरंसविमाणं पुण ॥

त्रिणसइविमान || इकसउइग्यारविमान | देवलोक नवग्रैवेयकेसुदर्श नेसुप्रबुद्धमनोरमइति || ग्रैवेयक

यंतिग ३००। मिगारसहियंसयं १११ तिगेहिठामझे

सातविमानसर्वलोकह ४ध्यिआलपनुत्तनसहइ || ऊपरलोत्रिकइसीसोमनस श्री प्रतिकर आदित्य ग्रैवेयके ए | ऊपरितीन विमानछइ

...उत्तरसयं १०७। उवरितिगेसयं १०० उवरपंचा।। ८

...उसीलक्खसत्ताणवइसहस्सतहविमाणतेवीसं || ९

।सव्वग्गुहलोगंमि इंदियाविसद्धिपयरेसु। १०। वो

दिसिंचउपंतीउ।वासद्धिविमाणयापढमपयरे।उवरिइक्किक्कहीणा।अणुत्तरेजाव

पूर्व

उत्तर

उडुनामे इंद्रविमान ४५ लाखयोजन

दक्षिण

॥ सदीवउत्तीतव

सि ॥ तविराचंमिसदि ॥२५॥ जेदक्षिणदिशिनाइंदछे । तेदक्षिणआवलीनीपंक्तिपां ॥

एपयोजनतेचंद्रमासूर्य ॥ जंबूद्वीपमाहि ७२६नेमा । १६८सहस्र ६००ऐलाकर तेपं०सो०जऊरुपरिला ४८जागते एकमांकलानाजा णवा  ग्रहनी संख्या । नक्षत्र नीसं भार । तारानीसंख्यार तेद । जम्बू जिद । इक्षसि योजइ । जोजण नाइ

यंजोयणसयं२५०॥ जंबुद्दीवंमिपविसंतिपं८४॥५॥गहरिक्खतारसंखं जस्थिच्छसितो

| | | |
|---|---|---|
| १ | सोधर्मविमान | ३२०००००लाष |
| २ | ईशानेविमान | २८००००० लाष |
| ३ | सनत्कुमार | १२०००००लाष |
| ४ | माहेंद्रविमान | ८००००० लाष |
| ५ | ब्रह्मविमान | ४०००००लाष |
| ६ | लांतक विमा | ५०००० पचासहजार |
| ७ | शुक्र विमान | ४०००० चालीसहजार |
| ८ | सहस्रारविमा | ६००० हजार६ |
| ९ | आनतप्राणत | ४०० च्यारसैविमान |
| ११ | आरणअच्युत | ३०० तीनसैविमान |
| १ | प्रथम क | १११ विमान |
| २ | द्वितीयग्रैवेक | १०७ विमान |
| ३ | तृतीयग्रैवेक | १०० विमान |
| ५ | अनुत्तरविमान | ५ विमान |

समुद्रने तथाद्वीपनेविषे विकइ ॥ तेद्वीपसमुद्रना चंद्रमासाथइ । एकचंद्रमानोपरिवा रलेइ । जेतलाचंद्रमा होयतेतला गुणाकरतो । तेटलाद्विकमांसु ध्यासर्वग्रहतेला सैषीरवालइ

मुद्ददिदीवावा। तस्ससिदिएगससिणो। गुणसंखंहोइसव

 द्विवेवासठि२तेरसर्वविमानसंख्या ॥ बत्रीसलाख विमांनर ॥ अठावीसलखविमा न

यं॥६॥ अथोर्द्धलोकेदेवविचार॥ बत्तीसाअ२छावीसा१२॥

बारइलखविमानर । आवलख विमान ४ । च्यारलख विमान ५ । सोधर्मईशानसन त्कुमारमाहेंद्र ४ ब्रह्मपद्दोलंगेजद ॥ लांतकदेवलो केपंचासरसह स६ ॥ शुक्र४०० सहस्रवि मान ॥ सहस्रा रदेवलो

बारस१२अड८चउविमाणलरकाइ।पन्नास५०चत्त४०छस

कैइलखना रविमान । अनुक्रमे एहवो । सोधर्मदेवलोकथी ८देवलोकलगेएवि माननीसंख्याकहीछे वइ । आणतप्राणत९।१० विक्रदेव लोके । सयचउआ रसइविमा न । आरणअच्यु त११।१२विक्रदेव लोक । सयति गं

हस्साइ। कमेणसोहम्माईसु॥७॥ उसुरसयचउ४०० उसुरस

बयोजन ४८ भाग थया वली ४ पद भागछे एकइकसठिया भाग ता ७ भाग कीजे इस्याते वारपद भाग
४युणाकर ४८ भाग तां ५६ एक भाग थाइ तेसातसासाथइ भाग देतां ८ भाग ताजइ सात अठावन इ
मते ८ भाग पाछिला ४८ भाग थतां इस भाग थया तिणरी यो० १ भाग २ भाग सठियो पाछली रहो एकवर्य
जन ४९७ थया इवइ वेइमानां पमांदलाव इ तेएकर मांडलु ५६ भाग ते ७ इ तेमा ८ इ ५६ भाग प
नरगुणाकरतां ५४० भाग थया तेभाग इगसठिनै भाग देतां यो जन १ ३ यो० १ ३ अनै ४७ भाग थया तेपा
विलामा हे ते भेलतां ५१० यो० अनइ ४८ भाग इ १ हैत्र थाइ ये तलो हैत्र सूर्य १८ ३ अनै ४७ भागुहे
रात्रिइ करी फिरइ तेतलु हैत्र वइ गा० १५ अहो रात्रे करी फिरइ सितिवइ मांडल भूमि विचार इमजा

थेइर्घविहिंड

| ष्टितेइमानापत्रिकिहांछे मांडलाइम १० | लेयलसबइ माहेछै || | पांचमांमलातिपेध पर्वतिजाण रिहइ | वेइमानावेपमेडल || | सूइमानानां मलानी | अनिरानुप्रमाण विचजोलूनिका || | जातियेप्रमाण तेद्वीज || |

मंडलइसगंलवणे। पणगनिसढंमिहोइ सं दस॥ मंडलअंतरमाणं। जाणपमाणं पुराक।

| कनी ३ इ | ५१ | हिवैतिप१० योजन४८ भाग मूमिकानोचार कहेछे चंद्रमा | सूर्य २ | एलवणसमुद्रमांहे || | त्रिणपव्यइजोयण | श्रीसअधिकाएतलेहइ३० योजनः अग्नेहिजवण मसुइमांहे जाइ || | अनइयलो |

हियं॥४॥ ससिरविणोलवणंमित्र्र। जोयणसयतिन्नितीसंरइ३० अहियाइं। असी

नामंडलो१८४बइतेकरमांडलुएकयोजननाद१अडतालीस६०भागबइ तेमाटे१८४अडतालीस
गुणाकरतां८८३२भागथाइतेभागद१इगसठिरइवांटेदेतां१४४योजनथाइ तेअनइ४८भागवधइ
रहे ते१४४जोजनपाछिलाउद्दजोयणमाहेतिवारइ५१०योजनकुपरि४८भागवधथया१ वलीबी
जोकरण जोएकअहोरात्रइ विजोयनप्रमाणसूर्यनइ चारक्षेत्रकुइ तिवारइ१८३अहोरात्रिइक
रीकेतुलवारिक्षेत्रपामिइ विजोयनुअंतरबइ तिहनाद१इगसठि२भागकरतां१२२भागथाइ ते
मद्धे वली४८भागसूर्यनाविमाननीबइतेघालतां१७०भागथया ते१७०भाग१८३अंतरासाथेगण
तांथकां३१११० इगतीससहस्रएकसोदसभागथया तेइगसठिसाथइ वांटकाथकां५१० योजना
कुपरि४८भागइगसठियाएतलुंसूर्यनइ चारक्षेत्रप्रमाणकुइ२ एवीजोभेद तथा१८३अंतराबे
तेविजोयणनाछे तेविवणाकरतां३६६योजनथाइ अनेद१मांडलेधि८योजन क्षेत्रथाइछिइ ते
माटे अडतालीसत्रिगुणाकरतां१४४जोयणथाई तेपाछिला३६६यो० माहेलताकरता५१०यो०
थया अनइ१मांडलुवेशेपरहु तेहनाकुपरला४८भागजाणवा२ इमसूर्यमंडलप्रमाणविचार:
द्विवहवेचंद्रमांडलक्षेत्रमिकाठुंकरण५१०यो०कुपरि४८भागकुइतेकिम चंद्रमानामंडल१५तेहनाअंत
र१४तेएकअंतरुउ३५योजन३०इगसठियाभागएकइगसठियाभागनाउभागकीजे एहवा४
४८भाग मांडलामांडलानुंएअंतरुजाणवुंतेपइलीसजोयनचउद१४गुणाकरतां४९०यो०
थाइ वली३०भाग चउदसगुणाकरतां४२०भागकीजे तेइगसठियासाथइवांटतां ६यो०

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] रत्न।दुरस्सयमंफलालवणे॥२॥ससि

[illegible] जंबूलवणेमंफला अंत

[illegible] प्रमाणस्यापन्ना॥ श्री:॥

[illegible]



(९८) द्विवे चंद्रमा सूर्यनइ मंडलानो विचार कहइ छइ पनरह १५ मांडला चंद्रमाना ॥ एकसो चोरासी मांडला सूर्यना ॥ इहां ए जंबूद्वीप मां हे ॥ चंद्रमा

ताव इयाउं य तहिं चंदा सूराण पंतीउ ॥ ए ज पनरस १५ चुलसी इसयं १८४ ॥ इह ससि

सूर्यना मांडला एतला छइ तेमांडला छे ॥ पांचसइ योजनने वली ॥ कवरि दियए योजन अधिक ५१० योजन वली ॥ अडतालीस भाग एकसठिया भाग कीजे ॥ (९९) द्विवे एकएक मां

रविमंडलाइ तरकित्र | जोयण पण सय दस हिय | भागा अडयाल इग सठा ॥ पणती

मंडले अंतरं केतलुं छे ते कहे छे ॥ चउरो भाग ॥ पिण ते केहवा एकसठिया ॥ सठिया भागना सात भाग कीजे ॥ इस्या ४ भाग ॥ अने वली ३५ योजन ॥ अंतर २ योयण ॥ चंद्रमा नइ ३५ योजन ३० भाग ॥ सूर्यनइ २ योजन

सिगसठ अंतरो | इगरसठसस सत्रजद्ध अस्स | पणतीसं ३५ चउ २ जोयण | ससिरविण

एमांडला मांडला वि चे अंतर मान (१००) दोइ जोयण केरो अंतर सूर्यना ॥ मांडले मांडले जाणवो ॥ अने चंद्रमाके मांडले मांडले ३५ जोयण

अंतरयं ॥ १०० ॥ बेजोयणणि सूरस्स मंडलाणं हवंति अंतर ए २ ससि पणती

तीस भाग ॥ तीस भाग ... सात भाग ... साथ ... भाग ... अंतरो जाणवो (१०१) द्विवे ... ॥ द्विवे ... पांसे

संजोयण तीसा च भाग सत्र हिया ॥ १०१ ॥ इति पाठंतरा ॥ पणसठी निसढं मिय ॥ डलि

संजोयणातीसा ३ नागसहस्सिया ॥ घाइ विघावेतरा ॥

अंतरं ॥ वंदा चंदस्स लरकइगं ॥ ५५ ॥ जोजाव लरकाइं विठ्ठो सागरीय दीवे

सूर्यमंडलानि १८४ संष्या

चंद्रमंडलानिः संष्या १५

लवणे चंद्रमंडलानि १०

लवणे सूर्यमंडला ११९

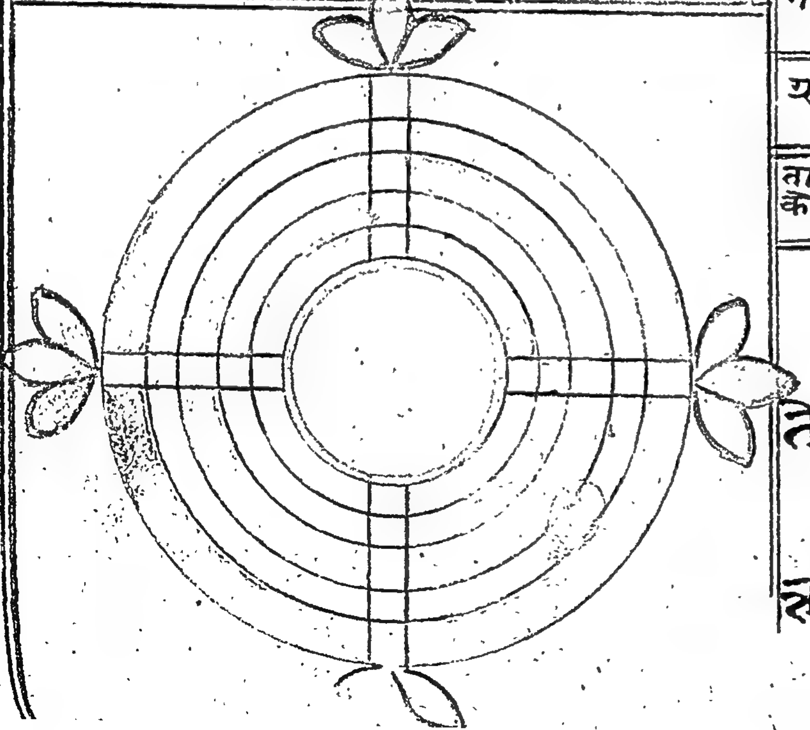
निषधपर्वते सूर्यमंडला ६५

निषधपर्वते चंद्रमंडला ५

चंद्रमंडल अंतरालियोजनः ३५

सूर्यमंडलांतरालि जोजन २

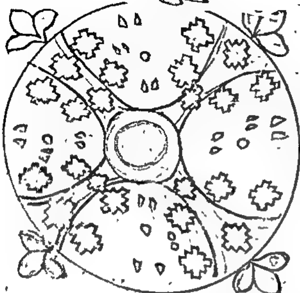
नक्षत्रनामांमंडलानि मध्य मांमंडलानि षध पर्वते मांमंडला ८ समुद्रे समुद्रे चौदमानी मांहि समी पिजाणवी ॥

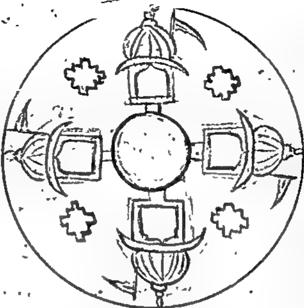



| दीपसमुद्र | जंबूद्वीपे | लवणासमुद्रे | धातकीखंडे | कालोदधि | पुष्करार्द्धे |
|---|---|---|---|---|---|
| चंद्रःसूर्य | २चंद्र२सूर्य | ४चंद्र४सूर्य | १२चंद्र१२सूर्य | ४२चंद्र४२सूर्य | ७२चंद्र७२सूर्य |
| नक्षत्र | ५६नक्षत्र | ११२नक्षत्र | ३३६नक्षत्र | ११७६नक्षत्र | २०१६नक्षत्र |
| ग्रह | १७६ग्रह | ३५२ग्रह | १०५६ग्रह | ३६९६ग्रह | ६३३६ग्रह |
| तारकाणं कोटाकोटय | १३३९५० कोनाकोनि | २६७९०० कोनाकोनि | ८०३७०० कोनाकोनि | २८१२९५० कोनाकोनि | ८८२२१०० कोनाकोनि |

तेणपरंपंतीउ चउरुत्तरियाए वुड्ढीए।।१७ वाव

त्तरिसिंदाणं।वावत्तरिसूरियाणपंतीउ।पढमाए





डंति॥एपा॥एवंगढा

यणेविक्का नवरंक

वपास वत्रिणोतारा

तंवियंपयाहिणंता

ओनसयापरिक्रमंति॥एढाचउयालसयंधधपढमिहित्रियाए।पंतीएवंदसूराणं॥

॥ ९९ ॥ इक्कुरससेसजलही लवणो कालोय चरमवक्कमस्सा । पणपण्ण [illegible] ७०४ दस ।

००० जोयणसय तणुकमाथो वसेसेसु ॥ ९८ ॥ दो ससि दो रवि पढमे । दुगुणा लवणं ।

मि धाईयसंडे । बारससरि बारसरवि । तप्पभिइ निद्दिठ ससिरविणो ॥ ९९ ॥ तिगुणा पु

व्विल्लजुया । अणंतराणंतरंमि खित्तंमि । कालोए बायाला । बिसत्तरी पुक्खरद्धंमि ॥ ९७ ॥

दो ससि दो रवि पंती । एगंतरिया छसट्ठि संखाया । मेरुं पयाहिणंता । माणुसखित्ते परिय

पिंडा ॥ ७३ ॥ अरुणमंदिरआवासा ॥ अरुणानरकतचंदसूराय अन्नेवि एवमाई ॥ पसत्थ

वत्थूणजेनामा ॥ ७४ ॥ तंनामादीवुदही ॥ तिपडोयारायअरुणाई ॥ जंबूलव

णाईया पत्तेयंतेअसंखिज्जा ॥ ७५ ॥ ताणंतिमसूरवरा वभासजलदीपरंतुइक्कि

क्केदेवेनागेजक्खे भूएयसयंभूरमणेय ॥ ७६ ॥ वारुणवरखीरवरोघ

यंजइतिन्निनरसा ॥ कालोयपुक्करोदहिय ॥ सयंभूरमणोयउदगरसा

जिवा सोहम्मीईसाणे जहन्नठिईपलिअंमहिअं चा॥ण॥ दोसा

हि२सत्त२दस४चउदसपा सत्तरअयराइं जासाहस्सारो॥तप्प

२तउइक्किक्कं अहिअं जाणुत्तरे चउक्के॥ण॥इगतीससागराइं



रंसरो रदस्सदाराणविन्नेयं॥८१॥ल
णसमुद्रनोहारनोअन्तरोकह्यो॥ ॥हिवे

वणसमुद्दस्पदाराणं अंतराणं। अथ
लवणसमुद्रमेंणतालकलसछेह॥ योजन॥ हजार।
नीसंख्यालिपीथैछइ

कलसाउमाणमाहु॥ जोयणसहस्स
दसनउं। मूलेअवरिमूल अकीनुपवका। ऊंतिऊं छै। विस्तार वि स्तारछइ। मध्यभाग लाखयो

दसगं।मूलेउवरिंवट्ठे।विछिन्ना।मज्झेस
जननोविस्तार छै॥ लाखयोजननोऊंकानोएकलाक जोजनविस्तीर्णकहवाईमे

यसहस्स।तेसियमेत्तंचउगाढा॥८२॥



अथलघुक कलशविस्तार || तजो यत || विष्कि विस्तारछै || लघुकी मु षकोजाय गा || एकहजारयोजननामध्यभागवि स्तारछै || एकहजारयोजनऊंडाछै || दशयोजननीठीकरीनउद

जोयणसयविछिन्ना ।मूलेउवरिंदससयाणिमज्झंमि। उगाढायसहस्सं दशजोयणयार

॥ हिवइंलवणसमुद्रमाहिविचलइस्थानकि दससहस्सजोयणपिहुलपणइछइंवक्रवालकहतांस कट अथवारछतेहनउपईऽमांविचालताजिमविचितलइं इमिकाश्रमीकइं बिहुपासइश्रमीकइं तिमपं चाणंसहस्सजगतीथिकीजईयइ धावकीपंडनापासिथिकां पंचाणंसहस्सयोजनजंबूद्वीपनणीश्रा यइविचालइ१० दससहस्सजोयणऊंचाईभूमिकाछइं बिहुपासेजिमश्रमीस्त्रीतिकइ तिमतिहांनीति छइ तिहांथीनीतिनइंकाछइथका दससहस्सजोयणदिगियांछुवइ पिहुलपणदससहस्सयोज

तेहनइरछस्वक्रवाल इसउनामकहियइं तेरछवक्रवालनइविचिपातालकलसनामुषछइं एक कलशपूर्वदिशि एकदक्षिणदिशिछै एकपश्चिमदिशि एकउत्तरदिशि इमच्यारिवडाकलशविस्ता रयंत्रमइ हिवइलघुकलशनीवातकहे तेरछवक्रवालमांहि बिहुंकलशानइअांतरइ लघुकल शछइ तेकेतलाछइ सातसहस्रआठसेचउरासी ७८८४ एतलाजाणिवा वडाकलसनाप्रमाणपा छइसउमइलागइउबाजाणिवा तेरछवक्रवालतेहमांहिऽलघलीथाइरइछइ रछस्वक्रवालमांहि वडापातालकलसनउ मुषनोस्थानकमूकीथाकतीरछस्वक्रवालनीभूमिकाइदेश लघुनापाताल कलशछइ संक्षेपइजीवाभिगमणथीकधरीलिष्योछइ॥ || लछइ (५४) श्रीरपिणपातालकलशछै

सेउंडा॥छ्यु॥अन्नेवियपायाला

णेकरतांजिवारेतेपल्यनिर्लेपजाइं तिवारेंबादरक्षेत्रपल्योपमनाकालथकी असंख्यातगुण अधिकतेकालप्रमाणजां तेसूक्ष्मक्षेत्रपल्योपमजाणवो २ तेदसकोडाकोडपल्योपमेएकसू क्ष्मक्षेत्रसागरोपमजाणवो २ इणइक्षेत्रपल्योपमसागरोपमेकरीद्रष्टिवादांगमांहे द्रव्यप्रमाण जीवाजीवादिकनवतत्वनाभावपदार्थमापीइ एवंपल्योपमसागरोपमानाभेदकह्याएव नीजीवसमासस्त्रअर्थलिपाहे विशेषअर्थथकीसमझवोतइसमकवाए॥

पहिलोद्वीपएकलाखयोजनव मानमडे || दूणाजो तेवेढिने ते द्विगुणविस्तारे हे तेपहिलो || पढमोक प्रथम जंबूद्वीप जंबूद्वीपपहिलोनाम || सर्वछेहलो रमणनाम | उदधि ६ || एलोद्वीप ...

पढमोजोयणलरकं । वट्टोतंवेढिउंठियासेसा। पढमोजंबुद्दीवो सयंभूरमणोदहीचरम।

द्वीपसमुद्रनानामकहेछे जंबूद्वी धातकी पुष्करवरद्वीप १ २ ३ || वारुणीद्वी ४ || क्षीरद्वीप ५ || घृतद्वीप ६ | क्षोदतेइक्षु रसनामद्वीप ७ || नंदिसरद्वीप ८ || अरुणद्वीप ९

मो॥७९॥ जंबूधाई२ पुक्खर३ वारुणि४ खीर५ घय६ खोय७ नंदिसरा८। अरुण

अरुणद्वीप१० || कुंडलद्वीप११ || संखद्वीप १२ || रुचकद्वीप १३ || भुजगद्वीप १४ || कुसद्वी १५ | कौंचद्वीप १६ ए ब्रह्मद्वीपइ

णरुणवाट कुंडल११ संख१२ रुयग१३ भुयग१४ कुस१५ कुंच१६॥८०॥ पढमेजंबु

लवणसमुद्रहै || वी. तकीष [illegible] षिसमु छेपाणी | आगेलाष क्षरवर || द्वीपंतर [illegible] || [illegible] ||

णीजलद्वी। वीएकालोयवुरकराईसु। द्वीवसुकुंतिजलरा [illegible] ||

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ जंबूद्वीपप्रमाण | १००००० एक लाष | १ लवणसमुद्रप्रमाण | २००००० लाष२ |
| २ धातकीखंडप्रमाण | ४००००० लाषच्यार | २ कालोदधिसमुद्रप्रमाण | ८००००० लाषआठ |
| ३ पुष्करद्वीपप्रमाण | १६००००० लाष१६ | ३ पुष्करवरसमुद्रप्रमाण | ३२००००० लाष३२ |
| ४ वारुणिवरद्वीपप्रमाण | ६४००००० लाष६४ | ४ वारुणिवरसमुद्रप्रमाण | १२८००००० लाष१२८ |
| ५ क्षीरवरद्वीपप्रमाण | २५६००००० लाष२५६ | ५ क्षीरवरसमुद्रप्रमाण | ५१२००००० लाष५१२ |
| ६ घृतवरद्वीपप्रमाण | १०२४००००० लाष१०२४ | ६ घृतवरसमुद्रप्रमाण | २०४८००००० लाष२०४८ |
| ७ इक्षुवरद्वीपप्रमाण | ४०९६००००० लाष४०९६ | ७ इक्षुवरसमुद्रप्रमाण | ८१९२००००० लाष८१९२ |
| ८ नंदीश्वरद्वीपप्रमाण | १६३८४००००० लाष१६३८४ | ८ नंदीश्वरसमुद्रप्रमाण | ३२७६८००००० लाष३२७६८ |
| ९ अरुणवरद्वीपप्रमाण | ६५५३६००००० लाष६५५३६ | ९ अरुणवरसमुद्रप्रमाण | १३१०७२००००० लाष१३१०७२ |
| १० कुंडलद्वीपप्रमाण | २६२१४४००००० लाष२६२१४४ | १० कुंडलसमुद्रप्रमाण | ५२४२८८००००० लाष५२४२८८ |
| ११ रुचकद्वीपप्रमाण | १०४८५७६००००० लाष१०४८५७६ | ११ रुचकसमुद्रप्रमाण | २०९७१५२००००० लाष२०९७१५२ |

[illegible]

गेकरतांजिवारेइतेपल्योनलपक्काइ तिवारेइबादरक्षेत्रपल्योपमनाकालथकी असंख्यातगुण
इ अधिकतेकालडमाणक्के तेसूक्ष्मक्षेत्रपल्योपमकहइ२ तेदसकोडाकोडपल्योपमेएकसू
क्ष्मक्षेत्रसागरोपमकहइ२ इणइक्षेत्रपल्योपमसागरोपमेकरीवादरांगीमांहे द्रव्यप्रमाण
जीवाजीवादिकनवतत्वनाभावपदार्थमापीइ एवंपल्योपमसागरोपमानाद्भेदकह्याएव
लीजीवसमाससूत्रवृत्तिमांहे विशेषअर्थथकीसमझवेलइसमझवा॥

पहिलोद्वीपएकलाखयोजनवृत्त मानकहइ ॥ बीजाजो तेवेढिउं ते थितर तेपहिलो तेहे दिसेवीतीने साथे त्रिनाम ॥ पहमोकः प्रथम जंबूद्वीपक जंबूद्वीपएहवोनाम ॥ अनेअर्योन्तरमणनामा ॥ उदधिसमु द्र ॥ एकेकलो अर्द्धराज

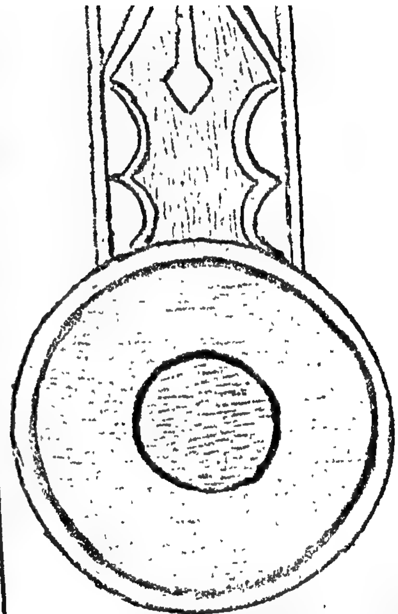
पढमोजोयणलक्खं। वट्टोतंवेढिउंठियासेसा।पढमोजंबुद्दीवो।सयंभूरमणोदहीचर॥

हिवेकेतलाइकद्वीपनानामकहेछे ॥ जंबूद्वी १ धातकी खंड २ पुक्खरवरद्वीप ३ ॥ वारुणीद्वी ४ ॥ क्षीरद्वीप ५ ॥ घृतद्वीप ६ ॥ क्षोदतेइक्षुरसनामद्वीप ७ ॥ नंदिसरद्वीप ८ ॥ अरुणद्वीप ९

मो॥७९॥ जंबू१धाई२पुक्खर३। वारुणिव४खीर५घय६खोय७नंदिसरा८। अरुण

रुणद्वीप१० ॥ कुंडलद्वीप११ ॥ संखद्वीप १२ ॥ रुचकद्वीप १३ ॥ भुजगद्वीप १४ ॥ कुसद्वी १५ । कौंचद्वीप १६ ॥ प्रथमद्वीपद

९ रुणवाय१० कुंडल११ संख१२ रुयग१३ भुयग१४ कुसकुंचा१६॥८०॥पढमेलव॥



तेपहिलापल्यथकीएकएकवालाग्रका
ढतां तेपल्यनिर्लेपकुं२ संष्यातरकाल२
तिवारेवादरअद्धापल्योपम१ तेदसको
डाकोडिपल्योपमेवादर१ अद्धासागरो
पम२ तिसोसोवरसेएकं२ वालाग्रना।
असंष्यातापंडिकरीनेकाढताजिवार२
तेनिर्लेपकुं२ असंष्यातकाल२ तिवारे
एसूक्ष्मअद्धापल्योपम१ तेदसकोडा।
कोडिपल्योपमेएकसूक्ष्मअद्धासागरोपम
२ इसीकरीउत्सर्प्पिणीकाल१ अनंताउ पुद्गलपरावर्त्तकाल २ देव१ मनुष्य२ ति
र्यंच३ नारकीं४ एहनीकर्मस्थितिकायस्थितिमापवी२ तथा वलीपाछिलीपर२
तेपल्यएकवालाग्रआस्पर्श्याछे आकासतेहनेसमय२ एकएकएकएकअंशोकर२ इकरीतिपल्यनिर्लेपकुं२ अ
संष्याताउत्सर्प्पिणीअवसर्प्पिणीकाल२ करी तेवादरक्षेत्रपल्योपम१ तेदसकोडाकोडिपल्योप
मेवादरक्षेत्रसागरोपम१ तिमवलीतेपल्यएकवालाग्रनाअसंष्यातारखंडकरी तेसाक्षेत्रस्पोएहवे
पल्यतिणइवालाग्रइफरस्याअनइअणफरस्याछे आकाशप्रदेश तेहनइसमय२ एकएक

२ तवलापकर। वजानेदं करीजइ [illegible] वादर१भेद सूक्ष्म२भेद तेकिम लांबो
हिजो उस्सेद अंगुले करीनीपनुं योजनप्रमाण वृत्तपणाथी तेहनी परधि त्रियोजन अने एकयो
कोइककवनीनागकणा एहवो एपल्य कीजे तेमांहि एकदिनथी मांडी ७ दिनलगें जण्या जे जुगलिया
कनामाथानावालनाखंड करी ते साथइ तेपल्य भरीजइ वृली पणि जिम ते वालाग्र अग्निथी न रवले
स्युनलीजइ वायराथी बीजइ नही तिवारपछी ते समय२ प्रति एकएक वालाग्र काढतां जित
लइ तेपल्य वालीथाइ तितरइ कालें संख्याता समयप्रमाण वादर उद्धारपल्योपम १ तेदस
कोडिपल्योपमे वादर उद्धारसागरोपम १ मोटी समुद्रनी उपमाठइ मोटापणाथकी तेमाटेकाग
हिइवइ वादर१पलिपल्योपमकरके तेसूक्ष्मसमुद्रजाणवा माटइ पणि वादरपल्योपमा सागरो
किमइ कांमि आवइ नही तिमवली एकर वालाग्रना असंख्याता खंड करी पाछिलीपरि तेपल्यन
पणि तेवालाग्रनाखंड तेइमथकी उत्सेकइ असंतस्थूल लोचननो धणी ब्रह्मस्नाये असंतसूक्ष्म
जलइ अवतइ नेत्रेकरी दिखवइ तेदथकी पणि असंख्यातमइ भागइ तेखंड १ द्वीत्रथकी सूक्ष्मनिगो
तुंशरीर तेथी असंख्यातेगुणइ [illegible] प्रमाण तिके वालाग्र समयपतइ एकएकखंड काढतां सघलो नि
ापजइ कालथकी संख्याता वरसनी कोडि वरसगये थके तेसूक्ष्मउद्धारपल्योपम २ तेदसकोडाकोडिए
ल्योपमे सूक्ष्मउद्धारसागरोपम एसूक्ष्मउद्धारसागरोपमकरी द्वीपसमुद्र मापवा १ वलीसोसो वरसगये थके १९







निषधपर्वतना कूट २५० योजन पिहुला ताराथ्यो जनश्रेज गा कूटांथकी र ह ३ ७ ५

नीलवंतकूट २५० योजन पिहुला ताराथ्यो जनश्रलगा कूटांथकी र ह ३॥

|| चंद्रमानो हमेसा अनित्य नक्षत्र क पश्चर है || अनंतसूर्य हमेसा उष्य नक्षत्र पनिर है तिहां दिन हमेसा यर्ह ह रात्रि हमेसा घटी ४५ ३ ||

जोया। चंदा अभिइ जुत्ता। सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं

(१७) द्विवे सर्व द्वीप समुद्र प्रमाण कहेछे लिलि सागरोपम ना तेहमां ईजेउ द्वारसागरोपम बे ज्ञा अढी सई | तेहना जेतला समय छे | जंबूद्वीपद्वीते वलयाकार द्विप अने समुद्र प्रमाण सघला इक ३ ६

॥१७॥ उद्धारसागरदुगे। सड्ढे समएहिं तुल्लदीवुदही

द्वीपथी समुद्र विस्तु लोसमुद्रथी द्वीप विमणो | विस्तारथकी छइ || पिण ते द्वीप समुद्र किमछे दाथ नावल याचूडीने आकार छे सर्व द्वीप समुद्र तिलछे प्रथम जंबूद्वीप ते वर्जी ते वलयाका र जाणी (१८)

दुगुणा दुगुण पवित्थर। वलयागारा पढम वज्जं ॥१८॥

॥ अथ उद्धारादि पल्योपमस्या पना अंतनापालीनो उपमाछे ये का लना प्रमाणनइ तेपल्योपम कहीइं ते पल्य ३ जेद उद्धार पल्योपम १ अ द्धापल्योपम २ क्षेत्रपल्योपम ३ ते किम येवालाग्रनाखंडनइ समय समय उतें ते हसंवेथि उं ते पल्योपम ते उद्धार पल्योपम १ अद्धा ते का ल नाम ते अस्मा वइवालाग्र नो खंड क्वाढिइं उसे केसो वरसते अद्धा पल्योपम २ क्षेत्र ते आकाश प्रदेस रूप तिण करी जाणवा योग पते क्षेत्र

॥ अनेसूर्यदिमसाउष्णनक्षत्रपरिदं तिहांदिनेहमेसांवरहरात्रिहमेसां घटी२०॥ ॥ चंद्रमाशीतहमेसाअभिजनक्षत्रक परेरहे ॥ ...तेणपद्वीपसमायइये...द्वीपनुंनाम ॥

जोया। चंदा अभिइ जुत्ता। सूरा उणकंति उस्सेहिं

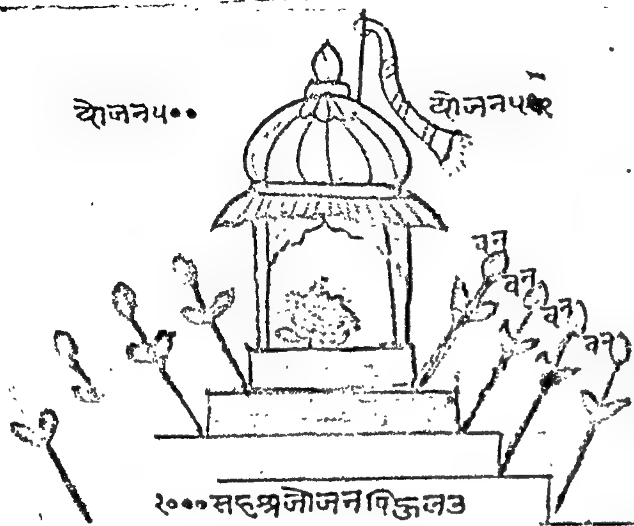
(१६) हिवेसर्वद्वीपसमुद्रप्रमाणकहेछे। तेहनाजेतला समयहोय। तुल्यदीवुदहीतेवरोवरि द्विपअनेसमुद्रनुप्रमाण सघलाइजइ उद्धारसागरोपमनातेहमांहिजेउ द्धारसागरोपमवेडणअढीसहे

॥१७॥ उद्धारसागरदुगे। सड्ढे समएहिं तुल्लदीवुदही

(१८) दीपथीसमुद्रविगु णोसमुद्रथीद्वीप विगणो। विस्तारथकी जइ। विणितेद्वीपसमुद्रकिमछेवलयनावल यनीपरेआकारछेसर्वद्वीपसमुद्र तिणतेप्रथमजंबूद्वीपतेवरजीतेवलयाका रनथी

दुगुणादुगुणपवित्थर। वलयागारा पढमवज्जं ॥१८॥

॥ अथ उद्धारादिपल्योपमस्थापना धाननापालीनी उपमाछे एका लनाप्रमाणनइं तेपल्योपमकहीइं तेपल्य ३ भेद उद्धारपल्योपम १ अ द्धापल्योपम २ क्षेत्रपल्योपम ३ तेकिम येवाल्याग्रनाखंडनइ समय समयग्रहते तेहसंवेखिउ जेपल्योपमते उद्धारपल्योपम १ अद्धातेका लनाम तेवरसावरसवालाग्रनोखंडनकाढिइं उत्पेकेसोवरसते अद्धा पल्योपम २ क्षेत्रतेआकाशप्रदेशस्वरूपतिणकरीजाणवायोगपतेक्षेत्र






निषधपर्वतनाकूट२५० योजनपिंडलातारापयोजनऊंचा कूटांथकीरह्या

नीलव २५० योजन उंचातारापयोजनअलगा कूटांथकीरह्या॥

| | |
|---|---|
| एकरथी उनावलीगति | केतेक एक एकथी करुढि चेत तेक हेत इ |
| चंद्रथी सूर्य गति उतावली | सूर्यथी ग्रहनी गति उतावली |
| सूर्य थकी ग्रहनी गति उतावली | ताराथी अधिक ऋद्धि नक्षत्रनी |
| ग्रहथकी तारानी गति उतावली | नक्षत्र थकी अधिक ग्रहनी ऋद्धि |
| नक्षत्र थकी तारानी गति उतावली | ग्रहथी अधिक ऋद्धि सूर्यनी |
| इम एकथी बीजानी गति करइ | सूर्यथकी अधिक ऋद्धि चंद्रमानी |

(७४) हिवे अढीद्वीप बाहिर मानुषी शेर नाम जे पर्वत तिहांथी बाहिर || चंद्रमा अने सूर्य सूर्य अने चंद्रमा रहे मांहो मांहें अंतरे

पंचा॥७४॥ माणुस नगाउ बाहिं। चंदा सूरस्स सूर रवे

क्लिक्लो || योयण एक जोजन पचास सहस्र || एतला एतला अंतरे फिरे तेह कहे छे

दस्स। जोयण सहसा पन्नास। अणगा अंतरं दि

(७५) चंद्रमा चंद्रमाने सूर्य सूर्य ने मांहो मांहे एसा दिवस नाम एक लाख जोजन अधिक || एक लाख योजननो अंतर

णं॥७५॥ ससि ससि रवि रवि साहिअ। जोयणलक्खे

अंतर बई सूर्य चंद्रमा मंडलने अधिक क्षेत्र || तेह पछे ए चंद्रमा जन ना हिवे सूर्य ना विमान छे || अने चंद्र मंडल ने अंतरे दिवि सूर्य मंडल छे दीपता

ण अंतरं होइ। रवि अंतरिआ ससिणो। ससि अंतरिआ र

रहा तेजवंत सो भे छे (७६) बाहिर मानुषोत्तर पर्वतथकी || चंद्रमा सूर्य अवस्थित अने चलित नथी

वे दित्ता॥७६॥ बहि दियाउ माणुस नगाउ बाहिर चंदा सूरा अवठिअ

| | | | |
|---|---|---|---|
| व्याघातअंतर | उत्कृष्ठी | योजन | १२२४२ |
| व्याघात अंतर | उत्कृष्ट | योजन | २६६ |
| व्याघात विना अंतर | उत्कृष्ट | योजन | गाउ २ |
| व्याघात विना अंतर | उत्कृष्ट | योजन | धनुष ५०० |



योजन५००          चंद्रमानो

जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिनाम ॥

॥ अथैसमभूतलथकी दुवै नवसेजोय
नलगे अनेवलीसमभूतलथकी ७ ए०
उर्त नवसयजोयणलगैएतलेअठारै
सेजोजनलगेतियग्लोककहिइनव
सेजोजनहेठै अधोलोकजाणिवो न
वसयजोयणउपरेउर्द्धलोककहीइ

एतलेतिर्यग्लोकजाणिवु० एकचंद
मानाविमानवाहकदेवता १६ हजार
जाणवा एकसूर्यनाविमानवाहकदेव
ताजाणवा

स्पु। अनुक्रमे हणजा। इमजाण ६ ३ । अनेजघन्य पूर्णथी पूर्ण चंद्र थी वइमासमही गृहणजइ ॥७४॥ चंद्रमाने तथा २ ॥ सूर्य ने २ ॥ विमाने । लोकदृते अहल । उर्धन वली। कइ।

उक्कमेण जहन्नउ मासउ क्केण ॥७५॥ ससिणो वा रविणो वा। जइया गहणं तु होइ ए

एकातंप ति। तिवारे। तेसर्वचंद्रमा तथा सूर्यसूर्य। तेहनाथ देखाजा णवा। अपलापयोजनमंत्र्यपली कमाहिअनेमनुष्यलोकादि रहणनहो ॥७५॥ हिवैतारेतारे उत्कृष्ठअंतर कहे छे एकतारानेअनेराजीजातारा। मांहोमा हिं जंबूद्वीप। मांहेउत

गस्स। तइआ तेसव्वेसिं हुणंते अं पमाण अलोए ॥७६॥ तारस्सय तारस्सय। जंबुद्दीवंमि

कृष्ठअंतरकहे छे वाघातइ ॥ वारहजारयोजनवलीऊपरि ॥ दोयसयजोजन। चेवली अयय को। ऊपरबेताली स ॥७६॥ निषधपर्वते। नीलवंतपर्व

अंतरं उक्कोसं। बारस जोयणसहस्सा। दुन्नि सयाचेव बयाला ॥७७॥ निसढोय नील

तर ॥ च्यारसइ ४०० योजनऊंचा छइ। तेऊपरि ५०० योजनऊंचा कूट छइ। तेहुकूट २५० योजनऊपरिपिऊलाछै तेहथी विकलाउ आघूरियो अंतर गतारा फिरइ छे ते माटे ॥ २६६ योजन जघन्यआघात इअंतर बंजाणवु ॥७७॥

वंतो। चत्तारिसय उच्च पंचसयं कूडा। अद्धं उवरि रिक्खा ॥ चरंति उभयट्ठ वाहाए ॥७८॥

एजघन्यअंतरव्याघातविसइ वानहियो जनरइ हयोजन ॥ जघन्यअंतरु। एदवइ निवली। किवार इहोइ। जघन्यव्याघा तइ रजाण छै ॥ अनेव्याघातकोइनडू रतिहो। गुरुउत कृष्टअंतरु। लघुजघ न्य। बिगाऊउत्कृष्टअंतर सर्व। जघन्यअंतरतारे तारे पांचसइधनुष शुघतनइ

गवहारो असया। जहन्नमेयं तु होइ वाघाए। निव्वाघाए गुरुलहू दोगाउ धणुसया



हरविसिभ्याइविणिजवेअगद्धावसिग्घयरा। तत्तोनरय गाउ। नरयकेकंतिताराउ॥८६॥

प्पहिया एतारा। नरकसारकवुतवंदिहिया। नरकरोकंतिगदागदिदिहसंतवंदं

॥८७॥ किन्हराकविमाणं। निवेवंदेणदोइ आविरदिदिआ वंवरंगुलमप्पं। दिणकंद।

समरेवरइ॥८८॥ विक्खंभेआयाम जोयणमेगं तितिगुणं परिहि। अद्धाइ धणसया

जविमाणाणंवाहल्लं॥८९॥ ससिसूराणं गहणं सहविरसाडयाजवरिश्चिदं तक्को

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] २९ | [illegible] | तिल ३१ | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] ४० | [illegible] | [illegible] | [illegible] ४३ | [illegible] ४४ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] ५२ | [illegible] ५३ | [illegible] ५४ | [illegible] ५५ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] ६५ | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] ७२ | [illegible] | [illegible] ७४ | [illegible] ७५ | [illegible] ७६ | [illegible] ७७ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] ८३ | राजा ८४ | [illegible] ८५ | [illegible] ८६ | [illegible] ८७ | [illegible] ८८ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | | | [illegible] | | | |

अगासीयहसयो || नद्दयअग्नावीसअयनं दिकं प्रयत

||इत्र्यागदअगासीनरकनअडवी

|| तारानीकोडिकेतकीकोडाकोडि || बासहिस्सा

सं।ताराणकोडिकोडीणं।बासठि

रंकोडाकोडिकपरिवसे कोडाकोडिर || कपरिपंचोसरकोडाकोडि एतलानाराएसर्वएकचंडमा नो

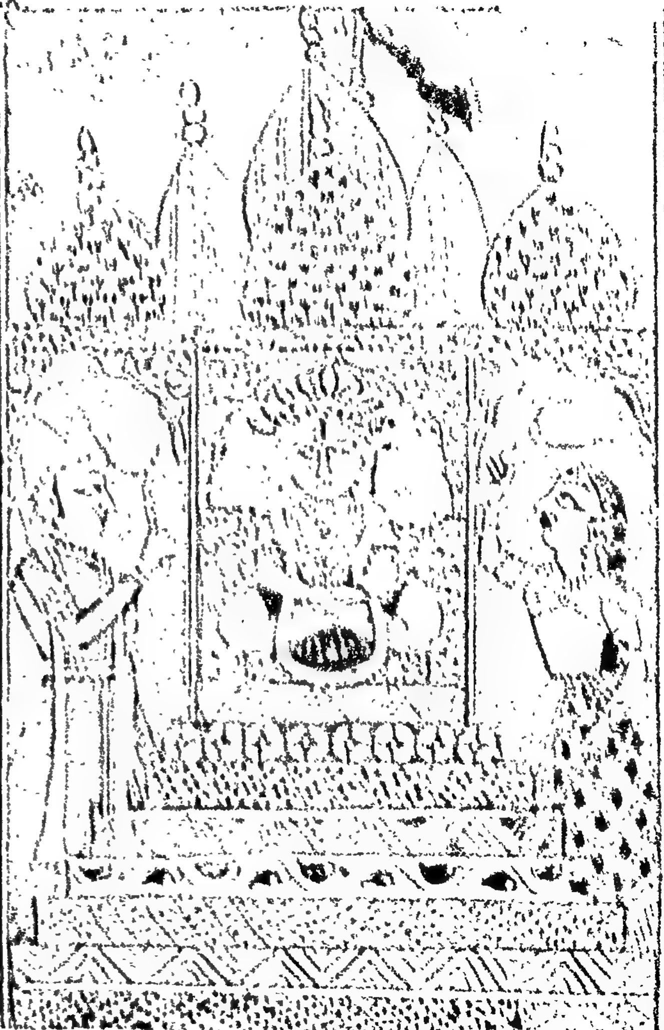
सहस्सनवसया।पणहत्तरिएक।

सैगपरिवारकस्रो (१४) दिवैहहंविसंवाहहस्सेवे कोडाकोडिएकचीतेको

सिसिसिले।।१४।।कोडाकोडीस

[illegible] || [illegible] || [illegible] || [illegible] || [illegible] (१५) चंद्रमा श्री

[illegible]अंगुलमानेनताराणं।।१५।।चंदो



तिलकऊरंसिघां॑विम्पाणवद्दमकमेणेसिं ॥ ८९ ॥

सोलसरहसोलसरहश्रहठच्चअ॥ दोरसुरसहस्सा॥

पुरीयदाहिणाओ॥ पश्चिमउत्तरसीहा॥ दक्षीवसहाहं॥

याकमसो॥ ८२॥ ओरखंकुतिसीहा॥ दाहिणेअंजराम

हाकायाण॥ छिमिएंतसहा॥ उरगाउणचत्तरेपासे॥

यारसजोइसविमाण। वितरनगरेहिंतो। संखेज्जगुणाइमेकेति॥५७॥ ताइंविमाणाइं

[illegible]

पुण। सव्वाइंकेतिफालिहमयाइं॥ दगफालियमयाउण। लवणेजेजोइसविमाण

[illegible]

॥५८॥ जोइसणिगसट्ठिन्नागाहा। अप्फलपट्टनयालधणगाउ२इं। संपावेदायविमाण

[illegible]

याम। विक्खंडा अद्धमुकर॥५९॥ पणयालरकजोयण। नरखित्तंतम्मिसयाजमि

[illegible]

ग। नरखित्ताउवहिं पुण। अद्धपमाणाठियानिच्चं॥६०॥ ससिरविगहनरकत्ता तारोउं ३

तिअरपि मारयो जनेबुध । कमसो इमअत्रअनुक्रमेत्रा मेविमितिनियोजनेमाक्र छे हस्पतिरमंगलइत्रानीश्वरधकं चालइ ॥५५॥ इक्कारस इग्यार । जोजनसयसेयोजन ११०० योजन ॥ ... योजन ॥ अनेइग्यारयो जनेअधिक ॥ कमसोअनुक्रम मइ

# चउदकमसोतियाचउरसु ॥५५॥ एकारसजोयणसयं इगवीसिकारसाहियकमसो

मेरुअलो मेरुपर्वतथीअलगो ११२१ योजन अलगा अनेअलोकथी ११११ योजनअवरहते तिवारदेहेवइ ॥ जोतिषचक्रचंद्रसूर्यादिक मेरुपर्वतथीअलगो ११२१ यो जनव्हालेछेवइ ॥५६॥ अधजोतिषीविमानक हेछेअर्धकविट्ठ आधा कोठनेआकारछइ ॥ स्फटिकरत्नमाअजला

# मेरु ११२१ अलोगाबाहिं ११११ जोइसचक्कं चरइ ठाइ ॥५६॥ अद्धकविट्ठागारा फलिहम

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेरमध्येसमभूतलथी | ताराविमान | सूर्यविमान १०योजनउंचो | चंद्रविमान ८०योजनउंचो | नक्षत्रविमा न४योजन | बुधविमान ४योजनउं. | शुक्रविमा न३योजन | तिथीगुरुवि मानउयोज नउं. | तिथीमंगल विमानउयो जनउं. | तथीशनिवि मानउजोजन उं. |
| तहथीताराजिणीइं योजन | ७९० जोयन तारासमभूत लथी | ८०० योजन समभूतल थीसूर्य | ८८० योयन समभूतल थीचंद | ८८४ योजन समभूतलथी नक्षत्र | ८८८ योज नसमभूत लथीबुध | ८९१ योजन समभूतल थीशुक्र | ८९४ योजन समभूतल थीगुरु | ८९७ योज नसमभूतल थीमंगल | ९०० योजन समभूतलथी शनिछे |

उमाछे ७९० योजन । मेरुइमाथीक जानचरवे ॥ तेमांहिसर्वनिच रथीहेमतिनिचर लानचरवे ॥ सर्वनिचाअथीक परिक्यातिनचार वइ ॥ सर्वनिचाअथीछाहि रथेलासेमूलकहे चमांचारवइ ॥ सर्वनिचाचर्चायेअ मीचनचाअआथा थीसमानीचार ॥५७॥ दिवसर्वनोअनुक्रम कहेछे तारारसूर्यरस्वे

रउमार्थ | लपउमाथाक | तमाहिसवनद्द | सवनद्दत्रथाकि | सवनद्दत्रथाहि | सवनद्दचवपत्र | हिरदाक... कहेवे
७००योज | चानद्दत्रवे || त्रथीहवलिज्ञर | १रिस्थातिनद्दत्र | रसैपासेपूलनद्द | नीचनद्दत्रअखा
न | लानद्दत्रवे | ७६ | त्रनीचारवद | वीसमानीचार | तारा२ दूरिरिवंदमाभ

रैसमीयरिके सु॥ अदसरणिसाडउवरि वहे मूलो न्पतरे अनडीपधातारदविवंदरि

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| गाभरि | नर२ | अश्व३ | गज४ | रथ५ | सुजट६ | वृषभ७ |
| | | | | | | |
| | | | | | | |

पर | तेउपर युद५ | तेकपर छुक६ | तेउपर टहस्पति७ | तेकपर मंगल८ | तेउपरशनि श्चरनीमारे ॥ त्रिवे७त्रतुक्रमेकदेसातसय तेक७२०योजनताराबे ॥ इसजोज नेसर्व ॥ तेकपरिव्हयो जनेचंद्रमाबे ॥ तेकपरि चारजोज नेनक्षत्र

रु॥ उद्दंसु ब्राजीवमंगलाप्पणीया। सगसयं नेउयां॥ ए०० दशारण अभ्यीक्रूप०। चउथ

रथरा खजला छका ५ | अनेकरूप सुखकारक सुभट ६ | अतिवाया १६ अ नीकल ६ कटक | सर्वदेवतानीछ लीइंद्र लेहने || वैमानिकने || वसभ: दिश नवे || महिसायम म ईसरेसोमे || पातालनारसणहार भुवनपतीमंतरन २७६ ॥५०॥

रयंप मेडद्द आणियाणि सव्वइंदाणं वेमाणियाणं वसह महिसा अ अहो निवासीणं ॥४९॥

तेत्रीस० त्रायत्रिंशकदेव ताइज्यस्थानक || पर्षदातीनअंतर मध्यबाह्य ३ | चारदिशिमारलो कपाल || सर्वनै ७ कटक ७ सेनाका धिपति ७ || एसर्वदेवइंद्रनेसर्व-

तित्तीसतायतीसा परिससतिया लोगपाल चत्तारि आणियाणि सत्तसत्तय अणियाहिव

जवे ॥५१॥ नवरं पुनः विशेष व्यंतरना || ज्योतिषीनाइंद्रनैलोकपालत्यारन जवै || बलीमंतरइंद्रज्योतिषीने ३३

सव्वइंदाणं ॥५१॥ नवरं वितरजोइसा इंदाणनकं ति लोगपाला ओ तायत्तीसं सन्निहाणं पि

त्रायत्रिंशकदेवनानजवे ॥५२॥ हिवेज्योतिषीत्यारकहेछे सम भूतलतेमेरुनाकंदथकी आठ सयदेसेऊणाजेला || योजनना आठसलइ मातसेनेकर० योजनथकी || आरंभीमांडी ने || ऊपरि

साविय तेसिं नकुकंति ॥५२॥ सममूतलाओ अट्ठहिं दसूणजोयणसएहिं आरब्भ उवरि

दसीअधिकयोजनतुरान एतलै ११० योजनतेतलो | [illegible] | तिरछेतिर है छै | ज्योतिषीनाकारक तिमाहे ज्योतिषी एत लेसर्वज्योतिषीर... ॥५३॥ तिहांतारा छकी ऊ | सूर्यक परि | दसजोयणद स० योजने ऊंचो छै | असीजोनआगलि तेसूर्यऊपरिससीय

रिदसुत्तरजोयणसयंमि चिट्ठंति जोइसिया ॥५३॥ तत्थ रवी दसजोयण असीई तदुव

॥ मैथीजनमा दुखै ॥

| | |
|---|---|
| | मृत्विंद्र ‖ योजन७ |
| ९चकं५ ... | पद्यकं८ ‖ पंचकंइ१५ |
| म ... १४ | ‖ कालकाय ‖ ...इ१३ |
| ...तिसिन्द्र इ१२ | ‖ पुण्यकंद ‖ ... ७इ११ |
| ...लेइ ...१० | ‖ कदंप ‖ ...इ९ |
| ...८ | ‖ ... ‖ २...इ८७ |
| ...६ | ... क...इ५५ |
| ...सामान्य | प्रणप: ...सामानिक४००० |
| ... | २ ...सर्वत्रैव |
| ...समहत्तरा | प्रणप ... ४००० |
| ...अंगरक्षा का१६००० | ...लीर अंगरक्षका१६००० |
| योजन१० | योजन१० |
| ...४०००... | ...अंगरक्षका१६०००... |
| ...८०००... | महोरग अतिकाय इ... |
| महापुरुष इ१२ | ...इ... सत्पुरुष इ११ |
| किंपुरुष इ१० | किंनर५ किंनरइ९ |
| ... | भीमइ७ |
| मालिभद्र इ६ | यक्ष३ पूर्णभद्रइ५ |
| ...इ४ | भूत२ सुरूपइ३ |
| महाकाल इ२ | ... कालइ१ |
| उत्तरश्रेणि | दक्षिणश्रेणि |
| ...जन१... | मध्यलोकविषै८००० |
| ...मृत्विंद्र | नेऊ वनपतय: संति. |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पिशाच१ | भू.२ | ३ | ४ | किंनर५ | किंपुरुष६ | ७ | गंधर्व८ |
| चिह्न | ... | ...इक्ष | खट्वांग | | चंप. | नाग | ...वद |
| श्याम वर्ण | ...ला | श्याम लवर्ण | श्वेतवर्ण | श्वेतवर्ण | श्वेतवर्ण | कृष्ण | कृष्ण |

महोरगनी भुगतिवंतमाहीकायानामनीसोमा आनै आसीमा दर्शनए तलेहि पतांकांड सूत्रांको
डर्द्धंभाए हिलीभुम्मा वाडि पंथ तेजिंहनाआनिकआन्रण ३॥ तिनउगांधर्व सोमाकारी वस्तु
दर्शनिरूपवंत नवोभुषती आकारमस्फरकारनजग्रूल्प मुकटहारनाधारक ८१७ जातिमू
लवंतरनी॥ ॥आठे निकायेरह इंद्रजाणवा तेमध्ये प्रथमनइंद्र दक्षिणदिशिनेउ इंद्र उत्तर
दिशिइ द्विवे दिशि ति दक्षि किंद्राणीलीनेते कहइ मेरुपर्वत नामिकामाहि २०हजार योजनउ
परिनवाणए ९९ सहस्रयोजनतेहनैं ति वारलेद समसहस्रयोजनमेरुनोकंदपिंडलोछैतेहनै
विषिप सहस्रएकपासिं सहस्रवीजे पासे तेतिकानेनिचआकल हेरामयसवृकगोस्तनाका
रिकहिवा दिवेतेसलिकणथकीसमभूतलकहवाइं आनेतेरुचकथकीपूर्वादियविदिशि
लेवी रत्नप्रभानोऊपरलो एकसहस्रयोजनतेहनुं एकसमयऊपरलो रहिवर्त्तुकीविति
ला ८०० योजनमांहि १६ व्यंतरेंद्र प्रथमआठनिकायनारहैछइं प्रथम आठ इंद्रदक्षिणदि
शिउ इंद्र उत्तरदक्षिणीदिशिएवं १६ जावादिवे आगलाएद इंद्र किहांरहैछइं तेकहैछै रत्ना
प्रभानुं ऊपरलो एकसो योजनतेहनादस योजन नउपरि ८० योजन हेठेमुकीतिवलावयो
जनमांहि वीजीउ निकायना १६ व्यंतरेंद्ररहैछै ए व्यंतरेंद्र ३२ रहिवानो विचारजाणवो॥ श्री

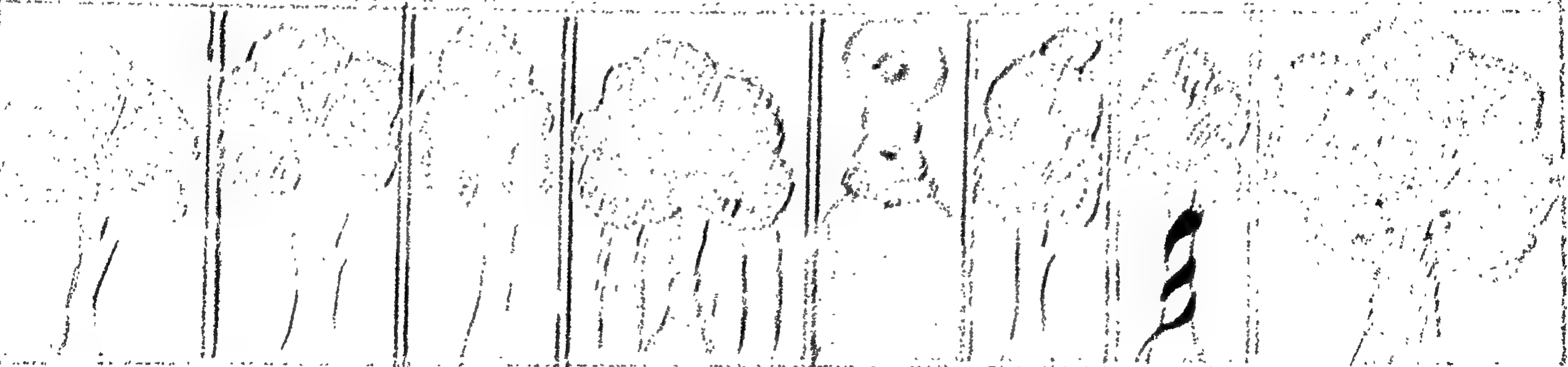
| | |
|---|---|
| पिशाच १६ प्रकारना | कूष्मांड१ पटक२ जोष३ आह्निक४ काल५ महाकाल६ चोक्ष७ अचोक्ष८ तालपिशाच९ मुखरपिशाच१० अधस्तारक११ |
| भूत ९ प्रकारना | सरूप१ प्रतिरूप२ अतिरूप३ भूतोत्तम४ स्कंदिक५ महास्कंदिक६ महावेग७ प्रतिवेग८ आकाशग९ |
| यक्ष १३ प्रकारना | पूर्णभद्र१ माणिभद्र२ श्वेतभद्र३ हरिभद्र४ सुमनोभद्र५ व्यतिपातकभद्र६ सुभद्र७ सर्वतोभद्र८ मनुष्ययक्ष९ धनाधिपति१० धनाहार११ रूपयक्ष१२ यक्षोत्तम१३ |
| राक्षस ७ प्रकारना | भीम१ महाभीम२ विघ्न३ विनायक४ जलराक्षस५ ब्रह्मराक्षस६ देवराक्षस७ |
| किंनर १० प्रकारना | किंनर१ किंपुरुष२ रूपपाल३ हृदयंगम४ रूपशाली५ अनिंदित६ किंनरोत्तम७ मनोरम८ रतिप्रिय९ रतिश्रेष्ठ१० |
| किंपुरुष प्रकार | पुरुष१ सत्पुरुष२ महापुरुष३ पुरुषवृषभ४ पुरुषोत्तम५ अतिपुरुष६ महादेव७ मरुत८ मेरुप्रभ९ यशस्वंत१० |
| महोरग १० प्रकारना | भुजग१ भोगशाली२ महाकाय३ अतिकाय४ स्कंधशाली५ मनोरम६ महावेग७ महेष्वक्ष८ मेरुकांत९ भास्वंत१० |
| गंधर्व १२ प्रकारना | हाहा१ हूहू२ तुंबरु३ नारद४ ऋषिवादिक५ भूतवादिक६ कादंब७ महाकादंब८ रैवत९ विश्वावसु१० गीतरति११ गीतयश१२ |

॥पिशाचव्यंतरनाथनुंअधिकरूपवंतसौम्यदर्शनगलविषेहस्तविषेरत्नने आभरणेसोभि
तः१ भूतरसरूपसौम्यमुखविलेपनउपसिचिवितर२ यक्षगंभीरबलनदर्शनविरोधथीमानोपेतशा
रेरक्तहाथपगतालुजीभहोठमुकटधारीअनेकरत्नसोभितर३ राक्षसभयदारौद्रदर्शनवीतांम्र
ग्लांवाहोठसुवर्णनाआभरणसोभितः४ किंनरसौम्यदर्शनमुखेअधिकरूपवंतमुकटसोभितप५
किंपुरुषाहृदयवाजनहंविषेअधिकसोभावंतमुखेअधिकतेजवंतअनेकआभरणयुक्त६

[illegible]

[illegible]

[illegible]



[illegible]

[illegible]

गुरुजादत्तामहिमगा विंतरपुणरुठविहा पिसायभूया तहा जरकारा रुग

राधकिंनरय किंपुरिसदहा महोरगा रुठ मायगंधवाण दाहिण उत्तरेण सोला

रसिंदमइंदा ॥१४॥ इंदनाम ॥ कालेय महाकाले य सुरूव पडिरूव पुन्नभद्दे य

तह चेव माणिभद्दे भीमे य तहा महाभीमे ॥१५॥ किंनरकिंपुरिसे सप्पुरिस महा

पुरिसतहय अइकाए महाकाए गीयरई गीयजसे

१०

महोरगश्री गुणतिवंत मोटीकाया नाथनीसो [illegible]

कलसञ्जोचिकप ५ | सीहवावि कट ६ | अश्वतेघोडा चुविक ७ || गज-हस्ती नोचिक | मयणमछ चिकर ९ | वर्द्धमा- संपुट [illegible] | असुराण असुरादिकदासनिका यने गुणसचिचक-मुकटमांहे चिकजाणवा | (२५)

तह कलसा | सीहह आसेय ७ | गय ८ मयर ९ वद्धमाणे १० | असुराईणं गुणि सुचिंधे || २१ ||

| चूडामणी १ | फणी २ | गरुड ३ | वज्र ४ | कलश ५ | सिंह ६ | अश्व ७ | हाथी ८ | मच्छ ९ | वर्द्धमान १० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

द्विवैएदनाव लीकहेकड || असुरनिकायनोरं गश्यमवर्ण || नागनिका यर | उदधिनि कायरु | दीपति वर्णोनोपी ह:तजल वर्ण | तदः निमवलीसु वर्णकुमारनाथ | दिसकुमा रनाप | स्तनितकुमा रनाथ | एतीनेदेवल नाधारीसवण पालोवा

|| दोहावली || असुराकाला र नागुर दहिर पंडुरा | तह सुवन्न [illegible] दिशि प [illegible] कणग

| | | |
|---|---|---|
| योजन | मृत | [illegible] |
| योजन ८० | मघप्तु | दिग्व २ जातु सामान्य [illegible] |
| योजन १० | मृत | दिक |
| योजन ८०० | मृअष्ठ | स्वच्छः [illegible] |
| योजन १०० | मृत | दिक |
| रत्नप्रभाया भूमिः [illegible] ९० [illegible] लक्ष | उर्ध्वः लोप [illegible] विमान [illegible] | योजन [illegible] विमान [illegible] ६६००० आगर |
| विमानलक्ष ९६ [illegible] न ३६ १९ सामानि ६ हजार ४ गरक्षक २४ हजार | वायुकुमार २९ | विमानलक्ष ५० इंद्र १७ वलभित सामानि ६ हजार ४ गरक्षक २४००० |
| विमानलक्ष ७६ इंद्र ६ सुगवाहन सामानि क ६ हजार ४ गरक्षक २४००० | दिक्कुमार २८ | विमानलक्ष ७० इंद्र १५ मितगति सामानि क ६००० ४ गरक्षक २४००० |
| विमानलक्ष ७६ इंद्र १४ जलप्रभ सामानि क ६ हजार ४ गरक्षक २४००० | उदधिकुमार २७ | विमानलक्ष ७० इंद्र १३ जलकांत सामानि क ६ हजार ४ गरक्षक २४००० |
| विमानलक्ष ७६ इंद्र १२ विशिष्ठ सामानि क ६ हजार ४ गरक्षक २४००० | द्वीपकुमार २६ | विमानलक्ष ७० इंद्र ११ पूर्ण सामानि क ६ हजार ४ गरक्षक २४००० |
| विमानलक्ष ७६ इंद्र १० अमितवाहन सामानि क ६ हजार ४ गरक्षक २४००० | अग्निकुमार २५ | विमानलक्ष ७० इंद्र ९ अग्निशिख सामानिक ६ हजार ४ गरक्षक २४००० |
| विमानलक्ष ७६ इंद्र ८ हरिसह सामानिक ६ हजार ४ गरक्षक २४००० | विद्युत्कुमार २४ | विमानलक्ष ७० इंद्र ७ हरिकांत सामानिक ६ हजार ४ गरक्षक २४००० |
| विमानलक्ष ७२ इंद्र ६ वेणुदाली सामानि क ६ हजार ४ गरक्षक २४००० | सुवर्णकुमार २३ | विमानलक्ष ७८ इंद्र ५ वेणुदेव सामानिक ६ हजार ४ गरक्षक २४००० |
| विमानलक्ष ७४ इंद्र ४ भूतानंद सामानिक ६ हजार ४ गरक्षक २४००० | नागकुमार २२ | विमानलक्ष ८४ इंद्र ३ धरणेंद्र सामानि क ६ हजार ४ गरक्षक २४००० |
| विमानलक्ष ३० इंद्र २ बलि सामानिक ६० हजार आगरक्षक २४०००० | असुरकुमार २१ | विमानलक्ष ३४ इंद्र १ चमरेंद्र सामानिक ६४ हजार आगरक्षक २५६००० |
| निकायना मानि १००० योजन | भुवनपतिः | निकायना मानि योजन १००० |
| उत्तरश्रेणि सर्व विमान ३ कोडि ६६ लाख | | दक्षिणश्रेणि सर्व विमान ४ कोडि ६ लाख |

नरकप्रतरन्वनपतिअंतर ११५८३ योजन १ कोस ६६६ धनुष २ हाथ ८ आंगुल जाणवो॥

णा। जंबुद्वीपसमात्दः। संख्यमसंखिज्ञविस्तारा॥ उणाचूडामणिःफणिःगरुडेव ऋ ४

सर्वेत्र मानुष ... | [illegible] | मंदरादि ... | असंख्याता ... योजन | विस्तारे ... | [illegible] | [illegible] असुरकुमार ... बलि मर्यन्तानां | [illegible] | वज्रवृषि ... ४

॥२६॥ हिवे दक्षिणदिसि नइ उत्तर घरनी संख्या कहे छै ॥ हिवे दक्षिण चउतीसलाख भवन घरनी संख्या कहे छै ॥ असुर नागथी ... पांचनइ एकसो आठ ॥

ओ॥२६॥ अह दाहिणदिसि भुवणसंखा ॥ चउतीसा चउचत्ता अठतीसा य च

वनचा ॥ हरिकांत अग्निसिख पूर्णदजल ॥ पंचास लाख विमा ॥ चालीस लाख वि ॥ कमसो ॥ भवन ॥ दाहिण ॥ ॥२७॥

त्तपंचन्हं ॥ पन्ना चत्ता कमसो ॥ लरका भवणाणि दाहिणओ ॥२७॥

हिवे उत्तर भवन घरसंख्या कहे छै ॥ चउचउ ... ॥ तावई ॥ उत्तरदिसि विमान ॥ सव्वेवि ...

॥ उत्तरभवनसंख्या ॥ चउ चउ लरक विहूणा ॥ तावईयाचेव उत्तरदिसाए ॥ सव्वेवि स

सातकोडि ॥ बावत्तरि ॥ विमानदीस ॥ ॥२८॥ हिवे दक्षिण ... ॥ निश्चय ॥ दक्षिणदिसि ...

त्तकोडी बावत्तरि लरका य ॥२८॥ चसारियकोडी लरका छव्व दाहिण नवणाति

हिवे उत्तरदिसनी ... सर्व भवननी संख्या तीनकोडि ... ॥ उत्तर ... ॥ ॥२९॥ हिवे ... ॥ एक लाख ...

नेवयकोडी लरका छावत्तरि ॥२९॥ रयणाए पढमे जोयणसहस्से विमुत्तं ले

अपादीवह उदहीआ७। दिसिउ पवणाए८ थणिआ९ए१० दसविहा भवणवईतेसुउ

इंदा॥१२॥ चमरे१ बलीअ२ धरणे३ भूयाणंदे४ य वेणुदेवे५ य तत्तो य वेणुदाली६

रिकंत७ हरिस्सहे८ वेव९॥१३॥ अग्गिसिह१० अग्गिमाणव११ पुण्ण१२ लर१३ वसिट्ठे१४ तदे

जलकंतो जलपह१६ स्सह अमियगई१५ अमियवाहण१६ वदिणिवरर्ते॥१४॥ वेलं

१७ पभंजणे१८। घोसे१९ महाघोसे२० एसिमन्नयरो। जंबूदीवछत्तंमेरुदंडं पहुंका

ॐ

...सप्तमीसंख्याकदेवे || द्विवेदद्विण || गर्भज्याकदेवे ध्यातीयम्भध्यजाप || अनन्तात्संलापंयिमानवे एकदेवेवइत्ना ३

सागरोपमकृहइ ७ आठमे देवलोके। उत्कृष्ट १८ जघन्य १७ अगरदमांहिथी १७ का अति
वारैःसूछिर१८ह्योातिहां उतरथके तिणी आगुआरथ्या। तिसागरोपम१७ जाग्यउतर१८ध्रता
चौथइ उतरि१८ पूराकइ॥ नवमे देवलोके। उत्कृष्ट १९ जघन्य १८ उगणीसमांहिथी १८
का अतिवार इसूछिर१९ह्यो। तिहां उतर१९वे इमनवमे। दशमे देवलोके उत्कृष्ट आयुसा
गर२० जघन्य १९। विशेषकीजइ २० मांहिथी १९ का अति वारैसूछि२०ह्या। तिहां बिजादेव
लोके उतर१९ मेलावे तिहनणी २ सागरोपमना। आरहै आउ जागध्या। तिनवमा। दसमादे
वलोकनेषतिरि१९ सागर२ जाग आयु। बीजे उतरै २ जागवधारता। इमचौथइ उतरि२० सा
गरोपम पूराकइ। नवमे। दसमे। इम इग्यारमे। बारमे देवलोके। उत्कृष्ट २२ सागरोपम जघन्य
२० वइते २२ मांहिथी २० का अतिवारैसूछिइ २२ह्या। तिहां उतरथवे तिनणी विचोक आठ
जागध्या। इम उतरि२ वीससागरोपम अने। विविजागवधतां थकां। चौथे उतरि पूरा २२ साग
रोपमकइ। इमबारदेवलोक इउत्कृष्ट आउखानी स्थिति कही। एकादशमे बारमे आगइ
नवग्रैवेयकेण पंचअनुत्तरविमाने। अधिको उतरको इनथी। तिमाटे तिहां उत्कृष्ट २ जघन्य
१ विसआउषाबै पणिमध्यम आउखाकोइ नथी॥॥

|| द्विवेदसनिकायना भवनपतिते हना नाम कहे छे। ||

असुरनिकायनाम १ | नागनिकाय २ | सुवर्णा२सुवर्णतेगहनिकाय ३ || विद्युतनिकाय ४ || अग्नि...निनाम

|| अथदशनिकायभुवनपतिनामानि:|| असुरा१ नाग२ सुवर्णा३ विज्जू४ अ

२८१गाथा॥ हिवै तेह्वरूप देषाडइ छै जिम त्रीजै चौथै देवलोकै उतकृष्टी सागरोपम ७ जघ
न्य सागरोपम २ विष्कंभ की जइ ७ मांहिथी २ परहा काढीजै तिवारइ ५ पूठै रह्या अनइ उत्क
ष्ट ७ छै ते माहीं सागरोपम ५ नाइ ६० भाग थाया वारइ पंचासा वि इम उतरदा ७ पांच भाग
अनइ पाछिला ३ सागरोपम नै लाक रता जाइजै जिहां जेतला भाग सागरोपम कह्या छै ।
ते हां तेतले भाग वली पाछे सागरोपम बांधता जइइ इम १२ मइ उतरि ७ सागरोपम आउखा
नइ ।३।४। हिवै पांचमै देवलोकै उतकृष्टा १० जघन्य ७ सागरोपम छइ तेमां टइ दरा मांहिथी
७ काढ्या तिवारै ३ रह्या तिहां उतरइ छै ते माहीं त्रिक अढार भाग थया इम उतरइ सात सा
गरोपम पाछले सिंति अनइ त्रिण २ भाग अधिक वधारतां वडइ उतरि १० सागरोपम पूरा ज
वे ५ छठइ देवलोकै सागर १४ उतकृष्टी जघन्य दस छइ १४ मांहिथी १० परहा कढ्या तिवा
रइ ४ रह्या तिहां उतर ५ छइ ते माहीं पांचो कावीस भाग थया इम उतरि २ सागरोपम १० भाग
४ वधारीजइ तिवारइ पाचमइ उतरि १४ सागरोपम आवइ ६ सातमै देवलोकइ उत्कृष्ट १७ ज
घन्य १४ सतरै मांहिथी १४ काढ्या तिवारै ३ वै रह्या तिहां उतर ४ छै ते माहीं च्यार त्रिय बार
भाग थया तिहां उतरि २ दीठ १४ सागरोपम त्रिण २ भाग वधारीजै तिवारै चोथै उतरि पूरा १७



हिवे बाजा १० देवलोकने प्रतरे आउखानो ... पक कहइ छै
वहिवि · आकषानी स्थिति ना दिहिषक रीस्वड ॥ ॥ मगप · आवण प्रतर । विवक्षासाधे जिन कते प्रतर थेन तो नागकीजइ इहम · ९७ ६ तेनागनाअंक थया ते दर्शी ... जइ ॥ ... व्हू ... नआक । सहि · वेमहि तकरेवाते नाग नेलाकरनाथ का ॥ इंद्रियप · मनोवां विवऋत रने हने विवे उक्को · आ

... ठिइ सिसेसा ॥ सगपयर विह ... संघु ... ठिइ विईसहित्त ॥ इंद्रियपज्जत्त

कष्ठानी उत्कृष्टी स्थिति समजाजइ ॥ २२ ॥ एतले सर्व देवताने आउखानी स्थिति नो अधिकार पूरो थयो गाथामध्या ॥ पज्जत्त · हिवे एहित सर्व देवताना ॥ नवज · तिहां थकी नवज तेपर नुबारक है वइ ॥

मिउक्कोसा ॥ २२ ॥ सुरेसु ठिइ वारं सम्मत्तं एएसु देवत्तुवणदारं नल्लइ ॥

॥ हिवे ए छहिली गाथानो अर्थ कहइ। उसुतेरसरह उसुवारसोतिण। बार देवलोकना देवता कल्पते
आचारवंत छै गकरवा करनो। तथा पंचकल्याणकादिकनइ कार्यै मनुष्यलोकमांहि आववानो
आचार छै ल... नइ छै। अनइ नवग्रैवेयक। पंच अनुत्तर विमाननावासी देवता ते कल्पा
तीत कहीजे। तिहां तणी ए आचार हित छै। तिहांथकी ते देवता सर्व तक्रिसा वर्वे छै। ते माटे देवलो
कना देवताने सुर कल्प कहीजे। अनइ बार देवलोकने पणि कल्प एहवी संज्ञा कहीजे। तिहां
जे आउानी स्थिति उत्कृष्टी छै। तेहनो विशेष कीजे। एतलै उत्कृष्ट मांहिथी जघन्य आयु कही
जे। पहिलै सागरोपम पूठिइ करइ। तेहना जिहां जेतला प्रतर जाइ। तेतला सागरोपमना भाग जु
दा करी पछै ... थिनाग वांटइ आवइ। तिहां गणीजे। अनै हेठली जे स्थिति जघन्य
लगी करी हती ते मेली करता जाइजे। तिवारइ सर्व प्रतरनी उत्कृष्टी स्थिति जुदी जुदी लाभइ॥

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| देवता १ | स्थिति १ | चवनर | ऽवगाह नाइ | चवण विरह ४ | एकस मयउ पपात विरह ५ | एक समय उपपा तविर हह | एकस मयच वणवि रह ७ | गति ८ | आग ति९ |
| नारकी २ | स्थिति १ | चवनर | अवगा हनाइ | उपपा तवि रह ४ | चव णवि रह५ | एक समय उपपा तवि रह६ | एकस मयच वण विरह ७ | गति ८ | आग ति९ |
| मनुष्य ३ | स्थिति १ | ० २ | अवगाह नाइ | उपपा तःवि रह ४ | चव णवि रह ५ | एक समय उपपा तवि ६ | एकस मयच वणवि रह७ | गति ८ | आग ति९ |
| तिर्यंच ४ | स्थिति १ | ० २ | ऽवगाह नाइ | उपपा तविर ह४ | चव णवि रह ५ | एक समय उपपा तवि रह६ | एकस मयच वण वि७ | गति ८ | आग ति९ |

मुक्कोसं ॥४॥ वंतरिआणजह णाद

दस १० हजारवरसनुं जाणवो | ग्गुकेतकृष्टु आयुं पल्योपमनुंकहेह || ग्गुनेतेह नी अंतर णीदेवा

सवासमहस्सापलिअमुक्कोसंदेव

उपलियहंपल्यो पमनुं अद्वनागपम | हिवेजोतिषीनोयुग्ध पलि पमनुं आदि पल्य अधिकतनोकर इवीसमारश्निणिक

णंपलिअ हंपलिअआहियंस

सूर्यनीआयुक्कहे (५) तेक्षेत्र एकलाघवर्ष पल्योप मरवं इमानुकाकड़ सहस्र पल्योप मएकसहस्रवर्षनिलो अधिक

रवीण ॥ ५ ॥ नरकेणण्ड्दसमयद

हिवेअनुक्रमेआयुष्य नादिनदेवः तानुंआकहेदस्ता हिवे (६)

आणगादाणपलिअमपरसा ॥ हिवेविंदेवीणंकमेणनक्खत्ताराणं ॥ ६ ॥ पलिअ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भवनपति: चमरेंद्र १ | उत्कृष्ट | [illegible] | [illegible] | [illegible] लीन ३॥ | [illegible] |
| उत्तर बलेंद्र २ | उत्कृष्ट | सागर १ साधिक | देवी | पल्य साढा च्यार ४॥ | [illegible] देवता [illegible] जा |
| दक्षिण नवनिकाय ३ | उत्कृष्ट | पल्योपम दोढ १॥ | देवी | पल्योपम अर्द्ध | चंद्रमानो पल्यनो चउथो भाग |
| उत्तर: नवनिकाय ४ | उत्कृष्ट | देसे उणा दोय पल्य | देवी | पल्य देसे उणा | [illegible] नो पल्यनो चउथो भाग: |
| [illegible] तर ५ | उत्कृष्ट | पल्योपम | देवी | पल्य अर्द्ध | [illegible] नो पल्य [illegible] चउथो भाग |
| जोतिषी चंद्र ६ | उत्कृष्ट | पल्योपम १ लाख वर्ष अधिक | देवी | अर्द्ध पल्य ५० हजार अधिक | रविनो पल्यनो चउथो भाग |
| ज्योतिषी सूर्य ७ | उत्कृष्ट | पल्य १ हजार वर्ष अधिक | देवी | अर्द्ध पल्य ५०० अधिक | व्यंतर देवता वर्ष सहस्र १० |
| ग्रह अठ्यासी ८ | उत्कृष्ट | पल्योपम १ | देवी | पल्योपम अर्द्ध | तारा देव देवी पल्यनु ८ भाग |
| नक्षत्र अठावीस ९ | उत्कृष्ट | पल्योपम अर्द्ध | देवी | पल्योपम अर्द्ध | चंद्रमा १ सूर्य २ ग्रह ३ नक्षत्र ४ इंणां की |
| ताराकोडाकोडि १० | उत्कृष्ट | पल्योपमनो चोथो भाग | देवी | पल्य तु आठमुं भाग | देवीओ जघन्य पल्यनो चोथो भाग |

॥ [illegible] सागरोपम ॥ [illegible] नारकीनो आउखो [illegible] अने च्यार [illegible] विणके

[illegible] तहेवा [illegible]

॥ पलियं [illegible] पल्योपम विणकिस्या ॥ [illegible]
सदीस [illegible] सोलच्यार ॥ [illegible]

[illegible] हाइं [illegible]

[illegible] जातिः [illegible] पतीनी [illegible] | दक्षिण-उत्तरमेरुपर्वतथी [illegible] तेनो [illegible]

वि तेकाया ॥ [illegible] दिवइ

[illegible] पल्योप ॥ [illegible] कीघ्रर [illegible] | [illegible] दक्षिण [illegible] पमकाइ [illegible] सघा [illegible]

पलियं ॥ [illegible] दक्षिण

॥ [illegible] ॥ अर्द्ध पल्योप [illegible] ॥ [illegible] पल्योपमनक [illegible]

॥ तहेविमु [illegible] पलिअं देवीण [illegible]

जिण सोहम्मीईसाणे जहन्नठिईपलिअमहिअंच॥ण दोसा

हिसत्तदसचउदसपासतरअयराइंजासहस्सारो॥त

तउवरिक्किक्कं अहिअंजाणुत्तरचउक्के॥णइगतीससागराइं

सव्वट्ठेअजहन्नठिईनत्थि॥परिगहिआणिअराणिआसो ह

म्मीसाणदेवीणं॥१॥पलिअंअहिअं

| | | | |
|---|---|---|---|
| सोधर्मपरिगृही | देवी | ज.पल्य१ | उत्कृष्टपल्य ७ |
| ईशाने परि. | देवी | ज.पल्य१साधिक | उ.पल्य९ |
| सौधर्मअपरिगृही | देवी | प१ | पल्य५० |
| ईशाने अपरिगृही | देवी | १पल्यसाधिक | पल्य५५ |

[illegible] ‖ श्री सागरो [illegible] फेरा नरक नी | [illegible] लो पमनो | [illegible] फेरो | [illegible] बह्व कह्यो | [illegible] मानवासी देव [illegible] | [illegible] ‖ [illegible] जाणवो

[illegible] आगारि [illegible] | [illegible] नागो | जह [illegible] नागपंचम

तिर्यंच [illegible] पलि [illegible] सागरो पम १ | [illegible] सागरोपम ४ | पांच सात सागरोपम ५ | [illegible] सागरोपम ६ ‖ सात दिवस रे सागरोपम ७ | [illegible] ‖ [illegible]

[illegible] दस [illegible] दस [illegible] सत्तर [illegible]

[illegible] अधिक [illegible] ‖ जाडनी सम [illegible] | [illegible] सागरोपम [illegible] | तित्रीस सागरो पम | [illegible] विमाने [illegible] | [illegible] दिक २२ [illegible] | [illegible] |

[illegible] जाः [illegible] सम्बुवरिगो विक्रो ॥ ८ ॥ तित्रीस एकत्तरेसु [illegible] समाविइ

| देव लोक नाम | सौधर्म १ | ईशान २ | सनत कुमार ३ | माहेन्द्र ४ | ब्रह्म ५ | लांतक ६ | शुक्र ७ | सहस्रार ८ | आनत ९ | प्राणत १० | आरण ११ | अच्युत १२ | सुदर्शन १ | सुप्रबद्ध २ | मनोरम ३ | सर्वभद्र ४ | सुविशाल ५ | सौमनस ६ | सौमनस ७ | प्रीतिकर ८ | नंदकर ९ | पंचानुत्तर १ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उत्कृष्ट आयु | साग २२ | साग २ झाझी अधिक २ | साग २७ | सा ७ अधिक | साग २१० | साग २१४ | साग २१७ | साग २१८ | साग २१९ | साग २२० | साग २२१ | साग २२२ | साग २२३ | साग २२४ | साग २२५ | साग २२६ | साग २२७ | साग २२८ | साग २२९ | साग २३० | सागर ३१ | साग २३३ |
| जघन्य आयु | प२ | पल्य २ अधिक | साग २२ | सा २ साधिक | साग २७ | साग २१० | साग २१४ | साग २१७ | साग २१८ | साग २१९ | साग २२० | साग २२१ | साग २२२ | साग २२३ | साग २२४ | साग २२५ | साग २२६ | साग २२७ | साग २२८ | साग २२९ | साग २३० | साग २३१ |

गर्भजमनुष्य तिर्यंच | एतलाजी | निरुपक्रम आयुषा | ५६ अनइ | अवसे विन्हाडे जेनाभुवी | जेण जिणेंका | उवक्क उपक्रम हेतु | अप्प
मिथ्यादृष्टि | थइं | नाभवीकं | दोयनिरुपक्क | बीजासमस्त जीवनाय | रोकरी आप | ३३पाट | सहुते
तर्यंचपंचेंद्री | | | म सोपक्रमः | तहिसोवक्कइ निरुपक्रम | ओ आउ | |
२मार्विःः

सत्तिरिया।जेतिनिरुवक्कमाऊ।इत्ताविसेसामुणेयव्वा॥ ८८॥ जेणउवक्कमिज्जइ

ण तेउपक्रमपोतानां आत्मानउपना | इयरेणलोवि तहाइत परनीमारीतीविषसस्त्र मिश्रमुपउपक्रमथी | सो तेअ पवर्तनिदे | अज्झवसाण इअ अवसायादिकना तद्देजथतइ | उपक्रमके द्विविधे लोकालेवेदवायोग्य मुक्कमनमोराक्राजमां | द्विवेदवायोग्यक्रीरापे अनुवक्कमोइयरोअने अनुपक्रमतएवोलखबी | विपरीतनां तथा ८०० | द्विवेउपक्रम सातअध्यव सानतेरागा

प्पसमुत्थेणइयरगेणवि सोअज्झवसाणाइ उवक्कमोणुवक्कमोइयरो। ८९। अज्झव

नेहरागभयस्यनिमित्ते वेदनाजलशस्त्रपासी वगुव | आहार नइ आण पामवनघा अति मामाथी तेहनासा | पम्हलवयुपनेउपजेय पराघातेकाने पुणानी ते तेउपरपहवेते मारिवा | स्पर्शेते अग्निविषसर्वविषकादि उपक्रमकहीये आणपाणु प्राण अपानते स्वासोस्वास अस्तरोलना | नवातेहनारोधवा युक्तीसत्तविह एमासप्र कारना उपक्रमनिलोकरीझिझवेआउ अपवर्तनवधयोगये आयुकर्मनिघटेपिल | बीजु नघटे १ | द्विवेते वनेप र्याम

साणनिमित्ते।आहारेवेयणापराघाए॥ फासेआणपाणूसत्तविहंझिज्झएआउं॥९०॥आ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एकेंद्री १ | ४ | पर्याप्ति | ४ | प्राण |
| बेंद्री २ | ५ | पर्याप्ति | ६ | प्राण |
| तेंद्री ३ | ५ | पर्याप्ति | ७ | प्राण |
| चौरिंद्री ४ | ५ | पर्याप्ति | ८ | प्राण |
| असन्निपं० | ५ | पर्याप्ति | ९ | प्राण |
| सन्निपंचेंद्री | ६ | पर्याप्ति | १० | प्राण |

मेष्या आहारपर्याप्तिआहारक शरीरमांहेइंद्रियपलेनीप जावतेइंद्रि | एतु पर्याप्तिसर्व जीवनइ कइ | आणपाण इमस्वा सोस्वासपर्याप्त४ | नापापर्याप्त५ चेतनमनलेमव पर्याप्तधारलाथ | द्विवेसर्वजीवनेथाइ एकद्रेष्यारपर्याप्त पांचपर्याप्त५

वारस इंदियापज्जत्तीआणपाणूभासमणो। चउपंच

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| देवइमरे नेइआगइअ तेअध्यवसाय नइभाणक्रे थी १ | भामेणइरुषि यायमरइपासी लेइमरइतेनि महमरलकदी यइर | पुष्पातिरस्पीअ मतो आहारन सेथकइनेमरइ ते आहारमरण करीयइ३ | सललवेवेदिय वेदनाउपनेपे इस्थतेमरेसे वेदनामरण दीयइ४ | [illegible]रालेइ वेपांगीमा कमरइते। समरणक यइ५ | विषकस्यामेस शिंसपादिकने कस्येमरइते समरलक थीइ६ | उसास सक [illegible] मरेण |

समयाद्वितीयाद्... नं सूत्र २०२ मपठत्समात् तस्मिंस्तु तस्य शरीर योगात्केवलज्ञ: १९ लोमाहारेण संबंध मायांति जीवयोगत
ऊदारिकादिवु ... दानलीहारभ्यास २०२ वमाव्याद्यसमये आहार: परिनावित: सर्वविवेद्विवक्राद रूपाद्यद्यवान्या स्ति: २१ निश्चयनयेन नव

गत्वा स्वस्थानेऽवक्रा परिणामान्निपुखत: केषिवक्रादिसमयो गणयेतेव्यवह रत: ६ ततश्च ॥ नत ... सं
मये गतेतस्मिन् द्वितीयके समयेपरजन्मायु रुदेतिखव्युन्मते ७ निश्चयनया अयाश्च: संपुर ... घ
त्वंतद्वणे तथापिद्वि सत्वात्याग, संबंधि संघातपरिशाटयो ८ समय: स्या नवस्यैव: संनेवेत्तत्र न
श्यंगासर्वशा दोष्यत्त वाद्यद्रणएवयर ९ परजन्वपदभे साटो सिद्धागमवचनात् संघातपरि
रूपं चैवमागमे संघात:परिशाटश्चतो द्वे समुदितावि ति ऊदारिकादि देहानां त्रयाणां करणत्रयं १०
सर्वात्मनां तु जत्वानां माद्येद्रियद्वणे द्वणे चरमे सर्वथा त्यागो द्वितीया दिषु चोजय ११ तथैव प्रथमो स्त्व
प्राणभृत्स्य प्रथमद्वणे सर्वात्मनो स्पति देश स्थितान् पुद्गलान् १२ ततश्चान्य: पर्यंतं द्वितीयादि
शुद्ध रहित्स्यजश्चतान् कुर्यात् संघातपरिशाटनं १३ ततश्चायु: समालोच नावायुष प्रथमेद्वणे स्पाश्च
ट एव प्राग्देह पुद्गलानां नु यद्द: १४ ऊदारिक वैक्रियाहारकेषु अस्त्रयो पमी संघातपरिशाट: स्या तेज
कार्मणेसदा १५ अनादित्वाद्भवे नैव: संघात: केवलोनयो: केवलपरिशाटश्च संनवेन्मुक्तियायिना १६
॥मूल जीवनी गति २ ऋजुगति १ वक्रगति २ तेमाहे ऋजुगति नो धणी पोतानी गतमे समश्रेणइ जाइ अनेव
क्रगतिनाधणीनइ च्यारप्रकारनी विग्रहगति कहइ तेमाहे विसमयनो विग्रह इम ये नरतमाहे पूर्वदिसनो व
सी जीव नरकमाहे पश्चिमदिशइ ऊपजइ तिवारइ एकणि समइ अधोगति वीजे समै त्रीगे त्यजिगम्येजाइ
तिहां १ समय अणाहारिक १ त्रिण्यसमयनो विग्रह इम ये नरतमाहे पूर्वनो तथा दक्षिणनो वासी जीव नरक
माहे वायव्यकूणे ऊपजे ते प्रथमसमइ नीचो समश्रेणिइ जाइ वीजे समइ नीचो जाइ पश्चिमदिसइ त्रीजे

समनाविन: इति
कुर्वाणे कारव
पुधासद ...
विधादना
नाविने
स्पति २२
समय: ... दना
हार १९ ... क्रम
नावपि २३ तत
श्चअवहारेण
त्कर्षत: समया
समया निश्चये
नजन्नाणे नि
एहरा: ब्रकादि
ता २४ द्विक्षणो
व: क्रूणे जघ
न्याकायसेद्वि
ति: आहारिक
गरिष्ठय: काल
चक्राणे संरक्ष
२५ त्रिविधिष्क
सश्च हारा उज
आहीर आदिस
लोमाहारी द्वित
हस्त्रश्च पद्धेपा
स्थरतृतीयक:
२६

निहारसमये...
माह्वायकृतोऽणपञ्जे नवअसमये...

पुनः आयुधानाजाण वेरनेद ॥ मथतओ पापुराष्ट्या पछी | तीग तिजा | रुजु गति जाइ | एकसम यनेओव २२ | निवक्र गतिक रतो | आरंतथा पंचसमय | तवरनवर्नु उदयआवे

गोवेधो ॥ आउस्स नवे अहवा कालोसो । अंते उजुगइ इगसमइय वक्कचोपंचसमयंता ॥ ८

द्विधैकऋजुगति वक्रगतिलिकाविशायनयअवहारनयतिलेकरीएन ऋजुगतिनीधलीएथमसम ॥ परभवियआउआ नैविपरभवउआउ ऋजुआवे | तदाहारो वलीपरभवनोआहारपहिलेज समयउदयआवे | वक्काए वली वक्रगतिजी वने | बीयसमए बीजेसमये ॥ परभव परभवनुं आयुअनेपरभवनो आहार | उदय मेइ

२ ॥ उजुइपढमसमए परभविआउयं तहाहारो । वक्काइ बीयसमए परभविआउं उ

उदयएति वक्ष (८२) एकसमयनीवक्रगति | बिसमः त्रिणसमयनीवक्रगति | त्रिणसमयनीवक्रगति | च्यारसमयतिनीवक्रगति | पंचमेसमयतिगतिजाइ | दुगाइसमएसु दोयसमयत्रसमयच्यारसमयपसमय | परभवाहारोनैविपेपरभवनोआहारउदयआवे ॥ एकसमयनीवक्रगति दोजीसमए २ ... वक्रगतइ ...

दयमेइ ॥ ८३ ॥ इगदुतिचउ वक्कासु । दुगाइसमएसु परभवाहारो । दुगवक्काइ

आहारस वक्रानदीवी समआ ८ ४ समयनीवक्रगतिवीयत | तेकाटइएकसमयविसमयत्रिणसमय लगेविग्रहगतिमांहिआहारनोविनाआणाहारीहुवक्रगतिकरतापर्की (८४) द्विधेनविग्रहगतिनोस्वरूपकहेछेतेदेका मेछे ॥ लोकअग्रारीअ२ हारकालविवा २ ॥ आहा

सुसमया इग दो तिन्निय अणाहारा ॥ ८४ ॥ विग्गहगतिस्वरूपं यथा ॥

सुः ऋजवस्थाः सर्ववक्रगतिविना त्रिवक्राः यतोताप्या तत्रानाहारिताः । गतिर्द्विधा द्विजंतु
तानां परं भव सरला कुटिला चापि तत्रैकसमयादिमा २ उत्पत्तिदेशो यः । समश्रेणिक्ष
त्रैकसमयेनैव ऋजुगत्यां सुमान् व्रजेत् ३ परजन्मायुराहारौ अस्मिं । त्रि ऋत्स्यमेतह
याविहारयो ४ द्वितीयसमये ऋज्वा व्यवहारनयाश्रयात् उदेतिपर । सुरिदंतास्य २५९

| ग उवा ग ७ बका र कहइ | बंधका लकहि यइ१ | ऽबाधा काल कहिय ५२ | अतस मयक लकहि यइ३ | अवर्त नकाल कहीय ५४ | ऽपवर्त नकाल कहिय १ | उपक्र मकाल क्लिहि ६६ | ऽनुक्रम कालक हिइं ७ | प्रमाल जेदका लना ८ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

तेमाहिजीजा सामान्यम। उपक्रमपजे तेमांहेसमा ६८ । हवैआउषानास्मानकहइ आउषानोबंधकालवयेआगिलुं आ अबाध कालते थपरत शुकिवारैबोधइ

सनरा॥ ६७॥ आउस्सबंधको ... ाइ

पालिजिवारल गोतेउदयनावे तेअबाधाका लजेनेद । अतसा मतेजीवनेलोसमयनो आगुनेग त्यांथकाजिवारैतेआ गिलोनावनोआऊ × । अपवर कालेदवे गुतेबीन... हिबुंकेबोइ

वाकालोयर अतसमतेयर अपवरण

अनपवर्त्तनतेस्थितिबंध माहेघटइबंधेनहीप । उपक्रमतेयेह कारणकपना सर्वाधुगाने घटानइ९ । आउपक्रमनेआऊ षाक्षयथावानाका रणनमिलेयेहथी १६कारण७ । नलिया एमा तनेदआऊषा जाजाणवा । हिवैजेदतेविवरीकहेछेइ१ आऊषांबांधइदेवगतिनाना रिकीनाइजीववली । असंखतिरिनरअ ष्यानाआऊणानाधणीछु गलियातीर्थंचमनुष्यर

धरूपवत्तणप। उवक्कदमरूवक्कमात्तणिया॥ ६८॥ बंधंतिदेवनारय असंखतिरिनर

साऊ एतलापोतानाआ ऊषामांहेषाछिलावधा कता । परनविआऊं परन बडेआउडुंबांधइं । सेसा शेष थाकतास र्वजीव । निरुवक्कम नि रुपक्रमआयुषा नाधणीनइ । त्रिनाग निश्चयथकीपो तानाआऊषामाहिलोत्रीजो नागशेषथाकतेपरभवेंगति लानवनोआउषु बांधइ+ । सोवक्क आनेयेसोप क्रमआ ऊषानाधणीपकेंनीवैत्रीर तेंत्रिस्रुवउरैबीथपेबेडीप तेवली

चमसेसासाऊ। परभविआउसेसा। निरुवक्कमतित्रागसेसाऊ। ६९॥ सोवक्कमाउया

अनहि पोतानाआयु बानइंत्रीजद्धागइं । हवा अथवानवमाना गइआयुडुं थाकतो । घता । सत्तावीस अथवापोतानास र्वआउषानइसत्तावीसमइ जानइंथाकताथकाना जधुन्य पल्ल ६ । अंतमु तोपलि इजहुऊ ४ । इतिमे छेह लोथाकतो अइतिवा २६ । वावीधशइवि कल्पथकीपद लोठोमेजीवप ॥ । हिवैआवांधावउत्र जइमे येतलैआ गइरोउआउषु

उण। सेसतिभागेहवानवमभागे। सत्तावीसइमेवा। अंतिमुहुत्तंतिमेवावि। ७०॥ जइमेला

[illegible]



कावाणीकाउजा ... आपतीसंघा सिरना लक्ष ॥ ८५ ॥ ... एकेन्द्रिय ... विकली ... सड्डाकुलकोडि ... सव्वजीव ... नवनी ... देव ...

...ग॥ ...णाइं॥८५॥ एगकोडिसत्तनवइलक्खासड्ढाकुलाणकोडीणं॥संवुडजोणि

एकेंद्रिय जीव २ | आनद्वाविकी २० ... | वियरले निकुली निगा | विकलत्रि कालणा | अचित्तजीव ... | ... देवतानारकी ... सर्वथा जीवप्रदे ...

२०गिदि नारयवियलविगलागब्भुया॥८६॥अचित्तजोणि

... | ... | ... मिश्र ... | ... | ... देवतानाजाति ...

सुरनिरया।मीसागब्भेतिजोणिसेसाणं॥सीउसिणनिरयसुरग

मिश्रहयनिश्र ... | तेउकाय ... | ... योनिगा | ... गर्भरहसज्ञ | ...

ब्भमीस उसिणसेसतिहा॥८७॥हयगब्भसंखवत्ता।जोणी

कुम्मुन्नयाद ... | आयति ... | ... | नरक ... | ... | वेसीपत्रावीनिबीकार नापीलमैलवीला आकार

कुम्मुन्नयाइजायंतिअरिहंत ... इमा।वंसी

| | |
|---|---|
| १ | ...नयग्रवारसयोज |
| २ | ह्रस्वलोकिकदेह |
| ३ | ग्रमांगाश्रीपग्रथुप |
| ४ | कुलनिसलार्दग्रुप |
| ५ | १४मूमराविकनु |
| ६ | बगाघरत्नारीरमान |
| ७ | ...गिदादिकश्रुगदवि |
| ८ | यिाजनरत्नारत्न |
| ९ | ग्रग्रनमात्ररदिहि |
| १० | ...दिकगाउर |
| ११ | जन(अहप्रत |
| १२ | योजनउत्कृष्ट |
| १३ | मधनुगरपृथमान |
| १४ | ...तिसंमान |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उवान उथका रकहइ | बंधका लकहि यइ१ | वाम काल कहिय ६२ | अंतर मयफ लकहि यइ३ | उवर्त नकाल कहीय ६४ | अपवर्त नकाल कहिय १ | उपक्र मकाल किहिवि ६६ | अनुक्रम कालक हिइं ७ | साल नेदका लना ८ |

सनरा ॥ ८० ॥ आउस्सबंधको णहे

वाकालोयर अंतसमत्तेयर । अपवत्तण

यफपवत्तणय । उवक्कदमफवक्कमा नायव्वा ॥ ८१ ॥ बंधंतिदेवनारय असंखतिरिनर

बम्मासेसाउ । परभवि आउ सेसा । निरुवक्कमतिन्नागसेसाउ । ८२ ॥ सोवक्कमाउया

उम्मा । सेसतिन्नागे हवा नवमनागे । सत्तावीसइमेवा । अंतिमुहुत्तंतिमे वावि ॥ ८३ ॥ जइमेवा

[illegible]

कुलकोडिलरकाइं ॥ ८५ ॥ एगकोडिसत्तनवइ । लरकासड्ढा कुलाणकोडीणं संवुडजोणी

२० गिंदि नारयवियलविगलागब्भुया ॥ ८६ ॥ अचित्तजोणि

[illegible]

सुरनिरय । मीसगब्भेयतिजोयसेसाणं । सीउसिणनिरयसुरग

[illegible]

ब्भमीस उसिणसेसतिहा ॥ ८७ ॥ हयगब्भसंखवत्ता । जोणी

[illegible]

कुम्मुन्नयाइ जायंति अरिहंत हमामा । वंसी

| | |
|---|---|
| | एकेंद्रियादीनां शरीरमानयंत्रं वारसयोज |
| १ | वनस्पति योजनसहस्र साधिक देह |
| २ | बेंद्रिनो देह १२ योजन शंख प्रमुख |
| ३ | तेंद्री नो शरीर ३ गाउ कानखजूरा प्रमुख |
| ४ | चौरिंद्री नु शरीर गाउ ४ भ्रमरादिकनु |
| ५ | संमूर्छिम पंचेंद्री तिर्यंच जलचर शरीरमान |
| ६ | संमूर्छिम उरपरिसर्पनो उत्कृष्ट |
| ७ | संमूर्छिम उरपरिसर्प योजन |
| ८ | गर्भज चतुष्पद ६ गाउनुं |
| ९ | गर्भज भुजपरिसर्प गाउ |
| १० | गर्भज उरपरिसर्प योजन १००० |
| ११ | गर्भज पक्षी धनुष्य |
| १२ | [illegible] |
| १३ | [illegible] |

| | | | |
|---|---|---|---|
| पृथ्वीकायथोनि | [illegible] | बेइंद्रीजीवयोनि | २०००००लाष |
| अपकायथोनि | ७००००००लाष | चौरिंद्रीजीवयोनि | २०००००लाष |
| तेऊकाययोनि | ७००००००लाष | देवतायोनि | ४०००००लाष |
| वाऊकाययोनि | ७००००००लाष | नारकीयोनि | ४०००००लाष |
| प्रत्येकवनस्पति | १००००००लाष | तिर्यंचयोनि | ४०००००लाष |
| अनंतकाययोनि | १४००००००लाष | मनुष्ययोनि | १४००००० [illegible] |
| बेइंद्रीयोनि | २०००००लाष | एवंसर्वमिलीने | ८४००००००लाष |

॥एवंसर्वमिलीनएककोडिसत्ताणुंलाषकुलकोडिकहुं

| | | | |
|---|---|---|---|
| पृथ्वीकाय१२ लाषकुलकोडि १२००००० | वनस्पतीकाय कुलकोडि २८०००००लाष | जलचरजीवकुलकोडिलाष १२००००० | भुजपरिसर्पकुल कोडिलाष ५५००००० |
| अपकायकुल कोडिलाष ७००००० | बेइंद्रीजीवकुल कोडिलाष ७००००० | खेचरपंषीकुल कोडिलाष १२००००० | मनुष्यकुलको डिलाष १२००००० |
| तेऊकायकुल कोडिलाष ३००००० | तेंद्रीकुलकोडि लाष८००००० | चउप्पदकुलको डिलाष १०००००० | देवताकुलको डिलाष २६००००० |
| वाऊकायकुल कोडिलाष ७००००० | चौरिंद्रीकुलको डिलाष९००००० | उरपरिसर्पकुल कोडि१०००००० | नारकीकोडिकु लकोडिलाष २५००००० |

गाहै वह

सा साढावारलाषकुल कोडिजलचरमांहइं १२५०००००० | दसलाषकोडि कुलबपंषी मांहे | दसलाषको डिकुलउर परिसर्पमां हे | नवलाष कोडिकु लभुज परिसर्प मांहे | नराम २४उर उतिव मनुष्य मांहे

यगा॥६॥ आठतेरस१३ दस१० दस१० नवनरा

देवता नारकी मांहे मांहे | बारलाषकोडि कुलमनुष्य | चालीसलाष कोडिकुलदे वगतिमांहे | पणवीस२५पचवीस लाषकोडिकुलना रकगतिमांहे | कुंति एत लाऊ वेन एका

मरेंनर१ वारस१२ छवीस२६ पणवीस२५ कुंति

जोयणंचउरो॥८७॥चउसइगुणंपमाणंगुलंउस्सेहंगुलाउबोधव्वं॥उस्सेहंगुलदुगुणं वी

रस्सायंगुलंभणियं॥८८॥पुढवाइसुपत्तेयं सगवणपत्तेयणंतदस१० चउद विगलेदु२

२सुरनारय तिरियचउ४चउ४चउदस१४नरेसु॥८९॥जोणीणंहुंतिलक्खा सव्वेचुल

सीइहेवघिप्पंति)समवन्नाइसमेया एगत्तेणेवसामन्ना॥९०॥एगिंदिएसुपंचसु बारसग

तिगसत्त७अट्ठवीसाय२८।विगलेसुसत्त ७अट्ठ८नव जलखहचउप्पय

| | | | |
|---|---|---|---|
| [illegible]गुलनआय | ८ | २ | तिणिपाआपनाबिहत्थकः |
| अउपरमाणुएकअसरेणुनालीई | ८ | २ | तिणिविहत्थीएकहाथाइ |
| ८त्रसरेणुआएकरथरेणुकहीयइ | ८ | ४ | तिणिहाथेएकधनुपाथइ |
| ८रथरेणुएकबालाग्रकहीयइ | ८ | २००० | एककोसआठीकरीकोसकहता |
| ८बालाग्रएकलीखकहीयइ | ८ | १ | |
| ८लीखएकजूंकहीयइ | ८ | ४ | तिणिकोसिएक [illegible] |
| ८जूंएक जवमध्यभणीयइ | ८ | ४०० | [illegible] |
| ८जवमध्यएकउत्सेधांगुलकहीयइ | ८ | २ | |
| ६उत्सेधांगुलएकपादकहीयइ | ६ | २ | तिणिउत्सेधांगुलेन[illegible] |

ईमिणसुपमाणंगुलेणं॥११॥सई पंसु

तिरिकणविहिंतुतिन्नुवक्किरनसक्कातेपर

माणसिवा।वयंति आइपमाणणं॥१८॥प

रमाणूतसरेणू।रहरेणूवालअग्गलिक्खाय।जूयजवो अठगुणा।कम्मेणंउस्सेहंगुलयं

॥१९॥अंगुलछक्कंपाउ।सोदुगुणविहत्थिसोदुगुणहत्थो।चउहत्थंधणुदुसहस।कोसोते

सुरानिरया।उवुसवलेससेसाअंतमुक्कमरणमति॥७२॥अंतमुकत्तठिई।तिरियनराणंहवं

तिलेसाउ।चरमानराणंपुणनव।वासूणपुव्वकोडीवि॥७४॥तिरियाणविइपमुहं।नति

]सेसंपिसंपयंवुच्छं।अनदियंदरुनाणिओ।चउगईजीवाणंसामन्नं॥७५॥देवाअसंखन

]रि।इत्थीवेयगभनरतिरिया।संखाउयातिवेया।नपुंसगानारयाईया॥७६॥आयं

गेणवुअंतारीरपुस्सेद अंगुलेणतहा।नाणुडविविमाणा

| | |
|---|---|
| बादरपर्याप्ता | गर्भज...पंचमांहि लेश्या ६ |
| पृथ्वीमांहि लेश्या | गर्भजमनुष्यमांहि लेश्या ६ |
| अप्कायमांहि लेश्या ४ | तेउवाउमांहि लेश्या ३ |
| प्रत्येकवनस्पतीलेश्या ४ | बेंद्रियादिकमें लेश्या ३ |

गब्भय बायरभूदगपरित्तेसु ॥ हुंति सहस्सारंत ... गानि

...उववज्जति संखपणिंदियतिरिया मरिऊं

सुविगइसु जंति ॥ ३७ ॥ थावरविगला नियमा संखाउयतिरिनरेसु गच्छंति ॥ विगला लब्भिज्ज

विरइं सम्मंपि न तेउवाउचुया ॥ ३८ ॥ पुढविदगपरित्तवणा बायरपज्जत्त हुंति चउलेसा

गब्भयतिरियनराणं छल्लेसा तिन्नि सेसाणं ॥ ३९ ॥ तिरिनरआगामिभवे लेसाए अंतगए

असंखिज्जा असंखनिगोयउदवैगोलो इक्किक्कंमि निगोए अणंतजीवा मुणेयव्वा ८५

॥ अत्थि अणंता जीवा जेहिं न पत्तो तसाइपरिणामो उपज्जंति चयंति य पुणोवि तत्थेव त

त्थेव ॥ ८६ ॥ सव्वोवि किसलउ खलु उग्गममाणो अणंतउ भणिउ सोचेव विवढंतो होइ प

रित्तो वा ॥ ८७ ॥ जं अमिदास्वतिव्वा अन्नाणं खु मइअयं कोमलवेयणीयं ला त

दियत्ताणं ॥ ८८ ॥ तिरिएसु जंति संखाउएसु तिरिनरा जा दुकप्पदेवा उ पज्ज संख

| ॥एकेंद्रीया | ईमनजि जातीकायस्थितिकहइ |
|---|---|
| पृथ्वीकाय | असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी रहइ |
| अपकाय | असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी रहइ |
| तेउकाय | असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी रहइ |
| वाउकाय | असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी रहइ |
| वनस्पतीका | असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी रहइ |
| बेंद्रीजीव | संख्याता वरसकाल रहइ |
| तेंद्रीजीव | संख्याता वरसकाल रहइ |
| चउरिंद्रीजी | संख्याता वरसकाल रहइ |
| [illegible]तिर्यंच | सात७ आठ८ भव निरंतर रहइ |
| मनुष्य | सात७ आठ८ भव निरंतर सीम रहइ |

[illegible]

बारसजोयणसंखो तिकोसगुम्मीयजोयणंभमरो

[illegible]

मुछिमचउप्पयभुयउरग गाऊयधणुजोयणपु

[illegible]

हुत्तं ॥२५॥ गब्भचउप्पयछगाउयाइंभुयगाउ

[illegible]

यगाऊयपहुत्तं जोयणसहस्समुरगा मुछा

[illegible]

वेयसहस्सं ॥२६॥ पक्खिदुगधणुपहुत्तं सव्वाणंगुलअसंखभागलहु । विरि

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] सहस्रमहिषं

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥५७॥

साउठवाइणं ॥ नवठिईसंपयंउकायठिई। चउणगिंदिसुनेया। उस्सप्पिणीउ असंखिज्जा।

॥५१॥ तह्वेवणंतिउ अणंता। संखिज्जा वाससहस्स विगलेसु। पंचिंदितिरिनराणं। सत्तट्ठभव

उक्कोसा ॥५२॥ सव्वेसिंपि जहन्ना। अंतमुहुत्तं भवेयकाएय। जोयणसहस्समहियं। एगिंदि

देहमुक्कोसं ॥५३॥ बितिचउरिंदिसरीरं। बारसजोयणतिकोसचउकोसं। जोयण

सहस्सपणिंदिय उहेवुछं विसेसंतु ॥५४॥ अंगुलअसंखभागो। सुहुमनिगोउ

२५

३४

| पर्याया | सूक्ष्मकीव | कुमारमृति | सिकतावे | मनसिला करवाल | काकरा | पाषाण |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आयुस्थिति | वर्षसहस्र | वर्ष१२सहस्र | वर्ष१४सहस्र | वर्ष१६सहस्र | १८सहस्र | २२सहस्र |

[illegible] तमोनाग | [illegible] कृष्ण१०३ | ७८ | ऊर्ध्वस्य [illegible]

अपलियाअसंखेसा॥४८॥ [illegible] स्सा

सर्वनीपरिमाण | मयूर सिसु पदु निश्चि श्रवश्य | वासकोडि पतल ६७०कोडि

यपरिमाण।सयरिरवुवासकोडिउ

| | | |
|---|---|---|
| भुजपरिसर्पगर्भ | गोधानकुलादि | पूर्वकोटिवर्ष |
| उरपरसर्पगर्भ | सर्पाकलुंदा | पूर्वकोटिवर्ष |
| जलचरगर्भजःसम | मत्स्याजाति | पूर्वकोटिवर्ष |
| खचरगर्भज | मोरहंसपंखी | पल्यनोअसंख्यातमुभाग |
| चतुष्पदगर्भज | महिषगजादि | ३पल्योपम२ |
| थलचरसमूर्छिम | गजमहिष | सहस्र८४ |
| खचरसमूर्छिम | पंखिजाति | सहस्र७२ |
| उरपरिसर्पसमूर्छिम | सर्पादिजाति | सहस्र५३ |
| भुजपरिसर्पसमूर्छिम | गोहनकुलादि | सहस्र४२ |

मिकरस | अपर्ति वलीय पल्लपद | सहस्सा एकारकोडिवर्ष | बोधवा आ [illegible] वर्षमांहे | वासकोडीलं पूर्वना कोडिनी संख्याकही ७०५६०००००००००० एतलेवर्षएकवर्ष | ५१ | स्थिति सम

एकाउ।बप्पन्नंचसहस्सा।बोधवावासकोडीणं॥५१॥एस

छिमना आयुकहइछइ संमुच्छिम [illegible] पंचेंद्रीजीव [illegible] उपद१ | खचरतेपंखीनीजातिना वगलाप्रमुख | उरगति उरपरि सर्पाहि यासें | भुजपरिसर्पनोलि नकुलादिक४ | जिणदि प्यारनी उत्कृष्टीस्थिति | कम्मसो अनुक्रम महईवलवीजाणवी | वाससहस्सा १

मुछिमाणं दिअलपरउरगभुयगजिठठिइकमसो।वा

वरसनासह ससहस्स एलेवो | चोरासीसहस्रवर्ष स्थितिथलचरनी | बहोतेरिसहस्र वर्षस्थितिखचर पंखीजातिनी | त्रेपनहजार वर्षस्थिति उरपरिसर्पनी | बेतालीससहस्र वर्षस्थिति भुजपरिसर्पनी कही | ५२ | समाप्त हवे हवी

ससहस्साचुलसी।विसत्तरी तिपन्नबायाला॥५२॥पा

चालेतेउर पकिहीजइ

यउआउ२२हजार | पत्रिणनाति वेंद्रीतेंद्री २३उरिंद्री२नइं | बारवर्षआयुवेंद्री उउकृष्ट | उपापणदिनउत्कृष्टवासरि नवइआयुतेंद्रीउ | मम हीन उआ

गतितिदिणवेइंदियाईखं॥बारसवासा१२णपणदिणछण

सुरनेरईय जीवउत्कृ ष्ट | तिपलियछप्वेंद्री नैत्रिणपल्योपम उआयुसही | तिर्यच एवमा नेवतीर्यंचनैउत्कृ ष्टीस्थितिकही | वलीपृथ्वीकायमाहेतिनि सप्पाय उत्कृष्ट इथीमरदक्षमाहि मलीउ | उदरकी मलमली ओरपी | वाउयर तेतुक्का येतिहेल पुक्काक | मन मि

मासइतिपलियविइजिछ॥४छासत्तायखवाबुयाम

लगुति खदैते ४ | महाराय एकरो हीना गमाना बांकरा वाली धरती | खरपुठवीइ खर पुथवीरेशिलापा वालपर्वतखंडइ मेद | पकम कमय पश्रा | सारकमा रवर्षइ | चवरसहस्र वर्ष | मीअमह स्रवर्ष

गसिलाएछराइखरपुठवी॥इगबारसचउदसोल

आउव | अवारहजारव र्षआउव | बावीससहस्रनार्आयुउत्कृष्टपणइं खरपृथ्वीपाषाणदलजालमु | गर्भजय गर्भजमु जपरिसर्पमोहन उलादिक | अलचरनैयरचर महादिक वेऊ गर्भजइ गईसहुकिमरहाय | गर्भीरगर्भगर्भजसर्प जातिसमारनइं | उत्कृष्टकोडि पुनर्वकोडि

१६ अठारए बावीसरररसमसदस्सं॥४७॥गभ्रत्रुयजलयरोभयगग्नोरयगउवको

| पृथ्वी | अप | तेउ | वाउ | वनस्पति | बेंद्री | तेंद्री | चौरेंद्री | पंचेंद्री |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२ हजार | ७ हजार | ३ दिन | ३ हजार | १० हजार | १२ वर्ष | ४९ दिन | ६ मास | पल्य ३ |

वर्ष ओ | उत्कृष्ट उत्कृष्ट कइंकहइं | गभिजउत्पन्न गर्भजच उत्पद्यथीपरुत | पक्षिसुं गर्भजयंत्रीपा मीजातितिरजं | तिपलिया तिपल्योपम गर्भजउत्कृ उ

डिउछासा॥गभ्भिवुउपयपक्के खुपलि

स्फटिकरत्नीपरहमहा उज्वलस्त्नावबइ | तेसिद्धसिला ऊपरि | इगजोयणएकजोय णनइअंतरेबेहमे | लोगंतोलो कांतछइ | तछाति णसर्व | सिद्धसिद्ध सिद्धनी स्थितिछे

| पुरुष | पुरुष | पुरुष | स्त्री | स्त्री | स्त्री | नपुंस | नपुंस | नपुंस |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पुरुष | स्त्री | नपुंस | स्त्री | पुरुष | नपुंस | नपुंस | स्त्री | पुरुष |
| १०८ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ' | १० |
| समय ३२ | ४८ | ६० | ७२ | ८४ | ९६ | १०२ | १०८ | |
| समय ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | |

उत्कृष्टमुक्ति विरहकालमास६८१इ२हइ

जघन्यमुक्तिविरहकालएकसमयतांइरहइ

तिन्निसया-तीसास इंधनुष | तिन्नीसा-तेत्री सधनुषश्२२२ | धनुषनोत्री जोभागव ली | कोसनइंछठ्ठभागइ ||

ताफलिहनिमला | तव्वरिमजोयणंतो | लोगंतोतत्थसिद्ध

सिद्धस्था ३८ | अकामश-कुन मध्यतेसमेवि | पैतालीसलाख-विस्त लादैसनागतें विषइ | अठेवय आठ | योजनतुंबाल्लस्पते जामप छुतेसिद्धसिलानुंछइ | चरम-दे हनइं

वक्त

विश ||४४|| मज्झमझदेसभाए अट्ठेवजोयणाइंबाहल्लं च

घटतां-अंतेश घटतां अंगते विषइं | अजलतुंड्रअंतपातली छइसिद्धसिला || अंगुलसंखे-अंगुलनइसंख्यातमइंभागइ मांखीनीपांखसमानसूक्ष्मछइ

मंतेसु अइतणुइ अंगुलसंखिज्जइभागं ||४५||

जेपरमोगाहोयंपरमअवगा हना | तातेतिणिकारणसे सिद्धकोस नइंछट्ठेभागिरह्याछइ

तिन्निसयातित्तीसा धणुतिभागोयकोसछब्भागो | जंपरमोगाहोयं | तातेकोसस्सछब्भागो

पातलइंस्थितिप्रमुखननबारे करीमनुष्यगतिनोविचारक सोएत्रीजुंबारसमाप्त || एवैस्थितिप्रमुखनवबारतीर्थं चगतिमांहिनला-विवरीनेक हइछइ || एवैस्थितिबारकहेछे बावीससहस्रवर्षह्दृथ्वी लगु | सातसहस्रवर्षअप्काय | त्रिणसहस्रवर्ष वाउकाय | दससहस्रवर्षआउव नस्पतीकायनुं | इगुणपंचासवर्षनीहुआर२ जालिया

||४६|| मणुयगइदारंसमत्तं | तिरियदारंतन्नइ || बावीससगतिदसवाससहस्सा

एगायहोयरखणी अहेव अंगुलेहिसाहीआ एसाखलुसिद्धाणं जहन्नोगा

हणा जिया ||४७||

वत्ताउर्तवं२ ...सोश्याउएकसिद्ध मइमोक्षजाइ ॥ ३७ ॥ सेस...उत्तमा कालेजाव | त्रिणवेदनानी पेना | दससहस्र...दसदस मोक्षजाइ | एगसम एकसमयनइ विपइ | विरहकारे विरहोकाल उ...विरहकालजघनीता

साढीएछेअठसयं ॥४८॥ सेसठ्ठजगरसिद्धसदसंसिझंतिएगसमयंमि ॥ विरहो बम्मा:

नउजाण वउ | लज्जा उत्कृष्ट विरहकाल छसमय नोजाणवउ | एकसमय | चवलोक उत्तमर एवलीज | इहलोकि परलोक माहेनथी ...पलकाइ ॥ ४८ ॥ आठसमय लगइ ३२ | सातसमय लगइ ४८ | छसमय लगइ ६० | पंचसमय लगी ७२ | च्यारसमय लगी ८४ | तिणसमय लगइ ९६ | बिसमय लगइ १०२ | एकसम

गुरुत्ता लक्कासमउवचणिमिद्दनठ्ठि ॥४९॥ अडवसगछदुपंचचउतितिन्निदोन्निर

यलगइ ... | सिज्झमाणेसु मोक्षजानइ विपडआई सिद्धथाइ तेहने | बत्तीसाइसु बत्तीस ...जतां ...कोमोमी ...अवपम | समया अन्ने समयमांहि ...समयथी | निरंतरं आंतरा जइ तिहांनिरंतरवइ | अंतरं एकसमय उपरांति अंतरं ॥ ४९ ॥ बत्तीसा बत्तीसआ ...समयलगइ | अडताली अडताली समानसम

इक्कोएवसिझमाणेसु ॥ बत्तीसाइसुसमया ॥ निरंतरं अंतरं उवरिं ॥५१॥ बत्तीसा२ अडय

यलगी१पछि अंतरं १ | साढि साढि ...मयलगी अंतरं | बहोत्तरि बहोत्तरि ...मयलगीमोक्षजाइ अंतरं | बोधव्वा जाणवा ...तरकाल ...जाणवउ | चउरासी चउरासीयासमयलगइ मोक्षजाइ पछइ अंतरं ९६इ | छिन्नुंछिन्नु समयलगइ लगतोमोक्षजाइ | एकसोदोयसमयनिरंतरमोक्षजाइ | एकसोआ ...इतीप

लाधवासठीद्द० बावत्तरीय८२ बोधव्वा ॥ चुलसीइछन्नुव बलवइएद्द उरद्दिय १०२ मह

समय लगीमोक्ष ...मानापमद ...नरमा ॥ ५१ ॥ सिद्धसिद्धसिलानोस्वरूपकहइछइ ॥ सर्वार्थसिद्धथकी१२योजनेउपरिसिद्धसिला सत्ताणयोजनप्रमाण | विक्खंभा विस्ता रलंबाई ...ऊर्ध्वनउवर्णीम | सिद्धसिला ... सिद्धनैरहवा

समंचा ॥५२॥ अथसिद्धसिलाविचार: ॥ गाया ॥ लक्खजोयणविक्खंभा सि...सि...

| पुरुषलिंग | स्त्रीलिंग | नपुंसक | गृहलिंगी | अन्यलिंगी | स्वलिंगी | समुद्रे |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०८ सीझइं | २० सीझइं | १० सीझइं | ४ सीझइं | १० सीझइं | १०८ सीझे | २ सीझइं |
| [illegible] | जघन्य अवगाहना २ | मध्यम अवगाहना | ऊर्ध्वलोके | अधोलोके | तिर्यग्लोके | शेष पाणीमें |
| २ सीझइं | ४ सीझइं | १०८ सीझइं | ४ सीझइं | २२ सीझइं | १०८ सीझइं | २ सीझइं |

जा अठसयं इगसमए जंति ते सिद्धिं

।२४। वीसऽहिदस नपुंसक पुरिसठ

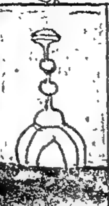
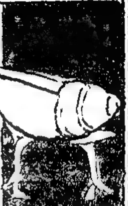
सयं तु एगसमएणं । सिझइ गिहि अन्नसलिंग चउदस१० अठहियसयं च ।२५। उक्

कोसमज्झिमदेहे उ । अठसयं उड्ड अहोतिरि अलोए । चोअवावीसं २२ सठसयं दुसमुद्

तिन्नि सेसजले ।२६। नरयतिरियागया दस १० नरदेवगई य वीस २० अठसयं ।२

चक्रवापधञ्नाल | छत्र | दंडहस्तरत्न२ अनी | चर्मरत्न४ धप्रमाण | खड्गरत्न५ ३२ अंगु | कागणीरत्न६ ४ अंगु | मणिरत्न७ ३ अंगुल | पुरोहितरत्न पंचेंद्री ८

गजरत्न ९ | अश्वरत्न १० | सेनानी ११ | गाथापतिरत्न १२ | वार्द्धिकरत्न १३ | स्त्रीरत्न १४

| चक्ररत्न १ | धनुषरत्न २ | खड्गरत्न ३ | मणिरत्नकौस्तुभरत्न ४ | गदाकौमोदकीरत्न ५ | वनमालारत्नमाला ६ | पंचजन्यशंखरत्न ७ |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|  |  |  |  |  |  |  |

चक्ररत्न १ | धनुषरत्न २ | खड्गरत्न ३ | मणिरत्न ४ | गदारत्नपंचमी मोदकीता महाकुलाकर | मणि तिन वली | निश्चवनमाला-वनमालारत्नकदीक मनोहरसोहितावह्वसकर ६ | श्रीपंचजन्यनामाशंखोजन शत्रुत्वयपक्षीजयवारसरणं करणसकर | महाश्रमार्इंरयणाए सम्ना... गुणवकी

चक्रं १ धणुहं २ खग्गो ३ मणि ४ गया तहय होइ ५ वनमाला ६ संखो ७ सत्त इमाइं रयणा

...इं वासुदेवस्सुवि सुज्जंति। पंचसुवि पढमसंघयणो। दुगरुड्ढ रति

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ७ | एकेन्द्रीरत्न | | …ऊत्कृष्ट नीचे मे | ९ | चक्रव… गाढ गाथा मे… ग… रूप… …तपद …रत्न |
| ७ | पंचेन्द्रीरत्न | | | १ | |
| १५ | साधुपद | | | १ | |
| १६ | श्रावकपद | | | १ | |
| ७ | सम्यक्तपद | २ | … | १ | |
| १८ | मंडलीकराजा | २ | … रत्न | १ | |
| | एवं ८ पदवी पामे | ४ | चर्मरत्न | ५ | अलकारना आजीव ८ पद वी पामइ |
| | | ५ | खड्गरत्न | | |
| २ | बीजाथीमाह | ६ | मणिरत्न | | |
| | नमादेवलोक | ७ | कागणीरत्न | १ | चक्रवर्ति |
| | नादेवता ८ पदवी पामे | ८ | गजरत्न | २ | बलदेव |
| | | ९ | अश्वरत्न | ३ | तीर्थंकर |
| ७ | पंचेन्द्रीरत्न | | | ४ | साधुपद |
| ८ | चक्रवर्त्तिपद | २ | सोधर्मा ईशान नादेवता ४ पदवी पामे | ५ | केवली |
| ९ | वासुदेवपद | | | ६ | श्रावकपद |
| १० | बलदेवपद | | | ७ | सम्यक्तदृष्टी |
| ११ | तीर्थंकरपद | ९ | मा देवलोक पाचानुत्तरविमान थकना देवता १४ पदवी पामे | ८ | मंडलीक |
| १२ | केवलीपद | | | | एवं ८ पदवी पामे एवं २३ पदवी पामे |
| १३ | साधुपदवी | | | | |
| १४ | श्रावकपद | | | | |
| १५ | सम्यक्तपद | | | | |
| १६ | मंडलीकराजा | | | | |

॥ इहवे सातमे नरके ७ नारकना जीव पर पिता पर माता
इण पदवी ह्ये तेकिम अथ्याय ते विचरे २४ तीर्थंकर १२ च
क्रवर्त्ति ९ वासुदेव ९ बलदेव ९ प्रतिवासुदेव एवं ६३ शि
लाका पुरुष ते सना जीव ५९ ते केहा २४ तीर्थंकरना ज
व ना १२ चक्रवर्त्तिना १२ जीव तेकिम शांति १ कुंथ २ अर ३ ए
एवं तीन तीर्थंकर चक्रवर्त्ति जाणवा एवं २१ नव वासुदे
व ना ८ जीव तेकीम त्रिपिष्ठ नामा पहिलो वासुदेव ३
ते २४ मो तीर्थंकर थया एवं ५१ नव बलदेव ९ प्रतिवा
सुदेव एवं ५९ जीव जाणवा हिवे पिता ५२ तेकिम वा
सुदेव बलदेव ना पीता एक हीज होय तीन तीर्थंकर
चक्रवर्त्तिना पिता एक हीज एवं ५२ जाणवा माता ६०
तेकिम शांति १ कुंथु २ अरना थार अनै वली अनेती
र्थंकर तिणे करी माता इण ज्ञो पदवी इह जाणवी

| २८ पदवी ...कपद ...क्रपद ...लाक | | माना८मव्र चक्रवर्तिवत ८५पदवीपामे | | ७ मे८५ एवं८८पदवीपा मे एवं२स्स८पद वासिकपामे | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ...नानीकलाए पदवीपामे | १ | गाथापति | ७ | स्त्रीरत्नप | ७ | नरकनानी कला२पद | १० | वार्द्धकरत्न | ५ | खङ्गरत्न |
| गाथापति | २ | सेनापति | ८ | साधुपद | १ | गजरत्न | ११ | पुरोहितरत्न | ६ | मणिरत्न |
| सेनापति | ३ | वार्द्धकरत्न | ९ | श्रावकपद | २ | अश्वरत्न | १२ | अश्वरत्न | ७ | कागणीरत्न |
| वार्द्धक | ४ | पुरोहितपद | १० | सम्यक्त्वप | ३ | सम्यक्त्वपद | १३ | गजरत्न | ८ | सेनापति |
| पुरोहित | ५ | अश्वपदवी | ११ | मंडलीकरा | | एवं३पदवी पामे | १४ | स्त्रीरत्न | ९ | गाथापति |
| अश्वरत्न | ६ | गजरत्नपदवी | | एवं११पदवी पामे | १० | भवनपती | १५ | चक्रवर्ति | १० | वार्द्धिकरत्न |
| गजरत्न | ७ | स्त्रीरत्नपद | ६ | नरकनान कला१०प दवीपामे | ११ | अंतरनाकी | १६ | बलदेव | ११ | पुरोहितपद |
| स्त्रीरत्नपद | ८ | केवलीपद | १ | गाथापति | ५ | ज्योतिषीना | १७ | केवल | १२ | अश्वरत्न |
| तीर्थंकरप | ९ | साधुपद | २ | सेनापति | | नाकला११ पदवीपामे | १८ | साधुपद | १३ | गजरत्न |
| केवलपद | १० | श्रावकपद | ३ | वार्द्धकरत्न | १ | चक्ररत्न | १९ | श्रावक | १४ | स्त्रीरत्न |
| साधुपदवी | ११ | सम्यक्त्वपद | ४ | पुरोहितप | २ | छत्ररत्न | २० | सम्यक्त्व | १५ | केवलीरत्न |
| श्रावकपद | १२ | मंडलीकराजा एवं१२पदवीपामे | ५ | अश्वपदवी | ३ | दंडरत्न | २१ | मंडलीक पदवीपामे | १६ | साधुपदवी |
| सम्यक्त्वप | ५ | नरकनानीक लोा११पदवी | ६ | गजरत्न | ४ | चर्मरत्न | ५ | पृथ्वी१५१२ वनस्पती३ पंचेंद्रीतिर्यंच ४ मनुष्य५१ मालाजीव५ पदवीपामे | १७ | श्रावकपदवी |
| मंडलीकराज पा१२पदवी पामे | १ | गाथापति | ७ | स्त्रीरत्नप | ५ | खङ्गरत्न | १ | चक्ररत्न | १८ | सम्यक्त्वपद |
| | २ | सेनापति | ८ | श्रावकपद | ६ | मणिरत्न | २ | छत्ररत्न | १९ | मंडलीकराजाप एवं पृथ्वीयादिक पामे |
| रकनाजी पदवी१२ पामे | ३ | वार्द्धिकरत्न | ९ | सम्यक्त्वप | ७ | कागणीरत्न | ३ | दंडरत्न | ३ | बेंद्री तेंद्री चौरि द्री नानीकलाप दवी१८ पामे |
| | ४ | पुरोहितपद | १० | मंडलीक पदवी | ८ | सेनापति | ४ | चर्मरत्न | | |
| | ५ | अश्वपदवी | | | ९ | गाथापति | | | | |
| | | [illegible] नपदवी | | | | | | | | |

७२

कले। वियइत्तलेयकरिजस्या ॥३१॥ अथाया[illegible]॥

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अथत्रेवीसपदवीलिख्यते ॥ | | | | | | | | | | |
| १चक्ररत्न | २० | वर्द्धिकरत्न | १९ | कवलीपदवी | | नारकनारदप | १२ | केवलीपद | ३ | चार्द्धकररत्नपदवी |
| २ छत्ररत्न | ११ | पुरोहितरत्न | २० | साधुपदवी | | | १३ | साधुपदवी | ४ | पुरोहितपदवी |
| ३ दंडरत्न | १२ | अश्वरत्न | २१ | श्रावकपदवी | १ | गाथापति | १४ | श्रावकपद | ५ | अश्वरत्नपदवी |
| ४चर्मरत्न | १३ | गजरत्न | २२ | सम्यकदृष्टि | २ | सेनापति | १५ | सम्यकदृष्टी | ६ | गजरत्नपदवी |
| ५षकरत्न | १४ | स्त्रीरत्न एवं | २३ | मंडलीकपद | ३ | वार्द्धिकरत्न | १६ | मंडलीकपद | ७ | स्त्रीरत्नपदवी |
| ६ मणिरत्न | | ७ पंचेंद्रीरत्न | | एवं२३पदवी | ४ | पुरोहितरत्न | | राजपदवी१ | ८ | तीर्थंकरपदवी |
| ७ कागणीर | | १४पदवी होवै | | सर्वथाय | ५ | अश्वरत्न | | पदवी पामे | ९ | वासुदेवपदवी |
| त्न१७१७१ | १५ | तीर्थंकरपद | १ | पहिलीनरक | ६ | गजरत्न | २ | नारकनीक | १० | बलदेवपदवी |
| कै जीरत्न | १६ | चक्रवर्तिपद | | नानीकलाजा | ७ | स्त्रीरत्न | | ल्यापदवी१५ | ११ | केवलीपदवी |
| ८सेनापति- | १७ | वासुदेवपद | | वपदवी१६पा | ८ | तीर्थंकरपद | | पामे | १२ | साधुपदवी |
| ९गाथापतिर | १८ | बलदेवपद | | मे७एकेंद्रीनप | ९ | चक्रवर्तिपद | | | १३ | श्रावकपदवी |
| | | | | मे त्रीप१६प६ | १० | वासुदेवपद | १ | गाथापतिपद | १४ | मंडलीकराजपद |
| | | | | यारत्नतेपामे | ११ | बलदेवपद | २ | सेनापतिपद | | वीएवं पदवीपा |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ५८ | तेभ्यःऽपर्याप्ता बादरऽग्निकायऽसंख्यातगुणा | ७५ | तेभ्यःपतितसम्यक्त्वऽनंतगुणाधिक | ९२ | तेभ्यःमिथ्यादृष्टयोविशेषाधिकाः |
| ५९ | तेभ्यःऽपर्याप्ताबादरप्रत्येकवनस्पतीऽसंख्यातगु | ७६ | तेभ्यःसिद्धाऽनंतगुणाधिका | ९३ | तेभ्यःअविरताःविशेषाधिकाः |
| ६० | तेभ्यःऽपर्याप्ताबादरनिगोदऽसंख्यातगुणा | ७७ | तेभ्यःपर्याप्तबादरवनस्पतयोऽनंतगुणा | ९४ | तेभ्यःसकषायाःविशेषाधिकाः |
| ६१ | तेभ्यःऽपर्याप्तबादरपृथ्वीकायसंख्यातगुणा | ७८ | तेभ्यःसामान्यतःपर्याप्तबादरःविशेषाधिका | ९५ | तेभ्यःछद्मस्थाविशेषाधिकाः |
| ६२ | तेभ्यःऽपर्याप्तबादरऽपकायऽसंख्यातगुणा | ७९ | तेभ्यःऽपर्याप्तबादरवनस्पतीऽसंख्यातगुणा | ९६ | तेभ्यःसयोगिनोविशेषाधिकाः |
| ६३ | तेभ्यःऽपर्याप्तबादरवायुकायऽसंख्यातगुणा | ८० | तेभ्यःऽपर्याप्ताबादरविशेषाधिका | ९७ | तेभ्यःजीवाःविशेषाधिकाः |
| [illegible] | तेभ्यःऽपर्याप्तसूक्ष्मऽग्निकायऽसंख्यातगुणा | ८१ | तेभ्यःबादरजीवाविशेषाधि | ९८ | तेभ्यःसर्वजीवाविशेषाधिका |
| ६५ | तेभ्यःऽपर्याप्तसूक्ष्मपृथ्वीकायविशेषासंख्यातगु | ८२ | तेभ्यःसूक्ष्मऽपर्याप्तवनस्पतीऽसंख्यातगुणा | | सविर्जथीशरीरपलजीवघोनापकेनाजीवनई |
| ६६ | तेभ्यःऽपर्याप्तसूक्ष्मऽपकायविशेषाधिक | ८३ | तेभ्यःसूक्ष्मऽपर्याप्ताःविशेषाधिका | | श्रीशरीरजवर्तजलकार्ण॰ |
| ६७ | तेभ्यःऽपर्याप्त[illegible]काय | ८४ | तेभ्यःसूक्ष्मापर्याप्तवनस्पतीयोसंख्यातगुणा | | |
| ६८ | तेभ्यःपर्याप्तसूक्ष्मऽग्निकायसंख्यातगुणा | ८५ | तेभ्यःपर्याप्तासूक्ष्मविशेषाधिकाः | | |
| ६९ | तेभ्यःपर्याप्तसूक्ष्मपृथ्वीविशेषाधिक | ८६ | तेभ्यः[illegible]जीवाःविशेषाधिका | | |
| ७० | तेभ्यःपर्याप्तसूक्ष्मऽपकायाविशेषाधिका | ८७ | [illegible]जीवाःविशेषाधिका | | |
| ७१ | तेभ्यःपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायाविशे[illegible] | ८८ | तेभ्यःनिगोदजीवाःविशेषाधिका | | |
| ७२ | तेभ्यःऽपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदाऽसंख्या[illegible] | ८९ | तेभ्यःवनस्पतीजीवाविशेषाधिका | | |
| ७३ | तेभ्यःपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदाःसं[illegible]गुणा | ९० | तेभ्यःएकेंद्रियाःविशेषाधिका | | |
| ७४ | तेभ्यः[illegible] | ९१ | तेभ्यःतिर्यंचविशेषाधिका | | |

९८ बोल अल्पबहुत्व [illegible]

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | गर्भजमनुष्य स्तोकाः सर्वस्तोका | २० | तेभ्यः [illegible] पृथ्वीनारका असंख्यातगुणा | ३९ | अनुत्तरविमानवासी देवाः असंख्यातगुणा [illegible] |
| २ | गर्भजमनुष्यस्त्रियः संख्यातगुणा | २१ | तेभ्यः नागदेवाः असंख्यातगुणा | ४० | [illegible] ज्योतिष्कदेवाः संख्यातगुणाधिकाः |
| ३ | तेभ्यः पर्याप्तबादरतेजस्कायिका [illegible] | २२ | तेभ्यः सनत्कुमारदेवाः असंख्यातगुणा | ४१ | तेभ्यः ज्योतिष्कदेव्यः संख्यातगुणाधिकाः |
| ४ | तेभ्यः अनुत्तरविमानवासी [illegible] | २३ | तेभ्यः द्वितीयपृथ्वीनारकाः असंख्यातगु | ४२ | तेभ्यः खेचरतिर्यग्नपुंसकाः संख्यातगुणा |
| ५ | तेभ्यः उपरितनग्रैवेयक [illegible] देवाः संख्यातगु | २४ | तेभ्यः सम्मूर्छिममनुष्याः असंख्यातगुणा | ४३ | तेभ्यः स्थलचरतिर्यग्नपुंसकाः संख्यातगुणा |
| ६ | तेभ्यः मध्यमग्रैवेयक [illegible] देवाः संख्या | २५ | तेभ्यः [illegible] देवाः असंख्यातगुणा | ४४ | तेभ्यः जलचरतिर्यग्नपुंसकाः संख्यातगुणा |
| ७ | तेभ्यः अधस्तनग्रैवेयक [illegible] देवाः संख्यातगुणा | २६ | तेभ्यः ईशानदेवाः असंख्यातगुणाः | ४५ | तेभ्यः पर्याप्तचतुरिन्द्रियाः संख्यातगुणाः |
| ८ | तेभ्यः अच्युतकल्पवासी देवाः संख्यातगुणा | २७ | तेभ्यः सौधर्मदेवाः संख्यातगुणा | ४६ | तेभ्यः पर्याप्तपञ्चेन्द्रियाः विशेषाधिकाः |
| ९ | तेभ्यः आरणदेवाः संख्यातगुणा | २८ | तेभ्यः सौधर्मदेव्यः संख्यातगुणाधिका | ४७ | तेभ्यः पर्याप्तद्वीन्द्रियाः विशेषाधिकाः |
| १० | तेभ्यः प्राणत [illegible] कल्पवासी देवाः संख्यात | २९ | तेभ्यः भवनपतिदेवाः असंख्यातगुणा | ४८ | तेभ्यः पर्याप्तत्रीन्द्रियाः विशेषाधिकाः |
| ११ | तेभ्यः आनत [illegible] कल्पवासी देवाः संख्यात | ३० | तेभ्यः भवनपतिदेव्यः संख्यातगुणा | ४९ | तेभ्यः पर्याप्तपञ्चेन्द्रियाः विशेषाधिकाः |
| १२ | तेभ्यः सप्तमीनारकीजीवाः असंख्यातगुणा | ३१ | तेभ्यः रत्नप्रभानारकाः असंख्या | ५० | तेभ्यः अपर्याप्तचतुरिन्द्रियाः विशेषाधिकाः |
| १३ | तेभ्यः षष्ठपृथ्वीनारकाः असंख्यातगुणा | ३२ | तेभ्यः खेचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्पु० संख्यातगुणा | ५१ | तेभ्यः अपर्याप्तत्रीन्द्रियाः विशेषाधिकाः |
| १४ | तेभ्यः सहस्रारकल्पवासी देवाः असंख्यात | ३३ | तेभ्यः खेचरपञ्चेन्द्रियस्त्रियः संख्यात | ५२ | तेभ्यः अपर्याप्तद्वीन्द्रियाः विशेषाधिकाः |
| १५ | तेभ्यः महाशुक्रदेवाः असंख्यातगुणा | ३४ | तेभ्यः स्थलपञ्चेन्द्रियगर्भजतिर्यक्पुरुषाः संख्यात | ५३ | तेभ्यः बादरपर्याप्तप्रत्येकवनस्पतिः असंख्यात |
| १६ | तेभ्यः पञ्चमनरकनारकीः असंख्यात | ३५ | तेभ्यः स्थलपञ्चेन्द्रियगर्भजस्त्रीयः संख्यातगु | ५४ | तेभ्यः बादरनिगोदपर्याप्ताः असंख्यातगुणा |
| १७ | तेभ्यः लान्तककल्पदेवाः असंख्यातगुणा | ३६ | तेभ्यः जलचरपुरुषः संख्यातगुणा | ५५ | तेभ्यः बादरपर्याप्तपृथ्वीकायाः असंख्यातगुणा |
| १८ | तेभ्यः चतुर्थपृथ्वीनारकाः असंख्यातगुणा | ३७ | तेभ्यः जलचरस्त्रियः संख्यातगुणा | ५६ | तेभ्यः बादरपर्याप्तअप्कायः असंख्यातगुणा |
| १९ | तेभ्यः ब्रह्मदेवलोकदेवाः असंख्या [illegible] | ३८ | तेभ्यः व्यन्तरदेवाः संख्यातगुणाधिकाः | ५७ | तेभ्यः बादरपर्याप्ताः वायुकायः असंख्यातगु |

[illegible] आवर्त्ता [illegible] गुणा [illegible] [illegible] [illegible]

वग्रावलीए उरल सिंके तिरुडोस ॥२०॥ निरुवहांगय पज्जति संखाय लद्धि एए दिं

[illegible] ॥२१॥ [illegible]

ह्निदि रि तु य ल २ अरिहा ३ जिण य जइ प दि सिद्दयम्मा उ दु ढ विकमा ॥२१॥ रयणा ० अ

[illegible]

हिगावय ३ वन्नाहि हु उ मु रु अकमि णं । पइ उ ढ विगा

[illegible] ॥२२॥ [illegible]

उयहं ३ वाय इ जाससमिइ गहं ॥२३॥ निरयदारंसा

[illegible]

मसं

| ७ नरकेगति | | आगतियंत्र ॥ |
|---|---|---|
| रत्नप्रभा | ५ सनीयामरीजाय | पंचेंद्रि १ हरि २ बलदेव ३ अरिहंत ४ चक्र जीव जती ६ देशविरति ७ सम्यक्त्वपामे |
| शर्करा २ | भुजपरिसर्प मरीजाइ | वासुदेव १ बलदेव २ अरिहंत ३ केवली ४ देशविरति ५ यती ६ सम्यक्त्वपामे ७ |
| वालुकप्रभा | पंखीयामरीजाइ | अरिहंत १ केवली २ यती ३ देशविरति ४ सम्यक्त्वपामे ५ |
| पंकप्रभा | सिंहमरीजाइ | केवली १ यती २ देशविरति ३ सम्यक्त्वपामे ४ |
| धूमप्रभा | उरपरिसर्प मरीजाइ | यती १ देशविरति २ सम्यक्त्वपामे |
| तमप्रभा | स्त्रीमरीनेजाइ | देशविरति १ सम्यक्त्वपामे २ |
| तमतमप्रभा | पंचेंद्रीने तिर्यंच | १ सम्यक्त्वपामे १ ॥ |

मनुष्यजाय

सीहउरगु | उरगारि | दिजा | ... बाणी छठ्ठी जाइ | ... लेकइ | ... ति सर्वजीवनर जी इत्यादिक ... || सत्तम-अनेसातमीनरक पृथ्वीमाहे मनुष्य मे ... तिजाइ बीजा नजाइ || १६ || तिर्यंचगति माहि ... वालनेसर्प जाति

सा ह उरगि त्थि जा [illegible] छट्ठि | कमसो [illegible] | सत्तमि पुढविं मच्छ मणुआ || १६ || वालादा

वाघप्र मुख | ... | जलचरमत्स्या दिकजातिना ... | नरग-एसथन ... | आरकूरी-अने ... | जंति जाइ | पुणी-वलीएजीव जाति नरएसु-नरकगतिमाहे जपिण | वाऊ लि-एखव नवाऊ ... हिकबइ | नउण-नथीनिर्यंतिनिश्चय ... निमाहे पणिजाइ

डी पक्खी | जलयर नर गा गया उ अट्ठ कूरा | जंति पुणो नरएसु | बाऊ हि ऐणं न उण नियमो

|| १७ || छिवेह संघयणऊ आश्री नरकगतिकहे है ... | गमणं-जेवठासंघयणनाधणी | आनेकीलिकादिक आगिला ... पसंघयणनेधणीते ... | इकिक्कि-एक एक आगिला | पुढवी-पृथ्वीना ... तेएकएकनारकनय ... | छिवेलेस्या आश्रीगतिकहे है ...

|| १७ || दो पढम पुढविगमणं | छेवट्ठेणं कीलियाइ संघयणे | इक्किक्क पुढवि वुड्ढी आइति

नरएसु-नरकगतिमाहे है विणआरजेस्यान थी | || १८ || छिवेह लेस्यासातेनरकेकहे है ... नरकेकापोतले ... | तइयाए-त्रीजी पृथ्वीमाहे | कापोत-अनेनीलएदो यलेस्या ... | नीलपंकाए चोथीनरक पृथ्वीमाहे एकनीललेस्या छे | धूमाए-पां चमीधूमप्र भापृथ्वीमा | किन्ह-नील-... लेस्यानीललेस्या छे

लेसा उ नरएसु || १८ || काउ काउ तह याए काउनीला य नील पंकाए धूमाए किन्ह न

कसुपरा आगलिवलीसा तमीएर पृथ्वीमाहे | किन्हाउ-केवलकृष्णले स्या छे ... || १९ || सुरनारयाणए देवताने अने नारकीने ... | ताउ दव्व-तेद्रव्य लेस्या ... | अवट्ठिया-पणथकी तेस्या ... निरंतर ... कहीछे

लाउ कसु किन्हाकंतिलेसाउ || १९ || सुरनारयाण ताउ दव्वलेसा अवट्ठियाउ भणिया | अ

वगाहनाद्वारं। अथ उपपातचवनद्वारद्वयमाह॥ सत्तसु चउवीसमुहू सगपनर

दिणेग दु चउ छम्मासा। उववाय चवण विरहो ओहे बारसमुहुत्त गुरु लहु उ द्वावि

समओ संखा पुण सुरसमा मुणेयव्वा। संखाउ पज्ज पणिंदि। तिरि नर जंति नरएसु॥१४॥ मि

च्छदिट्ठि महारंभ परिग्गहो तिव्वकोह निस्सीलो। निरयाउयं निबंधइ पावमई रुद्दपरिण

मो॥१५॥ असन्नि ... सरिसवपक्खी

| नरक७ | घमा१ | वंशा२ | सेला३ | अंजना४ | रिष्टा५ | मघा६ | माघवती७ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विरहकाल | २४ मुहूर्त विरहकाल | ७ दिन विरहकाल | १५ दिन विरहकाल | १ मास विरहकाल | २ मास विरहकाल | ४ मास विरहकाल | ६ मास विरहकाल |

सीहचउ... पव्वउपद सर्पादि दिजा ... आसीहद्व जाइ | तसा उक्कोसे | उक्कोसे ... सर्वजीव ... || सत्तम-आनेसातमीनारकपृथ्वीमांहे मनुष्य मारे उत्कृष्टपणे मनुष्य मरीने एवीयजा ॥१६॥ तिर्यंचगतिमांहे इ पण छे कालते सर्व | चक्रवर्त्तिनारकी ... तकतेराज

ता तेचियते सरीरना ३ | हिवमनु तेतो पृथ्वीये देहली पृथ्वीये हतां | पढमप० पहिलापर तरने विषे

उल्लो ॥७॥ ...तं वियद्धिमि उव्वीए पढमपयरं

बीयबे-तेर माहलाण छु ॥१७॥ | ...बीजुबजे अंगिग्गी जावतरनी पृथ्वी | तिकरति अ० बीजा पृथ्वीनेबीजा वतरे हाथ अंगुल वधतो जाइ

...२५तलपृथ्वीवाला बीजे पतरे ... ॥ ९अवधजाइ

मि बीयए ॥८॥ तं चेउ णेग समग पयरस्स अड्ढअंगुल बीयाइ पयरवुड्ढि जं वे तिकरति अंगुलकरे

करसनयं-त्रीजी पृथ्वीनावीजा पतरथी सातहाथ साडाउगणीस आंगुल प्रमाण शरीर पतरे २ वधतो जाइ ॥१८॥ | चउथी नरक पृथ्वीनाजा पतरथी पांचधनुष बावीस आंगुल प्रमाण शरीर पतरे २ वधारीजे इतिवारे ६२ धनु० २ || पांचमी पृथ्वीनावीजा पतरथी पनरधनुष पंच आंगुल प्रमाण शरीर मलगाथकी पतरे दीघ वधारीजे इति वारे १२५ धनु०

सत्त अंगुलासइ पणवीसं ॥९॥ पणधणु अंगुलवीसं ४ पणसधणु दोलि इत्थसड्डाय र+

छठी पृथ्वीनावीजा पतरथी बासठिधनुषदोढ अने हाथ पतरे २ वधारीइतिवारे २५० धनु० | पणधणु-बीजी पृथ्वीमां नीप पृथ्वीना | पतर ना | वुड्ढि-शरीरवधारिवानी परीते जाणवी ॥१९॥ | इय-इ पैरीते | साहावि-स्वाभाविक ते भवधारणीय शरीरमान | उत्तरवि-अनेउत्तरवे क्रियशरीर जेनवु विकुर्वे इवे

पासट्ठि धणु इत्थसड्डा ॥१०॥ पण उव्वीपयर वुड्ढी इमा ॥११॥ इयसाहाविय देहो उत्तरवेउव्विय

तदुगणो-तेमू लगासरीरथकी दुणोसमाण शरीरजो | दुवि-तेसरीरवेक्रि भवधारणीया उत्तरवैक्रीय रस्व ५ | जहन्न-जघन्य पण अंगुलने | अंगुल-भवधारणी यशरीरस्थल अंकना हनानीपजताथकी | संखंसो-उत्तरवे क्रियशरीर संख्यातो अंगुलने असंख्यात० ॥२०॥ | उक्कं-उको | नारकानो नारकीनो || अवगा ह | ९ मे अंग प्रमाण अवगाहना जाण वा०

तं दुगुणं ॥ दुविहा वि जहन्न कमा ॥ अंगुल असंख संखंसो ॥१२॥ उत्तरकानारकानां

अंगुलने असं णोतमेनाणे०

॥जंदेहपमाणं इत्यादिगाथानोअर्थविशेषपणे कहेछे येशरीरप्रमाणऊपरलीपृथ्वीनेछेहलेप्रतरकहेते
हजशरीरमांन आगलीपृथ्वीनेप्रथमप्रतरेजाणवुं एछेतेशरीरप्रमाणयेतलाधनुषकहेतेहनाहाथक
रीयलि ऊपरलाजेहाथकहेतेनेचाकरीनेएछे तेसर्वहाथना२४चोवीसगुणाकीजे तिवारेतेसर्वहाथना
आंगुलथाइ एछेतेआंगुलमांहेवलीपाछिलाशरीरमाननाआंगुलनेलाकरीये अंकराशिथइतेहनेरवी
जीपृथ्वीप्रमुखपृथ्वीतिहांजेजेनेलाप्रतरछइ तेप्रतरमांहिएकऊणोकरीएछेजेजिहांप्रतरप्रछइरहो
तिहांतेप्रतरसाथइभागदेतांजेआंकपामीजइवलताते अंकनातिणयं पृथ्वीजाप्रतरथकीआंगुल१६
थइधनुष१२भागदेवाथीजे हाथवांधतां२४नोभाग(धनुष१६४नोभागदीजे इमसर्वगामायेदेहमाननीह
ढिकहीछइ तेतिणइगामलाने१ तेजिमरत्नप्रभानाप्रथमपृथ्वीनेतेरमेप्रतरे७धनुष३हाथ६अंगलदेह
नछे एहतेहजेदेहमांनवीजीपृथ्वीने प्रथमप्रतरेजाणवुं। तेसातधनुषचउगुणाकरतां२८हाथथया
तेमांहेपाछलात्रहाथघालतां३१हाथथया दसगणरहातें७५आंगुलावांटेआव्यातेहनापाछलाहाथवं
तां३हाथ अंगु०३थयाएहथकाटहवियाइ इमशरीतइंआगलिधनरकेकीजे॥

(७) किंवक्रियपणेदेहमानकहे रयणा०रह माहरा: | इक्कतियं०मिप | आणप०तेहथलीआ || उपलो०माहावपलआंगुल मूलकप्राथीअधिकअधिक जुहीरुहितवधारीयइ || जातिरस०जिवारली तेरमुप्रतरसिद्धउ ७४०२७०इआ०३

॥७॥रयणाइपढमपयरे हत्थतियंदेहमाणमणुपयरं बप्पन्नंगुलसड्ढा वुड्ढीजातेरि

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

| | [illegible] | | | | | | | | | | | | | | ॥ द्वितीय नरके ॥ | | | | | | | | | | | | तृतीय नरके | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रतर | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | प्रतर | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | प्रतर | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| धनुष | ० | १ | १ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | धनु | ७ | ८ | ९ | १० | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १४ | १५ | धनु | १५ | १७ | १९ | २१ | २३ | २५ |
| हस्त | ३ | १ | ३ | २ | ० | २ | १ | ३ | १ | ० | २ | ० | ३ | हस्त | ३ | २ | १ | ० | ३ | २ | २ | १ | ० | ३ | २ | हस्त | २ | २ | २ | १ | १ | १ |
| अंगुल | ० | ८॥ | १७ | १॥ | १० | १८॥ | ३ | ११॥ | २० | ४॥ | १३ | २१॥ | ६ | अंगु | ६ | ९ | १२ | १५ | १८ | २१ | ० | ३ | ६ | ९ | १२ | अंगु | १२ | ७॥ | ३ | २२॥ | १८ | १३॥ |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रतर | ७ | ८ | ९ | प्रतर | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | प्रतर | १ | २ | ३ | ४ | ५ | प्रतर | १ | २ | ३ | प्रतर | १ |
| धनुष | २७ | २९ | ३१ | धनु | ३५ | ३९ | ४४ | ४८ | ५३ | ५७ | ६२ | धनु | ७५ | ८७ | १०० | ११२ | १२५ | धनु | [illegible] | [illegible] | [illegible] | धनु | ५०० |
| हस्त | १ | १ | १ | हस्त | १ | १ | २ | ३ | ० | १ | २ | हस्त | २ | ० | ३ | १ | ० | हस्त | ० | २ | ० | हस्त | ० |
| अंगुल | ९ | ४॥ | ० | अंगु | ० | २० | १६ | १२ | ८ | ४ | ० | अंगु | ० | १२ | ० | १२ | ० | अंगु | ० | ० | ० | अंगु | ० |

[illegible]

[illegible]

रत्नप्रभापृथ्वीकेविषेपाथ दपाथडे आंतरोजाणवो ॥ जघा— कयो अनगाञोजाना११०३ योजनान ४ शर्करिप्रभापृथ्वीकेविषेजाणवो ॥

पणपन्नअंतरयंनिगोञ्चियजोयणतिन्नि॥४॥ पंचेवसयापिकरणनावनीयंके

केवलज्ञानीनोउपदर्श तेदिपीदेहउ ॥ सत्तावन सत्तसहस ९७०० ॥ बीयाए बीजी पृथ्वी विषे | पन्नअंतर पाथडे आंतरू | दोहजारह | पणद्दु पंच्च लर७५ | तिन्निसय तीन सेंउ३००

वलमानमुपदरीन॥ सत्ताणवइसयाइं बीयाएपन्नअंतरंदोज्जपणद्दुवारितिन्निसया

वारस बारहजा ११३७५ | त्रीजी बालुकप्रभापृथ्वीविषे पाथडे आंतर जाणवो ५ बावन बावन | सयं एकसो १०० | सोलसहस सोलह हजार १६१६६ | सेकप्रभा पृथ्वीविषे | पाथडे आंतरो जाणवो दोविभागा एकपरियो जननीरजाण ॥

वारसयसहस्सतईयाए॥५॥ बावन्नसयंसोलसहस्सा॥ पंकाएदोविन्नागायरद्दद्धत्त

अढाइज अढाइ सेर५० ॥ पणवी पंचवीस हजा २२५२५० | धूमप्रभापंचमीपृथ्वीविषे पाथडे आंतरजाणवो ६ बावन बावन हजार ५२००० ॥ पंचेवहवे पांचसेंयो

होइजसयाइं पणवीससहस्सधूमाए२५२५०॥६॥ बावन्नसहस्साइं पंचेवहवंतिज्ज

जन ५२५०० ॥ पन्नअंतर पाथडे | आंतर | एयंतु जा | छठीतमप्रभापृथ्वीविषे आंतरजाणवो ७ सातमी पृथ्वी | अपइट्ठ | पकतम तरठे

पणसयाइं पन्नअंतरमेयंतु छठीपुढवीइमेयचेप२५५०॥७॥ समप्पालवेलए

| नरकनाम | घमा १ | [illegible] | [illegible]जा ३ | उजन ४ | रिष्ठ | [illegible] | [illegible] |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इरा | १४६९ | [illegible] | ४७८ | २३१ | ८५ | | १ |
| अस्र | १४९२ | ९०८ | १०४ | २४४ | ९२ | १४ | १ |
| चउरस्र | १४७२ | ८९६ | ४९२ | ३३२ | ८८ | १० | ० |
| सर्वग्र | ४४३३ | २६९५ | १४८५ | ७०७ | २६५ | ६३ | ५ |
| पुष्फाव | २९९५५ | २४९०३ | १४९८५ | ९९९२९ | २९९५३ | ४९९३३ | ६ |

द्वि०३·छिपीयसहस्सए कयोजनकंचोडे ॥ उप्पिंगो मध्ये सहस्रयोजनवर्जी अंडं कुर्वतो फिर ॥

दि३घणोसहस्सं उप्पिं सेक्कठउसहस्सं उ

मज्झे·कृतको विवाले सहस्रयोजननीपोलार ॥ तिन्निसहस्र·चिया मह सहस्रयोजनकं चा ॥ सिया निरयास उल्लानर काया साऊड ॥

मज्झेसहस्सफुसरा तिन्निसहस्सूसियानि

(२०) अधु·छन रत्नप्रथ्वी तिले | द्विगेरवरदै· बलिराक्षोलेक परिरक्षिकेपा | जोयण·ए कुरूजार योजनेषर लोत्राने | बावन्न·साढीबावन्न सहस्रयोजनवृतिका फ्रेवलिरकपरि | चरिमाए·छेहे सीसातमीए स्थ्वीमाहे ॥ छठवी·ए लोइथवी | निरय·नरकावा सारहितठइ ॥ निरया·नरका

रया ॥२०॥ बसुद्धिवरिजोयणसहस्सबावन्नसड्ढचरिमाए छट्ठीए नरयरहियं तिर

वासाहोपतेषा कती इथ वीसर्वनीपोलारतमा हुं सातिनरके (२१) द्विवेसर्वनरकेअतर२२नाअंतरमांत विससहस्स·वि सोजोजन | अत्राए·इथ्थवीमा इतेग कीजइ | तिसहस्स ग्रोपरिं | पढेविणएहजार योजनना यावे नरकावासा | नियपयर्वरहिते आपणा२प्रतरके रहेतलागुणकी | कुणसहि·पेठे येजिदो अतर जे रहे तिदोते

यासेसंमिसवासु ॥२१॥ बिसहस्सूण उट्ठवी तिसहस्सगुणेहिं नियपयरेहिं कुणरूव

तला अंतरमाहे। रूवरहो एकुकनए कहे गकीजेवलै | कायणा·श्री कसा गुरुत्ना जाता | पच्छंतरयं·ना दितोगुकोपाथना रनो आंतरलाने वि·चलो (२२) तेसीया·श्री सीयोजन | पांचसेयोज न ॥ इग्यारहजार योजन ॥

णियपयरेहिं ताथियापत्थंतरयं ॥२२॥ तेसीयापंचसयाएक्कारसेव जोयणसहस्स र

अंतोकहतामध्यना गहवहाकंहतांवाट लाअइ | वाहिर... गिचउरंसकहता चउरणाअइ || हेठाकहताहेठलि:खुर पसंगाणपाठणानीयार तेहनहसंस्थाइ || संथियारहा अइ | परंमअसंतउगा धसहितअइ ((९९)) ...परतनरकावास... त्रिणहजारयोजनउ चा: सघुसर्वनरकावा साउंचाअइ

# अंतोवट्टा वहिं चउरंसा | हिगारखुरप्पसंगणा | संठियापरमजगंधा | ९९ || तिसहस्सुच्चास

संख्याता योजन १ | अनइअसंख्या तायोजनना २ | विष्कंभाया-विस्तारत पहिलीअनेआयाम तेलांपणकहइ || पणयाल-पइतालीसलाषयोजनप्रमा णसीमंतनामनरकावासोअइ | लरको-अने एकलाषयो जनरो | अपइ-ठेहलो अपइठाणनरकानामोछे ((२९०))

## संखिमसंखिज्जा विच्छरायामा | पणयाललरकसीमंतउयालरकं अपइठाणो | २९०

| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कैनत | ४९ | ४८ | ४७ | ४६ | ४५ | ४४ | ४३ | ४२ | ४१ | ४० | ३९ | ३८ | ३७ | ३६ | ३५ |
| कथना | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| ब्रम | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| ठस | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ९६ | ९२ |
| वउश्रा | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ९६ | ९२ |

| | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कैनत | ३४ | ३३ | ३२ | ३१ | ३० | २९ | २८ | २७ | २६ | २५ | २४ | २३ | २२ | २१ | २० |
| कथना | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| ब्रम | [illegible] | ८५ | ८५ | ८१ | ७७ | ७७ | ७३ | ६९ | ६६ | ६५ | ६२ | ६१ | ५७ | ५३ | ५३ |
| ठस | ९२ | ८८ | ८४ | ८४ | ८० | ७६ | ७६ | ७२ | ६८ | ६८ | ६४ | ६० | ६० | ५६ | ५२ |
| वउश्रा | ८८ | ८८ | ८४ | ८० | ८० | ७६ | ७२ | ७२ | ६८ | ६४ | ६४ | ६० | ५६ | ५६ | ५२ |

| पंक्तिा | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पाथडा | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ |
| छ्रुम | ४८ | ४५ | [illegible] | ४१ | ३७ | ३७ | ३३ | २९ | २९ | २५ | २१ | २२ | १७ | १३ | १३ | ९ | ५ | ५ | १ |
| ऋत्र | [illegible] | [illegible] | ४४ | ४४ | ४० | ३६ | [illegible] | [illegible] | २८ | २८ | २४ | २० | २० | १६ | १२ | १२ | ८ | ४ | ४ |
| पतर | [illegible] | [illegible] | ४४ | ४० | ४० | [illegible] | [illegible] | [illegible] | २८ | २४ | २४ | २० | १६ | १६ | १२ | ८ | ८ | ४ | ० |

उपणनउया॥ पंचसयापन्ना अट्ठनउयासहस्सलक्खोद्दसयातदयाएसेवि

वक्कीर्ण जाणवा | पणसिया संख्यासी || वे स-वोद नरयप ॥९९ तेणउया नयाण | दोन्निस-दोयसे || नवनउ-निनाणउजार | उपरनवलाष

गया।पणसीयाचोद्दससयाउ॥९९॥तिणउयादोन्निसया।नवनउइसहस्सनवलक्खा

|| इतरापंकवत्ताश्थवी मे उष्कावक्कीर्णजाण वा || सत्तसया सातसे | दोतिकवै | सत्तदिया-सातअधि कइतराप क्रिंग तिवि- ॥९६॥

या।पंकाएसेढिगया।सत्तसयादोतिसत्तदिया।९६॥सत्तसयापणतीसा।नवनउइस

॥९७॥ नवनउइ-निनाणउजार ||

हस्सदोयलक्खाय।धूमाएसेढिगया।पन्नरदोसयाजंति॥९७॥ नवनउइसहस्सान

नवदेव-नवसे | द्वतिकवे बत्तीस-व तोस || उद्वी-बवीनकइथ वीके विपेअष्फावको एजाणवा | सेढीगया | कवै पंक्तिगति | नेवणक-तेस व दरजाणवा ॥९८॥ तेणंकहतीतेरनरका वासा

व्वेवसयाद्दवंतिबत्तीसा।उढबीएवढीए।सेढिगयादोतितेवन्ना॥९९॥ तेणंनरगावासा

मोजन | पहिलीनेविषेनरकावासो | रकावासानिगतिनिनेविषे ...जीवा ... बीजेविषे | १९५ नरकावासो ... | नेतेत्रीस ...

उढवीए। दोसयपंचासीया। पंचोत्तर दोलिवीयाए॥ए१॥ सत्ताणउयंसयं च तेतीस

...नेविषे ... वीस || ... नरकावासा ... नेविषे ... || सत्तत्रीस नरकावासा ... नेविषे || ओगणत्रीस नरकावासा ... नेविषे | (७३) तेरसह नरकावासा ... विषे

सयंसयं च पणवीसं। सत्तरि अउणूत्तरि सत्ततीसाय गुणतीसा॥ए२॥ तेरसगुद

... नरक पृथवीनेविषे जाणवा | सत्तसठि | पंचसठ || पंचाणसहस्र || पचाणसहस्रओगणत्रीसलाय || रत्नप्रभाई ... नरकावासा ... नरकावासा

चमीए। सत्तठीपंचसयं। पणनउयसहस्स नरक गुणतीसं रयणए सेढिगयावे

...नेविषे | (७४) अथ द्वितीय नरके ... || चउवीसनरक ... चउवीसलाख

यालसयाउतेतीसा॥ए३॥ सत्ताणवेसहस्सा। चोवीसं

तिसय-तीस ... || पंचाहियाउ-परि ... अधिक || वीयाएसे-ढी नीनरक ... || छवीससया ... 

नरक तिसयपंचहिया वीयाएसेढीए   छवीससया

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | रत्नप्रभा | प्रतरांतर | ११५८३ साः४१२ |
| २ | शर्करप्रभा | प्रतरांतर | ९७०० |
| ३ | वालुकप्रभा | प्रतरांतर | १२३७५ |
| ४ | पंकप्रभा | प्रतरांतर | १६१६६ साः८। |
| ५ | धूमप्रभा | प्रतरांतर | २५२५५० |
| ६ | तमप्रभा | प्रतरांतर | ५२५०० |
| ७ | तमतमप्रभा | प्रतरांतर | १०८००० |

१२

घ

जासत्तम... गैसातमीतमतमप्र सा ॥ ...सु · ४थ कुव ...ली ॥ दिसिइक्किकी दिसेचिकोपासे एकविमानवइ ॥ ...तेमा ...नकोइन ...तमीनरकपृथ्वी ...रखैतिलोप्र॥ ॥ दिवेसर्वआइपयरे · वाछितपतर नेविषेवलिकागतविमाननीसंष्या तुकरण इगदिसिसंखये एकदिसि नाविमाननीसंष्यायेतलाविमान ॥ अडयाल · अडयालकरी ने

एकइपासेंकांते विमान॥

जासत्तमसियपयरेसु दिसिइक्किक्कोविदिसिनत्थि ॥७७॥ इगपयरेगदिसिसंखअडया

चोविसा · तेमा हिलाप्रथमपरतो काविइ ॥ सगइसंखा तेमांहे थिचलोइंइकनर कावासोघालीइ ॥ तिवारेसर्वसंष्या गुणजइसी मंतपयरेजिमरमंततामप्र थमप्रतरे ॥ एगुणनउ · अोगणनेवुनरकावासाती नेसइतिमासीहे ३८९ तिम



अपइ · सात मीहपृथ्वीने विषइ

णाचउगुणासइगसंखा। जइसीमंतयपयरे एगुणनउयासयातिन्नि ॥७८॥ अपइ

पंचइ · अपय ठाणेपांचइ पांचनरकावा साछै ॥ पढमोमुह · प्र थमप्रतरनीमु षपृथ्वीसंज्ञा ॥ अंतिमोहवे भूमि · छेहला प्रतरनीभूमिपृथ्वीसंज्ञा छइ ॥ तेमुषना नरकावा सा८ ॥ अनेभूमि नानरका वासा२चे ॥ तिमसमास तिमेलाक रि ॥ पढयेपय प्तालेइ ना अर्ध करिइ ॥ प्रत्रगुणं · पछेतेअर्धजिहां जेतलाप्रतरहुइतिहां जेत लागुणोकीजेतिवारेहोइ

सबृधुणंसर्वआ वलिकाविमाननी संष्याजाणइसम झइ एरीतिदेवलो कनाविमाननीप रेजाणवीसातनर कापृथ्वीमाहेएरी ति॥

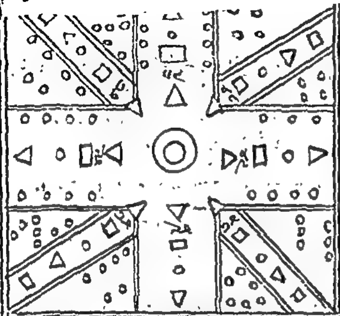
ठाणेपंचउ पढमोमुहमंतिमोहवइभूमी। मुहभूमिसमासद्धं पयरगुणंहोइ सव्वंध

॥७९॥ दिवेसर्वसंख्या · बावन्नसय · बावन्न सइ ॥ तिवन्ना · तेपन्नाए तलेएहजारइइ तेतेपन्नपरछया ॥ सत्तसु · सातनरक पृथ्वीमांहिसात बसंष्या ॥ आवली · आवलिकातेश्रेणि बद्धनरकावासाजाणवा ॥ सेस · अने शेषापुष्फा वकीर्णक ॥ तियासीलक्खा · नरका वासाआसीलाषनेरइरइ ४७

॥७९॥ बावन्नसयतिवन्ना सत्तसुपुढवीसुआवलीनिरया। सेसतियासीलक्खा॥

तिसयसिया · त्रिणसेंस इतालीसआगलि ॥ नवइस हस्सा · नवइजा रबे सातेनरकेविमानसं ष्या ॥ दिवेतेनरकावासानाकहेछे तिन्निसया तीनसौ३०० ॥ अउणनउया : निवासी ८९ प्रथमनेविषे३८९ ॥ दो · दो रासे ॥ तेणउयाय · त्रयाणं ॥ पहिलीरत्नप्र भापृथ्वीने

तिसयसयालानिवइसहस्सा॥८०॥ तिन्निसयाअउणनउया दोतेणउयायकंति



| पृथिवी | रत्नप्र नार | शर्करप्रभार | वालुकार | पंकप्रभा | धूमप्रभा | तमप्रभाद | तमःप्रभा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुख | २८८ | २०५ | १९७ | १२५ | ६९ | २९ | १ |
| भूमी | २९३ | २०५ | १३३ | ७७ | ३७ | १२ | ० |
| समाप्त | ६७२ | ४९० | २२० | २०२ | १०६ | ४२ | ० |
| ऊर्द्ध | २८२ | २७५ | १९१ | १०१ | ५२ | २१ | ० |
| प्रतर | १३ | ११ | ९ | ७ | ५ | ३ | १ |
| पंक्तिग्रि | [illegible] | २९८५ | १४८५ | ७०७ | २६५ | ६३ | ५ |
| पुष्पावकीर्ण | २९९५५०७ | २४९८३०५ | १४९८५१५ | [illegible] | [illegible]३५ | [illegible] | ० |
| सर्वाग्र | [illegible] | २५ ला | १५ ला | १० ला | ३ ला | १ ला | ५ |
| [illegible] | भूमि ५ | समा ३८४ | ऊर्द्ध १९७ | प्रतर २९ | पंक्ति [illegible] | पुष्प [illegible] | ८४ |

[illegible]

वला विदिसाजम य ला [illegible]

[illegible]

॥रत्नप्रभापृथ्वीप्रतरि [illegible]॥

| प्रतर | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सागर | ० | ० | ० | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा |
| उत्कृष्ट आयु | ९०/ह० | ९०/ला | पूर्व कोडी | १/१० | २/१० | ३/१० | ४/१० | ५/१० | ६/१० | ७/१० | ८/१० | ९/१० | १ |
| जघन्य आयु | १०/ह० | १०/ला | ९०/ला | पूर्व को | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा | सा |
| | | | | | १/१० | २/१० | ३/१० | ४/१० | ५/१० | ६/१० | ७/१० | ८/१० | ९/१० |

॥शर्करप्रभा आऊखायंत्र॥

| प्रतर | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सा | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ |
| भा: | २/११ | ४/११ | ६/११ | ८/११ | १०/११ | १/११ | ३/११ | ५/११ | ७/११ | ९/११ | ० |
| सा | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ |
| भा | ० | २/११ | ४/११ | ६/११ | ८/११ | १०/११ | १/११ | ३/११ | ५/११ | ७/११ | ९/११ |

॥वालुकप्रभा प्रतर आऊखा॥

| प्रतर | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सा | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ |
| भा: | ४/९ | ८/९ | ३/९ | ७/९ | २/९ | ६/९ | १/९ | ५/९ | ० |
| सा | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ |
| भा | ० | ४/९ | ८/९ | ३/९ | ७/९ | २/९ | ६/९ | १/९ | ५/९ |

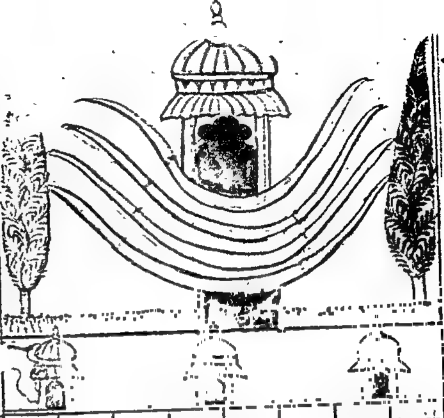
| प्र | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उत्कृ सा | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० |
| भा: | ३/७ | ६/७ | २/७ | ५/७ | १/७ | ४/७ | ० |
| जघ सा: | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ |
| भा: ज: | ० | ३/७ | ६/७ | २/७ | ५/७ | १/७ | ४/७ |

| प्र० | १ | २ | ३ | ४ | ५ |
|---|---|---|---|---|---|
| उ: सा | ११ | १२ | १४ | १५ | १७ |
| भा | २/५ | ४/५ | १/५ | ३/५ | ० |
| ज: सा | १० | ११ | १२ | १४ | १५ |
| भा | ० | २/५ | ४/५ | १/५ | ३/५ |

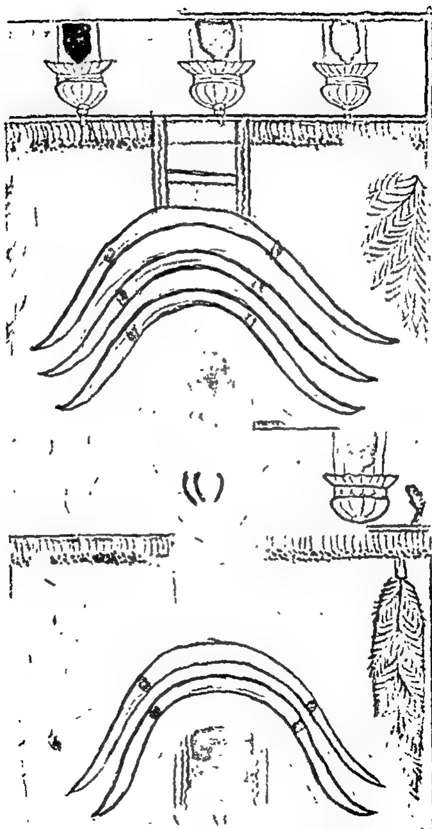
| प्र | १ | २ | ३ |
|---|---|---|---|
| उ: सा | १८ | २० | २२ |
| भा | २/३ | १/३ | ० |
| ज: सा | १७ | १८ | २० |
| भा ज: | ० | २/३ | १/३ |

| प्र | १ |
|---|---|
| उ: सा | ३३ |
| भा | ० |
| ज: सा | २२ |
| भा | ० |

॥अथ समस्त पृथ्वीव्यो
२ प्रथम रत्नप्रभा पृ
थवी मेरुपर्वतकं दो १
एकसहस्र यो० भूमि
मांहें तेहनें विषे कंपासे दक्षिण श्रेणि १ उत्तर श्रेणि छे २ प्रथम यो० १० मृत्तिकापिंड उर्द्ध यो० असी आकाश रूपे
एते मांहे ८ निकाय वाणव्यंतरनी वसइ छे १ वली १० यो० मृत्तिकापिंड ऊर्द्ध १०० यो० हेठलि ८०० योजन आका
शरूप तिहां पिशाचादिक ८ जाति व्यंतरनी वसइ छे वली १०० यो० मृत्तपिंड ऊर्द्ध सहस्र १ यो० भयाउर्द्ध यो०



| नरकनाम | रत्नप्रभा १ | शर्करप्रभा २ | वालुकप्रभा ३ | पंकप्रभा ४ | धूमप्रभा ५ | तमप्रभा ६. | तमतमप्रभा ७ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| घनोदधिवातवलय | योजन ६ | यो६गा१ ४६६६ हाथअंगु १६ | यो६गा१ ४६६६ हाथअंगु ल१६ | योजन ७ | यो७गा१ ४६६६ हाथअंगु १६ | यो७गा२ ४३६६६ हाथअंगु ल१६ | योजन ८ |
| घनवातादिवलय | योजन ४॥ | योजन ४गा३ | योजन ५ | योजन५ गाऊ१ | योजन५ गाऊ२ | योजन५ गाऊ३ | योजन ६ |
| तनुवातादिवलय | योजन १॥ | यो१गा१ ४६६६ हाथअंगु ल१६ | योजन१ गा३४१ ३३३ हा ३ अंगुल८ | योजन१ गाऊ२ | यो१गा२ ४६६६ हाथअंगु ल१६ | यो१गा३ ४३३३ हाथ१ ७ ल८ | योजन २ |
| सर्वमीलनवातवलयमान | योजन प्रमाण | यो१२गा २४१३३ २ हाथअंगु ल८ | यो१२गा ३४१३३ २ हाथ१ गुल१६ | योजन१ ४ वेमलौ ऽलोक | यो१४गा २४१३३ २ हाथ१ गुल८ | यो१५गा १०४० | यो१६ गलौऽ लोकहै |



होइजदसंखं·वइजि
मयथ्यांसंप्यातेञतु
ऋमे ॥ सतिनागगाउत्रो।१।एकुयो
जननात्रि।१।नागकोजेर
ह्वोत्रीजोनागसहितए
कगाक। जीवलेजे
मारे।एकगाकर ॥ उहितिमरली
त्रीजावलय
माहे गाकश्रतिनागो·
एकगाकगोत्री
जोनाग।१।सर्वगि
मेदेफलेवो



होइजदसंखं।सतिनागगाउयेगाउयेचा।तदगाउयतिनागो॥८४॥

[illegible]

[illegible] असीयळ वईसिजर अडवीस२ पांवीस२० अठा

[illegible]

[illegible] घणदद्दिं घणवायघणतणवाया

[illegible]

[illegible] घणउदहिपिंडो घणतणुवायागासो असंख

[illegible]

[illegible] उदहीवलयसंगहिया रया

[illegible]

[illegible] घणउदही घणतणवायाण

|| वज्रनरकावासे ४ || तमप्रभ नरकावास ५ || ...प्रनीयद्वेअवतिष्ठ जाणवा || खड्गिनरकावासो ७ || इंद्रप्र-१३ निरयानरकावासे ठकमुख्य || चउथीपंक्तप्रभा पृथ्वी ७३ ||

पहिली नरक इसीमंतो प्रतर योजन ४५ लाख प्रति दिन तिहां पृथली वेदना सहवी परमाधार्मीनी कृत

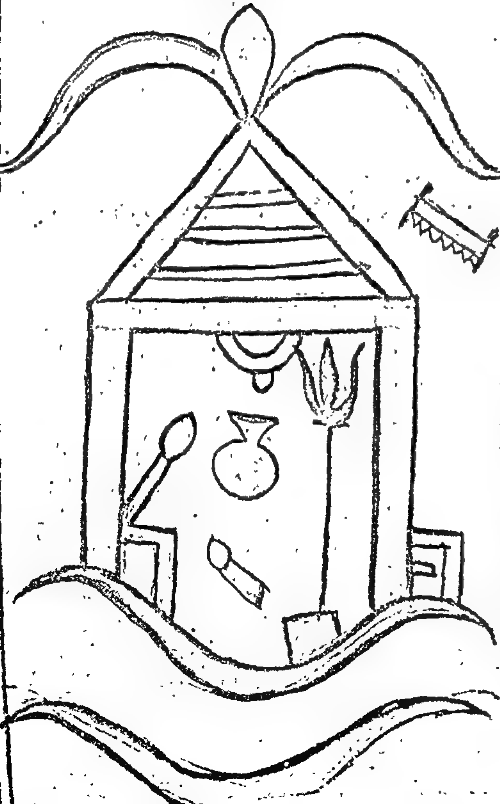
सातमी पृथवीयें ऽ पयठा णं प्रतर योजन १ लाख प्रमाण तिहां तली उपर साढा सा ऌह सागरोपम एकाण पासे साढा सात्ते सागरोपम बीजे पासे वेदना सहइ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धूमप्रभा नारूपमा ठेक्षम कृष्णागोत्र ५ पृथ्वी | अंधारी नारूप माटे तमप्रभा गोत्र ६ | महा अंधकारस्वरूपवे तेमाटे तमतमप्रभा गोत्र ७ पृथवी | कर्मेणप्र तुक्रमे | पुढवी एसा रत्नपृथ्वीना | गोत्राइ गोत्र जाण वा उलपवाना ७२ |

धूमपहा ५ तमपहा ६ तमतमपहा ७ कम्मेण पुढवीसगोत्ताइ ||

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| (५७) धर्म्मानाम पृथवी १ | वंसा पृथ्वी २ | सिला पृथवी त्रीजी ३ | अंजना नाम पृथवी ४ | रिष्टा नामा पृथवी ५ | मघा नाम पृथवी ६ | माघवती नाम पृथवी ७ |

५७ घम्मा १ वंसा २ सेला ३ अंजण ४ रिठा ५ मघा ६ माघवई ७



१गति २नरक ३स्थान ४प्रमाण ५स्पर्श ६लेश्या ७उपपात ८उद्वर्तन ९आयु १०अवगाहना ११तीर्थंकर १२चक्रवर्ति १३अवधि १४उपयोग १५समुद्घात १६वेदना १७परमाधामी १८विरहकाल

| नाम नरक ७ | गोत्र नरक नाम | उत्कृ आयु | जघन्य आयु | पिंडप्रमाण जाडपणु | नरकावासा | प्रतर थिक्कता | घनवात थल | तनवात थल | अलोक जाल | उपपात विरह | देहमान शरीर | प्रतर ४९ | अवधि क्षेत्र उत्कृष्ट | अवधि जघन्य | आहार लेना | लेश्या नरक | वेदना प्रकार | परमाधामी वेदना विचार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रत्नप्र भा१ | घम्मा १ | सागर १ | वर्ष १० हजार | १लाख८० हजारजो जनादिक | ३० लाख | योजन १३ | योजन ४॥ | योजन छभाग | योजन १२ | मुहूर्त २४ | ७धनु ३हाथ ६अंगुल | १३ | गाऊ ४ | गाऊ ३॥ | ... | कापोत ३ | शीत उष्ण | क्षेत्र वेदना परमाधामीकृत |
| शर्कर प्रभा२ | वंसा २ | सागर ३ | सागर १ | १लाख३२ हजारजोजन | २५ लाख | योजन | योजन ४ गाऊ १ | योजन ४ | योजन | दिन ७ | १५धनु २हाथ १२ अंगुल | ११ | गाऊ ३॥ | गाऊ ३ | | कापोत ३ | उष्ण वेदना | क्षेत्र वेदना परमाधामीकृत४ |
| वालुप्रभा ३ | सेला ३ | सागर ७ | सागर ३ | १लाख२८ हजार योजन | १५ लाख | योजन | योजन ४ | योजन | योजन | दिन १५ | ३१धनु १हाथ | ९ | गाऊ ३ | गाऊ २॥ | | कापोत नील३ | उष्ण वेदना १ | क्षेत्र वेदना परमाधामी४ |
| पंकप्र भा४ | अंजना ४ | सागर १० | सागर ७ | १लाख२० हजारयोजन | १० लाख | योजन २० | योजन ५ | योजन | योजन | मास १ | ६२धनु २हाथ | ७ | गाऊ २॥ | गाऊ २ | | नील३ | उष्ण ३ | क्षेत्र वेदना परमाधामीकृत |
| धूमप्र भा५ | रिष्टा ५ | सागर १७ | सागर १० | १लाख१८ हजारयोजन | ३ लाख | योजन | योज५ गाऊ | योजन | योजन | मास २ | १२५ धनुष | ५ | गाउ २ | गाउ १॥ | | नील कृष्ण२ | उष्ण शीत वेदना | क्षेत्र वेदना परमाधामी |
| तमप्र भा६ | मघा ६ | सागर २२ | सागर १७ | १लाख१६ हजार योजन | ९९९९५ | योजन | योजन गाऊ | योजन | योजन | मास ४ | २५० धनुः | ३ | गाऊ १॥ | गाऊ १ | | कृष्ण १ | शीत वेदना १ | क्षेत्र वेदना २ |
| तमतम प्र भा७ | माघ वती ७ | सागर ३३ | सागर २२ | १लाख०८ हजार योजन | पांच नरकावासा | यो० | यो० | यो० | योजन | मास ६ | ५०० धनुष | १ | गाउ १ | गाउ ॥ | | कृष्ण १ | शीत वेदना २ | क्षेत्र वेदना जाणवी |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| सीत वेदना | उष्णवे दना | क्षुधा वेदना | घणी तृषावे दना | घणी खस नीवेद ना | नयनी वेदना | घणी व्याधि नीवेद ना | घणी ज्वरनी वेदना | घणी ज्वलित दना | घणी शोक नीवेद ना |

[illegible] || [illegible] || [illegible] || [illegible]

विपद्रसो द्विविणा। पसुरणयाविप्रंचस

[illegible] (१६) ||

तिसुपरमाद्भमिसकयावि॥ दावेमण

गइसंवाणा। नेयागंधायवन्नरसफासा। अगुरुलहुआसद्दासुद्दा। असुद्दाविपयत्ताना

(१७) [illegible] || सीतवे दना १ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] || [illegible] || [illegible] || [illegible]

रणा॥१७॥ निरयाद्दसविहवेयणा। सीर उसिण र खुह ३ पिवासायथा कंडूप रवसद्द जरउद

[illegible] || [illegible] | [illegible] | [illegible] (१८) [illegible] | [illegible] | [illegible] || [illegible]

ह्य। भयएण सोगं १० चेव वयंति॥ धारयणप्पद १ सक्करपद्द २ वालुयपद्द ३ पंकपद्दाय ४

ममपुढवीगुर । मुय तेमहि हन्निति सानत्तर । उपेइखिति क इथ्वीने विषे । तिजिहां
वह
। जिहां उ कठीजे । हेठउवरी ए ते स्थितिनि हेठलीनरक इथ्वीमां तेहि
६
। कमेर्णं अनुक्रमे । कणिगा ते स्थिति कनि इने जघन्य
पछे
। दसवाससहस्सा अनेदस हजार वरस नी स्थिति । पढमाए पहि लीरत्नप्रभा थ्वीमांहि

रसुउढवीसुविई। जिनउवरिमाहिठउवरीए। होइकमेणकणिगा। दसवाससहस्सपढमा

(५२) नवइसमसहस्स । रत्नप्रभाने विषे इ स्पाथडे । नेऊ हजारवरसनी पाथडे ए ... पचर्णस्थितिउत्कृ । बीजे पाथडे सर्व ... तिउत्कृष्टी । अयरदसभागो । एकसागरोपमनू ... । एगेगभाग ... । जायरतेर ...

ए॥ ५२॥ नवइसमसहस्सलक्खा। उव्वाणंकोडिअयरदसभागो। इगेगभागवुड्ढी। जायरतेर

(५३) ... दसवाससहस्स ... ससेसु ... उवरि ...

सपयरे॥ ५३॥ इअजिट्ठ जहन्ना पुण। दसवाससहस्सपयरडगो। ससेसु उवरिजिट्ठा। अहो

(५४) ... हिवेसात इथ्वीने सर्व पाथडे उत्कृष्ट स्थितिलाभवानो कारणगाथा ...

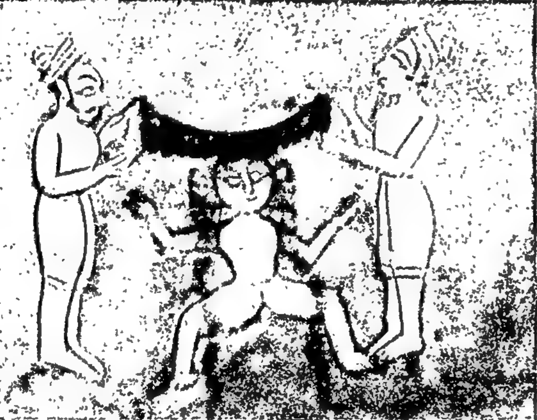
णियपइगुडवि॥ ५४॥ उवरिखिइठिइविसेसो। सगपयरविहत्तइच्छसंगुणिओ। उवरि

(५५) हिवे सातनरकेवेदना स्वरूप ... सत्तसु सातनरके ...

मखिइठिइसहिओ। इच्छियपयरंमि उक्कोसा॥ ५५॥ सत्तसुखित्तजवेयणा। अन्नुन्नकय

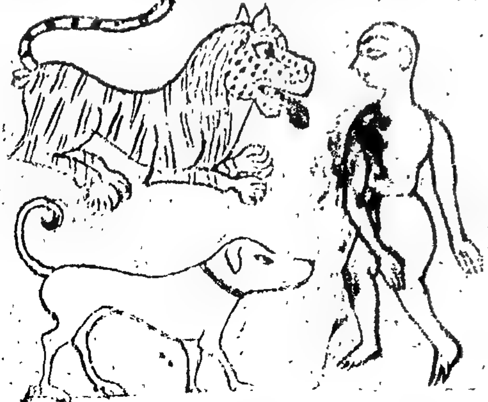
वजुनर कावासो ४ | तमाः रकावा ५ | यानीयघ्रम्नति जालक | खदि नरकावा सो ७ | इंडय १इ निरया न डकमुप्प रकावासो | चउघीपक उत्ताइथ्थी बइ

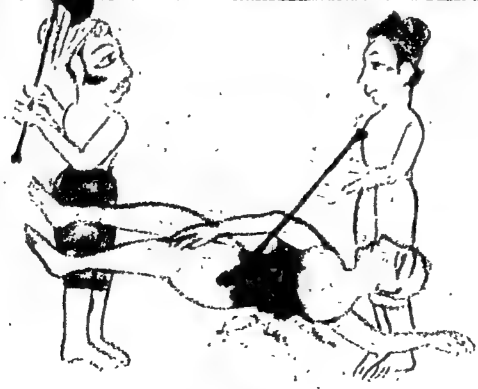











[illegible] करणप्रमुचावे

[illegible] फालइनरकीनइ

वणर पंक्तुगीवळोमि असंखदीवोदहियतिरियत्र ।। ५७ ।। इय देवाण नारयां ।। अथ न

छिरपमुहंनारयाणत्रयामिदुग रतिलिरुसर७ दसर१० सतर१७ अयरबावीसर२२ तित्तीसा३३ ।।

वेतरणीनदीमुं तापाने छे | कूडसामलीरात्रीकद्दत्र | सामलीवृक्षतलपडीया | धीतामातीअपरमूर्वेहै



पल्लग।पनरसकुलरिपुउयंगवुप्फजवा।तिरियमणुएसुउही।नाणविदंसणठिअनाणिओ॥३७॥

| |
|---|
| नथवपलीअंतरदेवनाशहरअवउयणकदेवर |
| वैमानिकसक:देवताहउंअवधिअधिकुंदेषे |
| नारकी।ज्योतिषीरनिरउअपलकशाहरअवधिदेषे |
| मनुष्य।तीर्यंच२अनेकप्रकारदेषेपरमाहेदेषे |
| भविरनदेषरगउपनीजातिनीपरे५वधइकरी |

तिरियें।नरनेकिताएकसअधिकुंअवधिज्ञानकाइ। अहोहि। उड्ढी।नवनवपतायंतरने अवधिज्ञानडर। बहुओ तेथको। वैमानकदेवता नेअवधिज्ञान। वलीएथ वीकरे। विध मनपक

उहेनवणवणाणं।वङ्गोवेमाणियाणपोउई

नारया नारका नर। जोइसरया तिषीनेर। तिरियं अवधिक्षे नघणुदेषे। नरा मनु ष्यने। तिरियांनं तीर्यंचने। अणेगविहो अनेक प्रकारे अवधिज्ञाने रादेषेपंचप्रकार

नारयजोइसतिरियं नरतिरियाणंअणेगविहं

नवनाईसु नवनागअनुपनवनवनिति कायनादेवता जंतिवीयाए रत्नाप्रभा जीनरकपृथ्वीनाविषेजाय॥ तईअं त्री जीपृथ्वी। असुरकुमारादेव तीजीनरकपृथ्वीसुधी जाइ तथा वीजाइ

।जोइसंखवणस्पढमसुउवि।नवनागाईसुजंतिवीयाए॥तईअंअसुरकुमारा

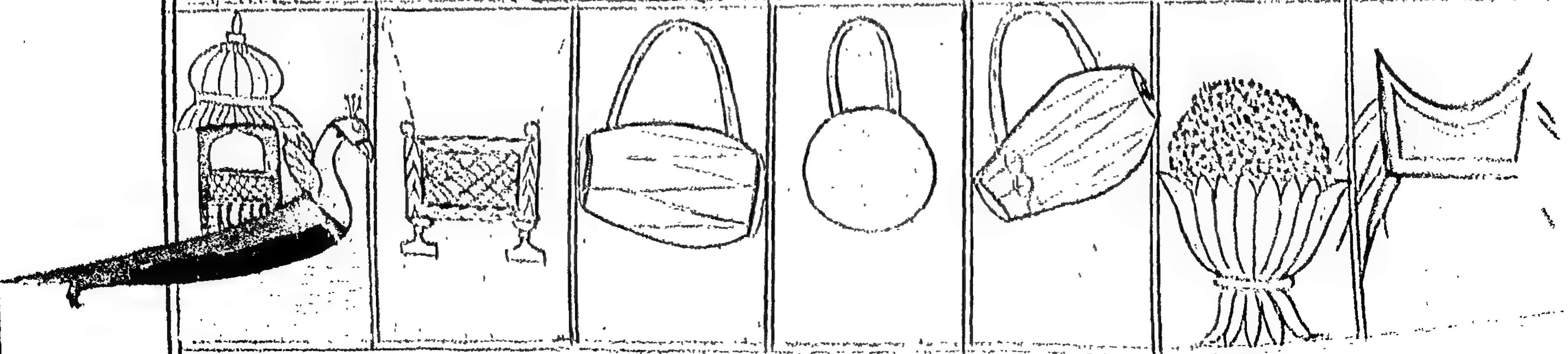
ज्योति देवता। जंति जाइ। सत्तमुविसा त ईपृथ्वीलगे कार्यहेतेजाइ। तेवैमानिकवारदेवलोकनाउ इंद्रलगेअच्युतदेवलो कलगेजाइ॥ भवणवई भवने देवताजातिनाजु घनपति। तेदेवता जंतिजाइ। जावसोहम्मे जिहां लगीसौधर्मदेवलो कनीमर्यादेतिहां॥ जोतिष देवता

माणिअजंतिसत्तमुवि।५णस्सिउहुंअच्चुयाजाव।भवणवईजावजंतिसोहम्मो।जोइ

पणवीसजोयणलक्ख । नारयभवणवणजोइसकप्पाणं ।

विज्जाणुत्तराण य जहसंखं ओहिआगारा ॥ तप्पागारे

| नारकी देव लोक घना वधि ज्ञान | | | |
|---|---|---|---|
| १ | नारकी | थी२५ | [illegible] |
| २ | भवन | थी२५ | [illegible] |
| ३ | व्यंतर | थी२५ | [illegible] |
| ४ | ज्योति | थी२५ | [illegible] |
| ५ | वैमान | थी२५ | मृदंगने आकार |
| ६ | [illegible] | थी२५ | [illegible] |



दिवेदेवलोकारग्रैवेयकादिकेअवधिज्ञानस्वरूपकहेछे
प्रथमनादेवलोकनादेवता | पहिलीपृथ्वीलगे अवधिज्ञानदेषे | बिदेवलोक | बिदेवलोक | बिदेवलोक | बीजात्रीजाचोथादेवलोकनापृथ्वी | पांचमाछठादेवलोकनादेवताचोथीपृथ्वीताइ

दोपढमकप्पुढविं। दोदोदोबीयतईय

चउ उवरिमउवरिमनवमोदसमोइग्यारमोबारमो | चउ उवरिम उपरिलानवमोदसमोइग्यारमोबारमो४देवलोकनादेवता अवधिज्ञानेकरी | पासंतीदेषवे | पंचमिधूमविपांचमीनरके

गचउत्थिं। चउउवरिमउहीए। पासंतिपंचमि

छठीपृथ्वीलगेदेव | ((४३)) | छट्ठीपृथ्वीलगे | हेठिलाग्रैवेयकनादेवतादेषइ || सातमीनरकपृथ्वीलगे उपलाग्रैवेयकनादेषे

छविं। छट्ठि। गेविज्जा। सत्तमिमियरेअ

अनुत्तरविमानतात्रसनाडीकरी | किंचितेकाइकऊणलोकनालिमात्रदेषे | येलोकनालचउदराजप्रमाणदेषइ | असंखदीवउदधिअनेअसंख्याताद्वीपसमुद्रलगे | तिरियंतु तीर्छालोकमाहेतेदेवतादेषेसर्वसौधर्मादिकविमाननासी | ((४४)) | बहुपयरं पजूं देषे असंख्याता | उवरिमगा उपरलाकल्पनादेवतानीचेनेदेषविसुद्धपणेघणुंअवधिज्ञानना

रसुराउ। किंचूण। लोगनालिं। असंखदीवुदहितिरियंच॥४४॥ बहुअयरंउवरिमा।

अन | सविमाननीचूलियाधजाइ पोतानाविमाननीचूलिकानीधजालगेदेषइ | अवधिज्ञानदेषइ | ऊणद्धसागरे जेहदेवतानेआऊअर्धसागरोपमकाइकऊणउछ | संखजोयणा देवतासंख्याताजोजनलगेअवधिज्ञानकरीदेषे | तप्परमसंखा तेअर्धसागरोपमथीअधिकआऊखानादेवताअसंख्याताजोजनलगदेषे | ((४५)) | जघन्यथकीअवधिज्ञानस्थिति

उड्ढंसविमाणचूलियधयाइ। ऊणद्धसागरेसंखजोयणतप्परमसंखा॥४५॥पण

| | | |
|---|---|---|
| सौधर्मईशाननादेवता | २ | १रत्नप्रभासीमदेषइ |
| सनत्कुमारमाहेंद्र४देवता | २ | २बीजीशर्करासीमदेषइ |
| ब्रह्मलांतकद्देवता | २ | ३त्रीजीवालुकप्रभासीमदेषे |
| शुक्रसहस्रारनादेवता | २ | ४चोथीपंकप्रभासीमदेषइ |
| आनतप्राणतआरणअच्युतनादेव | ४ | पांचमीधूमप्रभासीमदेषइ |
| पहिलाग्रैवेयकनादेवता | ६ | छठमप्रभासीमदेषइ |
| ऊपरिलाग्रैवेयकनादेवता | २ | ७तमतमासीमदेषइ |

[illegible]

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

[illegible]

पुप्फदंत सत्ता आनिकाणा वरसंपुण्णा मिन्न विवे विसु

[illegible]

न किणा वि दिवा पुणं वरसीलकहाणामुवेवामहा

[illegible]

सिरिवंसं काला जम्मं तरनि दिवाय आगसंरीरदवंसा सिवंकसं दिकीमा विसा

[illegible]

रूपरा सासाम सवकत्ता आलेही नम कम्पयकत्ता नरनवनाखुदं नयंतिसुरा ॥ श्रवसार

[illegible]

पवजीना गासराकगं सेवा मनाय लोगस्स उज्जोयतो तिणं नरकद्दे वासे णजारवेति ॥ ३१॥

थोव-तेसि । लवा-लवकहुी ॥२७॥ लवस-तेससीहस७७ ॥ होइमुहुत्तो नवविकरएक
सातगुणाएर इतेसासोस्वास लवगयेथके मुहूर्तकालीरप्रनीइमेमि-
तोयस्तोएक थएकर

रयोग १ प्राणस्ताक ७ स्तोकिलवय७७लवेमुहूर्तः मुहूर्तनां २०८२३ स्वासतिम ३० मुहूर्तः होरात्रि तिणरासासोस्वास १९३१९० जाणवा मासे उस्वास ३२९५७०० जाणवा वर्षे उस्वास ४०७४०४०० जाणवा शतवर्षनासासोस्वास ४०७४०४०००० एतला जाणवा शरीरस्वासतन प्रमाण इसीसे जाजाणवी

थोवसत्तगुणेलवो ॥२७॥ लवसत्तहत्तरीए होइमुहुत्तो इमेमि

एकमहूर्तना | सगसय-तीस | सहस्स-सातसे | तीसगुणोते-ते | अहोरत्ते-एक ॥२८॥ लिवा
उगमा-साति | मेसीससेएत | तिऊसर-उपरि | सासोस्वासतो | अहोरात्रना एक
स्वाससंख्या | तेतीन | त्रिहोत्तरि ३७७३ | सगुणोकीजे | जिवारें लोप

उसासा सगतीसम तिउत्तर तीसगुणते अहोरत्तो ॥२९॥ ल-

तेरहजार ११३१५०० सा | समयसयं | आयरसंखयादेवे-येएकसा ॥ परकेहि-तेह | ऊसासो-ए | वाससहस-अनेएक | आहारो-आ
सोम्यासहाइ | ऊपरिएक | गरोपमस्थितिनीयदेवताछड | नेएकपखना | ऊसोसास्वा | हजारवरसगयाए | हारलेवानीइ
| मानेकाऊ | | योडहको | सेलेहके | का | छाऊपजे
इ ए

रकं तेरसहस्सा । नउसयं अवरसंखयादेवा । परके दिउसासो । वाससहस्सेहिं आहा

॥२९॥ दसवास-येदेवतानेद | ऊपरि-तेह | समयाईएक | जावसागरे-जियारलगेएक ॥ दिवस-तेहनेउत्कृष्टपणइनव ॥ तेहथउत्कृष्ट
सहजारवरसआऊपी | णा ऊपरिते | समयथकी | सागरोपमकाइकऊछुआ ॥ दिवसे आहारनी यावांछाइजाके ॥ वस्कोतहाथ
नी स्थिति | अधिक | मांडी | ऊमुहूर्तइजिहत | नवमुहूर्ते अनेउत्कृष्ट | एकीनहपर्ये

॥२९॥ दसवाससहस्सुवरिं समयाई जावसागरे ऊणं । दिवसमुहुत्तपुहुत्ता । आहा

थकीऊसासितारेसा ॥३०॥ आहारस्वरूपकहेछे ॥ तयाइ-थेल | सरिडिक | तेलोमाहारकहि ॥ अनेप्रक्षेप | ऊणवल
सलेइरनआहारस्रा | शरीरेण-शरी अंजाहार ॥ चामडीदपुष | री ए आह | ये ॥ आहारतक |
ससुंफीजाहिस्साति | रे कराने | अंगनइ | रले | | दिइये |

सासऊसासाणं ॥३०॥ सिरिरेणोआहारो । तइयो फासेण लोमआहारो । पक्खेवाहारो ।

सो॥हरनवणी सिरीसवं॥अणंतगुणो होइ तत्तो वि॥२३॥ किन्हा नीला काऊ तेऊ प

म्हा य पसुक्कलेसा उ६॥ भवणवणपढमचउलेसा जोइसकप्पदुगे तेऊ॥२४॥ कप्पतिय

पम्हलेसा लंताइसु सुक्कलेस हुंति सुरा॥ कणगाभ पउमकेसर वन्ना दुसु तिसु उव

रि धवला॥२५॥ दसवाससहस्साइं जहन्नमाउं धरंति जे देवा॥ तेसिं चउत्थाहारो सत्तहि

थोवेहिं ऊसासो॥२६॥ आहिवाहिविमुक्कस्स नीसासूसास एगगो पाणू सत्त इमे थोवो

(२४) द्विषेसंसार... देवगतिजीव आहारीक ... अणाहारी ... जीव विग्रहगतिकरेते सर्व ... कवलिसमुद्घात करते ... | केवलि समुद्घातकरअनेवठ | ... अयोगिगु णठाणेवर्त्तजे जीवछ | सिद्धना ... अणाहारी ... आहारमाळेको ... | सेसाआहारगा जीवा ...

॥२५॥ विग्गहगइमावन्ना। केवलिणो समुहया अजोगी य। सिद्धा य अणाहारा। सेसा आह

| ॥देवतानेइहवलजीवस्तुनजवइदेवतानुजरूपकहे | |
|---|---|
| १ | नेत्रनमिलइ ... देवताने |
| २ | देवतानागलेमां ... मालाकुमिलावेनही |
| ३ | देवतानेजनीवो ... कायनेल्कानसीजह |
| ४ | देवतानापगनूमिकाथी ... आगुलऊंचेरहे |

समय ... लेइछे (२६) ... देवतानुस्वरूप केस दाढ मास नख ... | रोम तेह ... | रुधिर ...

रगाजीवा ॥ २६ ॥ केसट्ठिमंससनहरोमरुहिर

वस ... | चर्म | मूत्र ... | पुरिसेहिं ... | रहिया ... रहित | निम्मलदेहा ... निर्मल सरीर ... समान

वसचम्ममुत्तपुरिसेहिं। रहिया निम्मलदेहा।

सुगंधनीसा ... अधिक ... | गयलेवा ... (२७) अंतमुहुत्तेणं चिय ... पर्याप्तपणे ... | तरुणपुरिससरूप ... रूप | संकासा ... 

सुगंधनीसासगयलेवा ॥ २७ ॥ अंतमुहुत्तेणं चिय। पज्जत्ता तरुणपुरिससंकासा

... | सर्वांगभूषणधरा ... | अजरा ... | निरुया ... | समचउरंस ... | देवा ... (२८) अणिमिस ... सर्वदेवता ... | मणकज्जा ... कार्य ... साधन करेछे ॥

सव्वंगभूसणधरा अजरा निरुया समा देवा ॥ २८ ॥ अणिमिसनयणा मणकज्जसाहण

वजुनर कायासो ॥ तमए रक्काये ॥ सेयनीयछेजव जाणवा ॥ खवि नरकाय सो७ ॥ इंद्रय-१२ निरया-न ॥ चउथीरक ११ ॥

देवेसर्वदेवतानेलेस्याना आगकहे छे ॥ तिजीलेस्या ५ ॥

कावलीउदोइसुष मारिकवल ॥ करीघालीइलन इनायव्वो एत्रिण्ण आहारनामस्वरूप जाणवा ॥ उजाहारतेसर्वएकेंद्रियादिकपर्याप्ताजीवतेहनेछे ॥ अपर्याप्त जीव ॥ अनेपर्याप्ताजीव ॥ एसर्वनेलोमाहारछे रोमनेछिद्रेंकरीशरीरमाहेसंक्रमे ॥ देवता १ ॥ नारकी २

घुण। कावलिओ होइ नायव्वो ॥१७॥ उयाहारा सव्वे अपज्जपज्जत लोम आहारो। सुरनेरइ

एकेंद्रीएवं ॥ विणा-भेद जीवविना ॥ सेसभवस्था-वीजसर्वसंसारीजीव शरीरस्वरकसपक्खेवा-तेपक्षेपआहारकवलीकरीलेइछे ॥ १८ ॥ चित्तसहितते सचित्तजल रहितजलप्रमुखजीवना ॥ नावपदार्थ चित्तविना ते अचित्तजल ॥ उभयरूपतेकाइस-चित्तआहारकाइ चित्ततेमिश्रआवरण ॥ आहार-एत्रिण्णआहारसर्वतीर्यंचनेकहवा वपरमेव

याण गिंदि विणा सेसा भवत्था सपक्खेवा ॥१८॥ सचित्ताचित्तोभयरूवो आहारो सव्वतिरि

सव्वनराणं-अनेवलीसर्वमनुष्यनेपणिएत्रआहारहोवाइसर्वथातिमवली ॥ देवतासघलाइतेहनइ ॥ नेरईयाण-अनेसर्वनारकीने ॥ अचित्त-आहार करउजरूप ॥ १९ ॥ आभोगतेजाणताथकांचितमाहे आने ॥ अणाभोगतेअजाणतांथकांसूत्रपविलपणे ॥ सव्वेसिं-सर्वसंसारीजीवने

याणं सव्वनराणं च तहा सुरनेरईयाण अचित्तो ॥१९॥ आभोगाणाभोगा सव्वेसिं हो

लोमआहारतेरोमनेछिद्रे होय करीसुखइसुख ॥ नरियाणं-ते माहिनारकीने ॥ अणुमन्नो-अमनोज्ञ अशुभआसतमातो आहारपरणमइ ॥ परिणमइ-अनेवलीपरणमेशरीरमाहेरमइ ॥ सुराणं-सर्वदेवतानइ ॥ समणुन्नो-शुभकर्मनाउदयथकीशुभरसोदिकेकरी ॥ २० ॥ हिवेप्रारगतिमांविकलेंद्रियतिमजकहे ॥ आहारक

इ लोम आहारो निरयाणं अमणुन्नो परिणमई सुराण समणुन्नो ॥२०॥ तह विगल

अनेनारिकीने एवंभेद ॥ अंतमुहुत्त-एकअंतर्मुहूर्तवयमआहारलीयपछीवली ॥ सहोइ-तेआहारवांछाउत्कृष्टपणे ॥ पंचेंद्री ॥ तीर्यंचनेअनेमनुष्यने ॥ साहा-स्वाभाविकअंतरकारणछठ्ठनोदिवसेतिर्यंचनेछठ्ठअठमतिम ॥ अनेमनुष्यनेत्रिण्णदिवसआहारगयोपछेआहारइच्छा ॥ देवकुरुनीअंतरतेएकसमुद्रसुगलिक

नारयाणं अंतमुहुत्ता सहोइ उक्कोसा। पंचिदितिरिनराणं साहाविय छट्ठ अट्ठमउ ॥

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जद्श्रुविचारमजिसु रोदभिजनरसजिसुन मकसक०जर्वगरुते दथीअनंतगुणोऽधि करसजाणवु | जिमुत्रिगडरसजिमुन जपिपलजिमुंवक्र मुमक०जयनतेहथी अनंतगुणोऽधिकजा णवो | जिमुकाचाआंवाधजि मुकाचोकउ२जिसु कच्चोजीरमरुतेहथी अनंतगुणोऽधिक जाणवा | जिमपाकाआंवाजि मपाकोकठ२जि मोतिडकरमरुतेद थकीअनंतगुणोऽ धिकजाणवा | जदवुमदिरारसअ मवद्रेकरसर जेहवोम फतुरसरुतेहथीअ नंतगुणोअधिकजा णवो | जदवापारकद्रावर २जेहवुंदूधपोकमिश्र नतरसरुजिमीमल मीनउरसतेहथीअनं तगुणोऽधिकजाणवो |
| [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] | अप्रशस्तगंधगाय२ कलेवरमापरुमका नारुगंधथीअनंत गुणदुर्गंधःऽधिकजा णवो | अप्रशस्तगंधगाय१ कलेवरश्वापरुमका नीगंधथीऽनंतगुण अधिकोगंध | प्रशस्तगंधःसुगंधः फुलरुजगटणउ२ चूरणसुगंधरुएद थीऽनंतगुणोऽधिक गंधजाणवो | प्रशस्तगंधःसुगंधफु लेउगटणउ२चूरण सुगंधरुएहथीअनंत गुणोऽधिकगंधजाण वो | प्रशस्तगंधसुगंधफु१ उगटणउ२चूरणसु गंधरुएहथीअनंतगु णोअधिकगंधजाण वो |
| [illegible] करवत२गाय१नीजी [illegible] णवो | अप्रशस्तस्पर्शकरव त१गायनीजीभथीऽ नंतगुणोऽधिकजाण वो | अप्रशस्तस्पर्शकार वत१गायनीजीभ१ थीअनंतगुणोऽधिक जाणवो | प्रशस्तस्पर्शःबूरतुर गांपणतुरअरीसफू लथीअनंतगुणोऽधि कजाणवो | प्रशस्तबूरतुरस्पर्श मापण२अरीसफूल थीअनंतगुणोऽधिक जाणवो | प्रशस्तस्पर्शःबूरतुर मापण२अरीसफूल थीअनंतगुणोऽधिक जाणवो |
| [illegible] | [illegible] | ज्योतिषी१सौधर्मई२ शानेदेवलोकेंएका तेजूलेश्याजाणवी | सनत्कुमार३माहेंद्र ४ब्रह्मलोक५देवलोके१ पद्मलेश्याजाणवी | लांतक६शुक्र७स हस्रार८आनत९प्रा णत१०आरण११अ च्युत१२एकशुक्लले श्याजाणवी | नवग्रैवेयकःपांचअ नुत्तर५मोक्षसीमप कशुक्ललेश्याजाण वी |

निम्मूलकू मूलथकीछे दीनइ । खंध·ए ककरइ कलगी । वीजीक हवाला गोकोटी सालावे हे । [illegible] ढाली पीच छे । पांच भाकरे एह हृव्य मैविषिफाकाफलछे तेलेउ । छोकरे हव्य जागी एह हृवे व जिपाकाफजणप्पाछे तेयु दोजह जेहवा एएसिंएछु रवता । नावकज इतह· तेहवा लेसाउ विव लेश्याना विपाक जाणवा

निम्मूलखंधसाला। छिंदित्तु पडियसडियाइ। जह एएसिं भावा। तहलेसाउ विनायव्वा

॥९॥ हिवे लेश्यानां वर्णकहे छे ॥ निघरणामजीमूतमेह तेहशरीखी कांतिछे । गवलगडसाङ्गुसीगरिष्ट अरि ष्टरत्न तेहसमान कांति । वली खंजरीट जीवविशेषते हना नयनसरिखी

॥९॥ अह लेसावण्णं॥ निद्धजीमूतवन्नाभा। गवलरिट्ठसमप्पभा। खंजणनयणसंका

। श्यामएहवो कृष्णलेश्यानो कालोवर्णजाणवो ॥१०॥ अशोकवृक्षनापांतसमानतेह नीकांतिछे । जेहवी नीलचासनीपांखतेस रीखी । वैडूर्यरत्नतेसरीखीकं ति

सा। लेसाउकिण्हवण्णउ॥१०॥ पढ्ढवासोयसंकासा। चासपिच्छसमप्पभा। वेरुलियरय

। एहवो वर्णनीललेश्यानो जाणवो ॥११॥ अलसी वृक्षना फूलना वर्णसरीखो ॥ जारसीक· जेहवी कोइलनीपं ख ॥ पारा

णवन्नाभा। वण्णउनीललेसउ॥११॥ अलसीकुसुमवन्नाभा। जारिसीकोइलछदा। पार

वत· पारेवानीग्रीवा सरिखो वर्णछइ । काउलेसाउ कापोतलेश्यानो वर्णछइ ॥१२॥ तेजोले श्या । नवे·छ ई । वर्णनीकां ति । वांद्याहींगुलुनारासरिखीजाणवी । तरुणाङ्कव नसूर्य उगते

वयगीवसमा। एउकाउलेसाउ॥१२॥ तेउलेसानवेवण्णा। हिंगुलयरागसन्निभा। तरुण